मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास

(ORIGIN & DEVELOPMENT OF *MAITHILĪ SCRIPT*)

मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास

(Origin and Development of Maithili Script)

●

लेखक

पं॰ राजेश्वर झा

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना १

●

प्रकाशक

श्री शम्भुनाथ झा

ग्राम–रसुआर, पोस्ट–निर्मली, जिला–सहरसा

प्रथम संस्करण—जून १९७१

मूल्य १५ टाका मात्र

मुद्रक
श्री कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस
आर्यकुमार रोड,
पटना—४

प्राक्कथन

अक्षर कें लिखबाक पद्धति वा ध्वनि कें लिखि कें अपन विचार व्यक्त करबाक चेन्ह कें लिपि कहल जाइछ। लिपि शब्द "लिप्यते" सँ निस्सृत भेल अछि। जखन मनुष्य बाजैत अछि तँ ओ अपन बोली कें मुँह, नासिका, जीभ, ओठ, दाँत आदि अवयवक मदति सँ ध्वनिक माध्यमे अभिव्यक्त करैछ। वाचाध्वनि मुँह सँ उच्चारित होइछ। वर्ण वा अक्षर एहि ध्वनिक संकेत स्वरूप थिक।

मनुष्यक संग लिपिक अविच्छेद सम्बन्ध अछि। सामाजिकताक दृष्टि सँ लोक बुझैत अछि, इच्छा करैत अछि और कृति करैत अछि तथा एहि सभ कें सुरक्षित रखबाक दृष्टि सँ एहि सभहक एक गोट स्मृति चेन्ह ओ रखैत अछि जकर साधन वा माध्यम कें लिपिक नामकरण भेल।

वर्णमालाक वर्ण शब्दक अर्थ रंगक द्योतक थिक। वर्ण, वर्णन, वर्णिका सभ एकहि धातु सँ बाहर भेल अछि। वर्णिकाक तात्पर्य होइछ कोनो विशिष्ट स्वांग रचब। वर्णिकाक बानक रूप अहुखन व्यवहृत अछि। बानक सँ केवल वेष-विन्यासे टा नहि भए गति, बोली, इत्यादि सेहो होइछ। कायिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य एहि चारि प्रकारक अभिनय केनिहार कें बानक कहल जाइछ। एहि तरहें ध्वनि कें अभिव्यक्त तथा प्रकट केनिहार संकेत वर्ण थिक।

प्राचीन काल मे सम्पूर्ण भारतवर्ष मे दुई गोट लिपि छल—(१) पठन-पाठनक निमित्त और (२) प्रतिदिनक व्यवहारक निमित्त। पठन-पाठनक लिपिक प्रयोग ब्राह्मणक द्वारा होइत छल। फलस्वरूप ओ कालान्तर मे ब्रह्मी कहौलक तथा प्रतिदिनक व्यवहारक लिपि साधारणतः वाणिज्य-व्यवसाय एवं दिन-प्रतिदिनक कार्यक हेतु होइत छल जकरा मागध लिपि, नाग लिपि वा कथ लिपि कहल जाइत छलैक।

एहि दुहु लिपिक उद्भव-स्थल बिहारे छल। ब्रह्मीक उद्भव वैदेही लिपि सँ भेल तथा आधुनिक जन लिपि कैथीक सम्बन्ध मागध लिपि सँ अछि।

यद्यपि ललितविस्तर मे चौंसठि लिपिक तथा जैनक प्रसिद्ध ग्रन्थ पन्नवणसूत्र और समवायांगसूत्र मे अठारह लिपिक उल्लेख पाओल जाइछ किन्तु प्रतीत होइछ जे एकहि लिपि जे विविध जनपद मे प्रचलित छल ओहि जनपदक नाम सँ सेहो प्रख्यात छल जेना अंग लिपि, कलिंग लिपि आदि; किएक तँ ओहि सभ लिपिक ने तँ ओहि समयक कोनो अभिलेखे प्राप्त अछि वा ने एहि समय ओहि मे लिखल साहित्ये अछि।

प्रत्येक संघ एवं जनपद कें अपन-अपन अंक और लक्षण होइत छल। लक्षणक तात्पर्य ओहि प्रतीक चेन्ह सँ छल जकरा संघ वा जनपद अपन मुद्रा, सिक्का वा ध्वजाक हेतु ग्रहण करैत छल। एहि तरहक कतिपय लक्षण भारतीय संघ एवं जनपदक मोहर पर

उपलब्ध भेल अछि। पाणिनिक अष्टाध्यायी मे पशुकें चिह्नबाक निमित्त ओकरा कान पर अंकित विभिन्न तरहक लक्षणक उल्लेख पाओल जाइछ। लक्षण शब्द आकृति वा चेन्हक निमित्त छल जकरा सँ आधुनिक मैथिलीक प्रसिद्ध 'लक्षण' ओर 'चेन्ह' शब्दक निर्माण भेल।

वैदिक लिपिक प्रसंग मे श्रीयुत् सुनीति कुमार चटर्जीक मत जे "दसम शताब्दी ई० पूर्वक आद्य भारतीय आर्य लिपि जे एक प्रकारक ब्रह्मी छल तत्कालीन जन-भाषाक वैदिक ध्वनि कें व्यक्त स्थूल प्रयास मात्र प्रतीत भेल तथा आर्यक वेद ब्रह्मी लिपिए मे लिखल गेल किन्तु ओकर स्वरूप केहेन छल से अज्ञात अछि" सँ यद्यपि ब्रह्मीक पूर्ववर्त्ती रूपक कल्पनाक पुष्टि होइछ तथापि ब्रह्मीक ओहि युगक स्वरूप चित्रात्मक एवं प्रतीकात्मक छल। वैदिक वाङमय मे विविध पदार्थक निमित्त भावात्मक प्रयोग पाओल जाइछ। साधारणतः वाकक अर्थ वाणी होइछ किन्तु ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक ग्रन्थ मध्य वाकक अर्थ प्रजापति तथा प्राणपत्नि कएल गेल अछि। तहिना गायक निमित्त सरस्वती, अदिति, विश्वरूपा, वीरजा, वसुपत्नि आदि नामक उल्लेख पाओल जाइछ जकर अपन-अपन दार्शनिक अर्थ अछि। ऋग्वेद मे भेड़ी कें गौरी कहल गेल अछि जे वाकक प्रतीक थिक। तहिना नर सँ स्वयंभूक तात्पर्य तथा नराः सँ जलक तात्पर्य होइछ। एवंक्रमें अक्षर वाकक प्रतीक थिक जे अक्षय शब्द सँ बनल अछि। सप्तवाणी—गायत्री, उष्णीक, अनुष्टुप, वृहती, वीराज, त्रीष्टुप तथा जगती जे मानस, प्राण, तथा पञ्च-भूतक प्रतिनिधित्व करैछ अक्षरहि सँ संतुलित होइछ। मानस, जगती, प्राण, त्रीष्टुप तथा गायत्री पञ्च भूत थिक। एहि रूपें प्रतीकक माध्यम सँ वाणीक प्रतिनिधित्व वैदिक कालहि मे प्रारम्भ भेल जकर पूर्ण विकास तन्त्र मे पाओल जाइछ।

तन्त्र शास्त्र मे प्रत्येक अक्षर ओर रेखाक आत्मा तथा विशेष वर्णनक उल्लेखक संग कहल गेल अछि जे ब्रह्मा-विष्णु-आत्मा एवं शंखज्योतिर्मय परमाश्चर्य जे "अ" अक्षर थिक ओ स्वयं रुद्र थिकाह तथा गायत्रीक प्रथम वर्ण चम्पा सन पीयर एवं अग्नि सँ अचित भेला सँ आग्नेय थिकीह। विद्यारण्य अपन पंचदशीक चित्रदीप नामक प्रकरणक जे प्रतीकात्मक शैली मे लिखल गेल अछि, आरम्भक श्लोक मे पटचित्रक अवस्थाक समता ब्रह्मक अवस्था सँ कएलनि अछि। विद्यारण्यक अनुसारे पटचित्रक धौत अर्थात् अन्य द्रव्यक संयोगक बिना स्वभावतः शुभ्र; घट्टित अर्थात् भातक माँड़ सँ लिप्त; लांछित अर्थात् स्याहीक रेखा सँ देव-मनुष्य आदिक आकृति जकरा पर अंकित अछि; तथा रंजित अर्थात् यथोचित रंग सँ युक्त ई चारू अवस्था परमात्माक चित्त अर्थात् एकाकी ब्रह्म; अन्तर्यामी अर्थात् मायायुक्त ब्रह्म; सूत्रात्मा अर्थात् सूक्ष्म दृष्टि ब्रह्म तथा विराट् अर्थात् स्थूल दृष्टि ब्रह्म ई चारू अवस्था एके थिक।

तिब्बतक लोक कला मे लौकिक और अलौकिक भावनाक समन्वय पाओल जाइछ। पशु, पक्षी, पुष्प, ऋतु आदि प्राकृतिक विषयक प्रतीकात्मक चित्रक संग तथागत सँ सम्बन्धित धार्मिक चित्रहुक अकल्पित भावना व्याप्त अछि जाहि मे तांत्रिकताक संग मानवीय प्रतिमानक एहेन चित्रण पाओल जाइछ जे सुरुचि और विरुचि दुहुक अद्भुद दिग्दर्शन करबैछ। तिब्बती अनुवादक रूप मे उपलब्ध 'चित्रलक्षण" नामक ग्रंथक समीक्षा मे कहल गेल अछि जे ओ

चित्र भारतक थिक जकर लेखक गांधारराज नग्नजित थिकाह् । एहि राजाक उल्लेख संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थमध्य आदिम चित्राचार्यक रूप मे पाओल जाइछ ।

भारतक लेखन कलाक प्राचीनत्व और ओकर प्रश्न प्रधानतः दुई गोट तथ्य पर निर्भर अछि । प्रथम तथ्य तँ थिक जे लिपिशास्त्रक इतिहासक प्रसंग मे जे किछु कहल गेल अछि ओ सभ कें सभ प्रधानतः उनैसम शताब्दी सँ पूर्व मे नहि कहल गेल अछि जकरा मे मौलिकताक अभाव अछि और दोसर तथ्य थिक ब्रह्मी लिपिक उद्गमक प्रश्न मे भ्रान्ति मूलक कल्पना । ई सम्भव थिक जे अशोक कालीन ब्रह्मी लिपिक शिला लेख अर्थवाहक लेखनकलाक एहेन नमूना भए सकैछ जे आन-आन उपलब्ध नमूना सँ तँ प्राचीन थिक किन्तु एहि सँ ई निस्तृत नहि होइछ जे मौर्य कालक पूर्व लेखन कला अनुपलब्ध अछि जखन कि वेद मे लेखन कलाक अस्तित्व स्पष्ट दृष्टि मे अबैत अछि । यजुः सहिता, पन्दरहम अध्याय मे छन्दक प्रकरण मे उल्लिखित अछि—अक्षरपंक्तिश्छन्दः, पदपंक्तिश्छन्दो, विशष्टारपंक्तिश्छन्दः, क्षुरोभ्रजश्छन्दः । एहि मे अक्षर पदक साहचर्य सँ लोहनिर्मित पूर्वकालक लेखनीय क्षुर शब्द सँ व्यवहृत भेल अछि ।

प्राचीन काल मे सूक्ष्म सूचीक आकारक साधन सँ लेख कें खोदवाक परिपाटी छल । वैदिक वाङमय मे लिपि सँ सम्बद्ध एक मनोरञ्जक कथा पाओल जाइछ जे एवंक्रमक अछि :—

प्राचीन वैदिक काल मे कुत्स नामक एक राजा छलाह । हुनकर राज्य दस्युक द्वारा हरण भए गेल । फलस्वरूप ओ जखन चिन्तित भए गेलाह तँ काण्व महर्षि एहि तरहें हुनका सान्त्वना देलथिन जे 'हे मित्रगण' (सखायः) आन कोनो प्रस्ताव नहि कए सभ गोटे ऐश्वर्यशाली इन्द्रक आश्रय ग्रहण करू तथा स्तुति वाक्यक द्वारा हुनकहि सँ प्रार्थना करू । इन्द्रक हेतु गायत्र (अर्थात् प्राणत्राणक हेतु प्रार्थना पत्र) विशेष रूप सँ प्रेषित करू । काण्व महर्षिक द्वारा कुत्सक हाथ सँ पत्र इन्द्र कें पठाओल गेल छल जकरा सम्बन्ध मे निम्नलिखित मन्त्र पाओल जाइछ :—

माचिदन्यद् विशंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचासुते मुहुरुक्था च शंसत ॥
(ऋ० ८/११/१)

याभिः काण्वस्योपबर्हिरासदं यासद् वज्री भिनत् पुरः ।
प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरन्दरः ॥
(ऋ० ८/१/८)

एहि तरहें काण्व सँ आदिष्ट भए इन्द्रक सखा काण्वक द्वारा इन्द्रक आह्वानक मन्त्र लए कुत्स इन्द्र कें देल जे लिखित पत्रक रूप मे छल । अतएव ऋग्वेदक सभटा मन्त्र कण्ठस्थ भए मौखिके होइत छल से तर्कयुक्त नहि भए सकैछ ।

ब्रह्मी एवं खरोष्ठी लिपिक प्रसंग मे एक अन्य कथा अछि जे पश्चिम भारत मे ऋज्राश्व नामक एक ऋषि छलाह। हुनक दौहित्र जरदस्त्र छलाह जे ब्राह्मण-द्वेषी छलाह। ओ एहि दोषक कारणे इन्द्रक महत्त्व कें मेटाए हुनकर स्थान मे वरुण कें प्रतिष्ठित करवाक प्रयास कएलनि। फलस्वरूप कलह उत्पन्न भेल। जरदस्त्र ब्राह्मण-द्वेषक कारणे ब्रह्मी लिपिक जे पूर्व मे प्रचलित छल तथा ब्राह्मणक लिपि मानल जाएत छल—विपरीत खरोष्ठी लिपिक प्रचार कएलनि। ब्रह्मी लिपि वाम सँ दहिन लिखल जाएत छल। ओकर विपरीत अपन आविर्भूत खरोष्ठी कें ओ दहिन सँ वाम दिसि प्रवृत्त कएलनि। शाकद्वीप तथा अन्यत्र खरोष्ठी लिपि प्रचलित भेल। विपरीत आचरणक कारणे जरदस्त्रक मतानुयायी वामग कहौलनि जे पश्चात मग नाम सँ प्रख्यात भेलाह। किछु शाक द्वीपी मग पणिक संग पूर्व भारत मे आबि कीकट देश मे बसलाह जाहि सँ ओहि देशक नाम मगध भेल। पूर्व मे केवल ब्रह्मीए टा ओतए छल किन्तु पश्चात खरोष्ठी लिपिक प्रचार सेहो भेल।

एहि सँ ई निस्सृत होइछ जे पूर्व मे मात्र ब्रह्मीए टा छल तथा सभ्यताक अत्यन्त प्रारम्भहि सँ एहि लिपिक व्यवहार मगधक भूभाग मे होइत तँ छल किन्तु ओकर क्रमिक इतिहास एखन धरि नहि प्रस्तुत भए सकल अछि।

मिथिला मे वैदिक संस्कृतिक प्रसारक संगहि ब्रह्मी लिपिक प्रचार भेल जकर सांस्कृतिक समन्वय आर्य संस्कृति, द्रविड़ संस्कृति और किरात संस्कृति सँ भेल। मैथिली मे तामिल भाषाक कतिपय शब्द अछि जेना 'पल्ली'। 'पल्ली' शब्दक अर्थ होइछ छोट गाम जकर व्यवहार मिथिला मे पाली शब्दक रूप मे पाओल जाइछ। मैथिलीक मुक्ता और मयूर शब्द तामिलक 'मुत्तु' और मयिल शब्दहिक आधार पर बनल अछि। एहि तरहें किराती एवं मुंडारी शब्द जेना गजिया, गम-गम, गुन-गुन, खूरपी, खोपी इत्यादिक व्यवहार ठेठ मैथिलीक शब्दक रूप मे पाओल जाइछ जकर अनुसंधान होयब नितान्त आवश्यक थिक।

जहाँ धरि मिथिलाक सभ्यता और संस्कृतिक संग ओतएक लिपिक प्रारम्भिक रूपक प्रश्न अछि ओ एहि ठामक लोक कला मे पाओल जाइछ जकर एक रूप परम्परागत विश्वास, रहस्यात्मक संकेत तथा अतीतक संस्कार पर तथा दोसर रूप सामाजिक रीति रेवाज पर आधारित अछि। मिथिलाक संस्कृति एवं लोकाचारक संग अपन अभिन्न सामंजस्य कें बनौने अरिपन परम्परागत आबि रहल अछि। अरिपन मे प्रयुक्त त्रिभुज, चतुर्भुज, षटकोण, अष्टकोण, वर्ग, वृत्त, तथा सरल एवं तिरछी रेखा मे विभाजित विविध ज्यामितिक तथ्य, माटिक कलश तथा ओकर ढाकन पर चित्रित पुरुष, स्त्री, पशु, पक्षी, फूल, पत्र, गोदना मे व्यवहृत शंख स्वस्तिक, आभूषण, ग्रह, चक्र, कलश, मेहदी मे प्रयुक्त विविध प्रकारक चेन्ह, महावीर स्वामीक दोसर क्षत्राणी माता त्रिशलाक 'चतुर्दश स्वप्नक' अनेक चित्र जेना हाथी, वृष, केसरी, सिंड़. पद्मावती, सूर्य, चन्द्र, माला, ध्वजा, कलश, मच्छ, सरोवर, पालकी, मणि-भंडार तथा अग्नि, अष्ट-मंगल दृष्य जेना स्वस्तिक, श्रीवत्स, नंदियाबत, वर्धमानक्य, भद्रासन, कलश, मच्छ तथा दर्पणक संग २४ तीर्थङ्करक चित्र, तन्त्र मन्त्र मे व्यवहृत अक्षर

सिन्धु सभ्यताक लिपि, तथा पञ्चमार्क मुद्राक प्रतीक चेह्न एक दोसरा सँ साम्य तँ अछिए संगहि ओहि सभक दार्शनिक तथ्यक आधार सेहो एकहि थिक ।

एहि सभ वस्तु मे चित्रित प्रतीक चेह्नक प्रसंग मे वैदिक वाङमय मे पर्याप्त उल्लेख उपलब्ध अछि । वेद मे सूर्य तथा अग्निक सहयोगी अश्व तथा इन्द्र और रुद्रक सहयोगी हाथी और साँढ़ कें कहल गेल अछि । चक्र विष्णुक तथा सोनाक थारी सूर्यक प्रतीक रूप मे वेद मे मानल गेल अछि । महाभारतक अनुसार साँढ़ मगधक बृहद्रथ राजवंशक प्रतीक चेह्न छल । एहि तरहें जयद्रथक ध्वजाक प्रतीक सुगर तथा दुर्योधनक साँप छल । जेना-जेना आर्य और अनार्यक झगड़ाक अन्त होइत गेल तथा पारस्परिक संस्कृतिक आदान-प्रदान होमय लागल अनार्यक देवताक स्थान व्यान्तरदेवताक रूप मे होमय लागल । तर्पण तथा श्राद्ध मे पठित मन्त्र—

देवा यक्षास्तथा नागा गन्धर्वाप्ससोऽसुराः
क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जृम्भकाः खगाः ॥
विद्याधरा जलाधारास्तथैवाकाशगामिनः ॥

सँ प्रतीत होइछ जे यक्ष, नाग, पक्षी आदि जे अनार्यक देवी-देवता छलाह पश्चात आर्यक देवताक अनुगामी बनि पूजित भेलाह । एहि रूपें शिवक वाहन वृषभक, विष्णुक निमित्त तुलसीक आदि प्रतीकक परम्परा स्थापित भेल जे अपन ओहि रूप मे अद्दुखन लोक कलाक माध्यमें व्यवहृत होइछ ।

एहि तथ्य कें दृष्टिकोण मे राखि प्रस्तुत ग्रन्थ लिखल अछि । यद्यपि एहि ग्रन्थ मे वैज्ञानिक क्रमें अनुसंधानात्मक प्रयास कएल गेल अछि तथापि एहि मे नीक जेकाँ प्रयास नहि भए सकल किएक तँ लोक कलाक प्रतीक लिपि कें पढ़ब हमरा हेतु नितान्त दुष्कर थिक । एहि ग्रन्थ सँ पूर्व आचार्य परमानन्दन शास्त्री[1] एहि प्रसंग मे मिथिला मिहिर मे अपन विद्वतापूर्ण लेख तँ प्रकाशित कएलनि किन्तु ओ एक जनप्रिय पत्रिकाक निमित्त लिखल गेल छल । फलस्वरूप यद्यपि ओहि लेख मे कतिपय नव-नव वस्तुक प्रतिपादन भेल तथा मिथिलाक्षरक इतिहासक अध्ययन मे ओ बड़ महत्वक तँ अछि किन्तु शोधपूर्ण प्रणाली सँ नहि भेला सन्ता ऐतिहासिक दृष्टिएँ ओ अपूर्ण अछि ।

एहि परिस्थिति मे मिथिलाक्षरक इतिहासक एक रूपरेखा प्रस्तुत कएल अछि । आशा अछि ई ग्रन्थ एहि विषयक शोधकर्त्ता लोकनि कें किछु उपयोगी भए सकतनि ।

पुस्तकाकारक पूर्व एहि ग्रन्थक (१) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, (२) अक्षरक उदभव ओ विकास, (३) और (४) तन्त्रक प्रभाव तथा उपसंहार मिथिला भारतीक अंक १ भाग १-२, ३-४ तथा अंक २ भाग १-४ मे निबंधक रूप मे प्रकाशित भए गेल अछि । हम मैथिली साहित्य संस्थानक अध्यक्ष श्री दीनानाथ झा तथा मिथिला-भारतीक प्रधान संपादक

१ मिथिला मिहिर, ११, १२, २५ सितम्बर, २, ९ अक्तूबर, १३, २०, २७ नवम्बर, तथा ४ एवं ११ दिसम्बर, १९६०क अंक मे प्रकाशित ।

डॉ० जगदीशचन्द्र झा जीक प्रति अपन कृतज्ञता प्रगट करैत छी जे ओलोकनि एहि निबन्ध कें अपन सम्मानित शोध पत्रिका मे प्रकाशित कए हमरा प्रोत्साहित कएलनि। हम अपन सहयोगी मित्र श्री गोपी रमण चौधरीक प्रति अपन ऋण प्रकट करए चाहैत छी जनिकर सहयोग हमरा सतत उपलब्ध अछि। अन्ततोगत्वा हम कालिका प्रेसक मालिक एवं अपन स्नेही मित्र श्री ब्रह्मदेव प्रसादजीक प्रति अपन आभार प्रकट करए चाहैत छी जनिक उदारता और सद्भावनाक प्रतिफलें ई पुस्तक प्रकाशित भए सकल। एहि मे जे किछु भूल एवं त्रुटि अछि ओ हमर अल्प ज्ञानक द्योतक थिक तथा हमरा आशा अछि जे विद्वानलोकनि मातृभाषाक प्रति हमर स्नेह कें बुझि एहि त्रुटिक ऊपर ध्यान नहि दए हमरा क्षमा करताह।

—राजेश्वर झा

पटना, १ जून, १९७१

मिथिलाक्षरक उद्‌भव ओ विकास

१

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मिथिलाक्षर वा तिरहुताक बड़ विशिष्ट एवं प्राचीन इतिहास अछि। एहि लिपिक निर्माण मनुष्यक विविध अङ्गक आकार और वैदिक-कर्मकाण्ड मे व्यवहृत याज्ञिक मंडप, त्रिकोण एवं चतुष्कोणक आधार पर भेल।

लिपि-विद्या-विशारद बार्टनक अनुसार समस्त प्राचीन लिपिक जन्म चित्राक्षर सँ भेल। प्रथम चित्राक्षर सँ उच्चारण-समर्थ पदांशक तदनन्तर पदांश सँ ध्वन्यात्मक वर्णमालाक विकास भेल। हुनक कथनानुसार कतिपय मौलिक चित्राक्षरे सँ अन्य चित्राक्षरक उत्पत्ति चारि प्रकारेँ—(१) मौलिक चित्राक्षर केँ सरल एवं सुगम बनौला सँ, (२) मौलिक चित्राक्षर केँ योग द्वारा नव अक्षर बनौला सँ, (३) आरम्भ मे नितान्त भिन्न दू वा दू सँ अधिक चित्राक्षर केँ योग द्वारा संयुक्त चित्राक्षर बनौला सँ तथा (४) कोनो एके चित्राक्षरक विविध रूपान्तरक कोनो एकहि टा रूपान्तर केँ प्रधान मानला सँ भेल।[1]

उपर्युक्त कथन मिथिलाक्षरक उद्‌भवक प्रसंग मे बड़ महत्त्वपूर्ण प्रतीत होइछ। शतपथब्राह्मणक अनुसार आर्यक एक जत्था माधवविदेघ एवं हुनकर पुरोहित रहुगणक नेतृत्व मे सरस्वती नदीक तट सँ सदानीराक तट पर पहुँचि प्रसिद्ध विदेह राज्यवंशक स्थापना कएलनि। की ओ जत्था अपन संग सिन्धुघाटीक सभ्यता, संस्कृति, भाषा एवं लिपि केँ ओतए सँ सदानीराक तट पर नहि अनलनि? बृहदारण्यक उपनिषदक तेसर एवं चारिम अध्याय मे वर्णित जनक-याज्ञवल्क्यक संवाद एवं दोसर अध्याय मे वर्णित याज्ञवल्क्य तथा मैत्रेयी-संवाद मे जाहि आध्यात्मिक अन्तरदृष्टि एवं दार्शनिक तर्क-प्रणालीक उपलब्धि होइछ ओहि सँ प्रतीत होइछ जे शतपथकालीन विदेह सर्वांगीण विकसित एवं पूर्ण उन्नत राष्ट्र छल जकरा वैदेही स्वतंत्र भाषा एवं विदेह लिपि स्वतंत्र लिपि छलैक। एहि विषय मे बौद्धग्रन्थ ललितविस्तर सँ, जकर चीनी अनुवाद ३०८ ई० मे भेल[2] किछु संकेत प्राप्त होइछ। ललितविस्तर[3] भगवान बुद्धक समय मे प्रचलित ६४ लिपिक एक सूची प्रस्तुत करैछ। एहि सूची मे ब्राह्मी, मगधलिपि, पूर्व विदेहलिपि, नागलिपि, द्रविड़लिपि आदि लिपिक नाम

---

१ बार्टन, ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आफ बेबीलोनियन राइटिंग, पृ० ९६

२ ओझा, भारतीय प्राचीन लिपिमाला, पृ० १७

३ जार्ज बुह्लर, भारतीय पुरालिपि शास्त्र, अनुवादक मंगलनाथ सिंह, पृ० ४]

पाओल जाइछ। एहि चौसठि नाम मे सिंधु लिपिक निमित्त कोन नाम थिक यद्यपि ई कहब नितान्त दुष्कर अछि तथापि ई तँ निर्विवाद अछि जे ब्रह्मी आशोकक आदेश-लेखक लिपिक केँ कहल गेल अछि।[४]

ब्रह्मी लिपिक उद्‌भवक श्रेय ब्रह्मा केँ देल जाइछ। एकर कल्पना नारद-स्मृति[५], मनु पर बृहस्पतिक वार्तिक[६] तथा जैनक समवायांग सूत्र[७] मे पाओल जाइछ। चीनक बौद्ध ग्रन्थ फवाङ्‌शुलिन[८] मे ब्रह्मा केँ फाङ्‌ कहल गेल अछि। एहि ग्रन्थक अनुसार लिपिक उद्‌भव तीन दैवी शक्ति सँ युक्त आचार्य सँ भेल। एहि आचार्य मे सभ सँ प्रसिद्ध ब्रह्मा थिकाह जनिकर द्वारा निर्मित्त लिपि ब्रह्मी बाँमा सँ दहिना दिसि लिखल जाइछ। ब्रह्माक पश्चात् अलु थिकाह जनिका द्वारा उद्‌भव लिपि खरोष्ठी दहिना सँ बाँमा दिसि लिखल जाइछ तथा तेसर त्सांकी थिकाह जनिकर लिपि चीनी ऊपर सँ नीचाक दिसि लिखल जाइछ। ब्रह्मा एवं खरोष्ठ भारतवर्ष मे तथा त्सांकी चीन मे भेलाह। ब्रह्मा एवं खरोष्ठ अपन लिपि केँ देव-लोक सँ अनलनि और त्सांकी अपना लिपि केँ पक्षी आदिक पायरक चिह्न सँ बनौलनि। ब्रह्माक मूर्त्तिक एक हाथ मे तालपत्र रखबाक परम्परा सँ उपर्युक्त धाराणाक पुष्टि होइछ।

जेना एहि लिपिक नाम सँ प्रतीत होइछ, एहि लिपिक आविष्कार ब्रह्म अथवा वेदक सुरक्षाक निमित्त भेल। विशेष कए ब्राह्मण एहि लिपि केँ वेदक लेखन, स्मरण एवं पठन-पाठन मे प्रयोग करैत छलाह तेँ परवर्त्ती जैन एवं बौद्ध लेखक सेहो एहिलिपि केँ लेखनक प्रयोग कएल तथा एहि लिपिक नाम ब्रह्मी (ब्राह्मणी) राखल।[९]

प्रो० लेंगडन सिंधु एव ब्रह्मी लिपि मे बड़ सादृश्य देखबैत छथि। हुनका अनुसार ब्रह्मीक जन्म सिंधु लिपिसँ भेल, किएक तँ ब्रह्मीक कतिपय अक्षर सिंधु लिपिक चित्राक्षर सन अछि। चित्र संख्या १ मे ब्रह्मी एवं सिंधु लिपिक समता केँ देखाओल जाइछ। गैड सिंधु लिपिक कतिपय चित्राक्षर एवं आहत (पंच-मार्क्ड) चलन मुद्रा पर अंकित किछु मे परस्पर सादृश्यक दिसि संकेत कएलनि अछि। सम्भवतः एहि प्रकारक चेन्ह सिंधुलिपिक चित्राक्षर तथा ब्रह्मीक ध्वन्यात्मक वर्णक मध्यकालीन रूप छल हो।[१०]

---

४ जेम्स प्रिंसेप, ज० ए० सो० बं०, अंक ७ (१८३८), पृ० २१९

५ से० बु० आफ दी ई० २३.५८

६ श्रोतहि, भाग २३, ३०४

७ वे० ई० स्ट, १६, २८०, ३९९

८ ओझा, प्रा० भा० लिपिमाला, पृ० १८

९ मार्शल, मोहेनजोदड़ो एण्ड दी इण्डस सिविलाइजेशन, ग्रन्थ २, पृ० ४२५

१० केदारनाथ शास्त्री, सिन्धु-सभ्यता का आदि केन्द्र हड़प्पा, पृ० २१७

सिधु लिपिक निर्माण तीन प्रकारक अक्षर सँ—(१) उच्चारण समर्थ पदांश, (२) संकेताक्षर तथा (३) नियामक अक्षर सँ भेल। गैड एवं सिड्ने स्मिथ महोदयक विचारें सिंधु-लिपिक चित्राक्षर स्थिति भेद सँ—(१) आरम्भाक्षर, (२) अन्त्याक्षर तथा (३) संख्या-वाचक—ई तीन प्रकारक छल। संख्यावाचक अक्षरक निर्माण ठाढ़ एवं खसल रेखाक

देवनागरी लिपि	सिन्धु लिपि	ब्रह्मी लिपि
अ	大	𑀅
इ	∵	𑀇
ई	∷	𑀈
क	↑	𑀓
ग	∧	𑀕
च	σ٥	𑀘
ज	Ε	𑀚
त	⌈	𑀢
थ	⊙	𑀣
ब	□	𑀩
म	∝	𑀫
य	⋓	𑀬

चित्र संख्या–१

द्वारा होइत छल जे प्रायः एकसरे वा दू वा तीनक संख्या मे रहैत छल।[११] वर्ण-विधान एवं मात्रिका निघण्ट नामक तांत्रिक कोश [१२] मे एहि अक्षरक प्रसंग मे पूर्ण उल्लेख पाओल

११ ओएह, पृष्ट २१५।

१२ शंकरानन्द, दी इन्डस पीपुल्स स्पीक, पृष्ट ६५।

जाइछ। वर्ण-विधान प्रायः चित्रलिपिक कोश छल, जेना वर्ण शब्दक अर्थ रंग होइछ जकर तात्पर्य चित्र होइछ। मातृकानिघण्टु तँ स्पष्टे संख्यावाचक कोश छल।[13] तंत्रा-विधान मे वर्णित मात्राक आधार पर स्वामी शंकरानन्दजीक मत अछि जे भारतवर्ष मे दू प्रकारक लिपिक प्रयोग बरोबरि होइत रहल अछि जे चित्रमय एवं संख्यावाचक थिक। मिस्र मे प्रचलित लिपिक समताक आधार सँ प्रतीत होइछ जे चित्रलिपि पुरोहितक लिपि छल तथा संख्यावाचकक सम्बन्ध जनसमुदाय सँ छल।[14]

उपर्युक्त प्रसंग मे तिब्बती लिपिक उद्‌भव एवं विकासक इतिहास बड़ महत्त्वक अछि। तिब्बतक धार्मिक कृत-कार्य एवं पुस्तक लेखनक शीर्षक मे व्यवहृत "उचेन" नामक लिपिक निर्माण "लञ्जा" नामक लिपिक आधार पर कएल गेल।[15] लञ्जाक अर्थ देवलिपि होइछ[16] जे आधुनिक देवनागरीक पूर्ववर्त्ती रूप थिक।

देवनागरी लिपिक उत्पत्तिक विषय मे यद्यपि बहुत मतभेद अछि किन्तु एकर सम्बन्ध देव और नगर शब्द सँ बूझि पड़ैछ। श्री वीरेश्वर प्रसाद सिंह[17] नगरक पहचान पाटलिपुत्र सँ कएलनि अछि। पाल एवं सेन राजाक अभिलेख मे श्रीनगर भुक्तिक उल्लेख अछि। जीवित गुप्तक देव-वर्नार्क अभिलेख मे भुक्ति तथा देवपालक नालन्दा ताम्रपत्र अभिलेख मे श्रीनगर भुक्तिक वर्णन अछि। चार्ल्स विलकिन्सक मत अछि जे पटनाक प्राचीन नाम श्रीनगर सेहो छल।[18] एहि मतक पुष्टि गुप्त साम्राज्य कालक धूर्त्त-विट सम्वाद नामक प्रहसन सँ होइछ। एहि पोथीक अनुसार कुसुमपुरक यश समस्त विश्व मे प्रसारित छल तथा केवल नगर कहनहि सँ एहि नगरक बोध होइत छल। अतएव प्रतीत होइछ जे नागरी सँ तात्पर्य ओहि नगरक रहनिहार ब्राह्मण सँ थिक जकर लिपि देवलिपि कहल जाइत छल। देवता वा देव शब्द सँ ब्राह्मणक सम्बोधनक परम्परा बड़ प्राचीन अछि। अतएव देव-नागरी लिपि सँ तात्पर्य पाटलिपुत्रक ब्राह्मणक लिपि सँ अछि। तिब्बतीय परम्परा सँ ज्ञात होइछ जे थोमी समभोट मगध आबि एतक "लञ्जा" एवं "वर्त्तुल" लिपिक आधार पर तिब्बती लिपिक निर्माण कएलनि।[19]

लञ्जा लिपि केँ स्वयंभू कहल जाइत छल।[20] स्वयंभू सँ तात्पर्य स्वतः उत्पन्न

---

१३ ओपह, पृष्ट ६५।
१४ ओपह, पृष्ट ७७।
१५ ज. ए. सो० बं०' अंक ४५ (१८८८) पृष्ट ४६।
१६ ओपह, १८८५, पृष्ट ४७५, फूट नोट १. पृ० ४७८।
१७ ज० बि० रि० सो०, अंक ५३, पृ० ११९, १२१।
१८ एसियाटिक रिसर्चेज, अंक १ (१७९९) पृ० १३०।
१९ एपिग्राफिया इन्डिका, अंक २१, पृ० २६६. ज० ए० सो० बं०, अंक ४५ (१८८८) पृ० ४४।
२० ओपह, पृ० ४४।

सँ थिक । ब्रह्मी लिपिक उत्पत्तिक प्रसंग मे पं० हीराचन्द्र गौरीचन्द्र ओझाक[२१] मत अछि जे ई लिपि भारत वर्षक आर्यक अपन खोज सँ उत्पन्न कएल मौलिक आविष्कार थिक ।

ललितविस्तर मे वर्णित ६४ लिपि मे देवलिपि एवं नागलिपिक नाम क्रमानुसार पाओल जाइछ । मगध नाग संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल ।[२२] मगधक जरासंध एहि वंशक छलाह । नागक प्रधानता भारतक जनजीवन मे तेना ने व्याप्त छल जे पाछाँ नागक पूजा वैदिक, बौद्ध, जैन आदि प्रत्येक धर्मक संग समन्वित भए भारतीय लोक धर्म मे व्याप्त भए गेल । अतः नाग लिपि वस्तुतः मगधक जन लिपि छल । ऋग्वेद मे असुर, नाग, दास, यदु आदिक उल्लेख आर्यक शत्रुक रूपमे कएल गेल अछि ।[२३] वस्तुतः ओ लोकनि अनार्यक विविध शाखा-उपशाखा मे विभक्त जाति छलाह जे क्रमशः अपन स्थान सँ आर्यक द्वारा पराजित भए निष्कासित कएल गेलाह । अथर्ववेदक अनुसार असुर मध्यदेश एवं गंगा-यमुनाक संगम सँ लए कए मगध तक प्रसारित छल जे व्रात्यक द्वारा आर्यक संस्कृति मे दीक्षित कएल गेल ।

मगध व्रात्यक केन्द्र स्थल छल । यद्यपि ऋग्वेद मे मगधक नाम नहि पाओल जाइछ किन्तु एहि मे कीकट शब्द उल्लिखित अछि जे मगधक पर्यायवाची शब्द थिक । कीकटक प्रसंगमे परवर्त्ती साहित्य एवंक्रमें उल्लेख करैत अछि :—

'कीकटो नाम देशोऽनार्य्य निवासः'

—निरुक्त, भाग ३, पृ० २७३ ।

बुद्धो नामा जिनसुतः कीकटेषु भविष्यति ।

—भागवत्, १-३-२४ ।

कीकटेषु गया पुण्या नदीपुण्या पुनः पुना ।
च्यवनस्याश्रमः पुण्यः पुण्यं राजगृहंवनं ॥

अतः कीकटक सम्बन्ध मगध सँ अवश्ये छल जकरा सायन—'अनार्य्य निवासेषु जनपदेषु' रूपमे वर्णन कएलनि अछि ।

मगधक चर्चा यजुर्वेदक माध्यन्दिन सहिता[२४] मे वेश्या, जुआड़ी आदिक संग कएल

---

२१ भा० प्रा० लि०, पृ० २८ ।

२३ दक्षिण भारत मे नाग जातिक निवासक उल्लेख सेहो पाओल जाइछ । तमिलक व्याकरण मे ओतएक तीन जातिक चर्चा पाओल जाइछ जे मक्कल, देवर तथा नकरर वा नागर थिक । शुद्ध द्रविड़ वा तमिल कें मक्कल, ब्राह्मण कें देवर तथा नाग जातिक निमित्त नकरर वा नागरक सम्बोधन कएल गेल अछि । (अवधनन्दन, तमिल साहित्य एवं संस्कृति, पृ० १५) तथा तमिलक वर्तमान कल्लर, वेडर एवं वगैरा प्राचीन नाग जातिएक अंग थिक (पृ० ३०) ।

२३ लेखकक मैथिली साहित्यक आदिकाल, पृ० १० ।

२४ ३०-३२

गेल अछि। अथर्ववेद,[२५] वाजसनेय माध्यन्दिन संहिता[२६] तथा तैतिरीय ब्राह्मण[२७]मे मगधक उल्लेख अनार्य भूमिक रूप मे पाओल जाइछ। लटयान श्रौतसूत्रक[२८]अनुसार मगधक सम्पर्क वँजारा व्रात्य सँ छल। मोनियर वीलियम[२९] व्रात्य शब्दक अर्थ जातिच्युत, नीच, दुष्ट आदिरूप मे करैत छथि।

व्रात्य लड़ाकू आदिवासीक एक प्रवल घुमक्कड़ दल छल जकरा सँ आर्यंकेँ युद्ध करए पड़लनि। महाभारत,[३०] व्रात्यकेँ चाण्डाल, मनु[३१]लिच्छविकेँ व्रात्य क्षत्रिय तथा भगवान बुद्ध लिच्छविकेँ वज्जी अर्थात् घुमक्कड़ नाम सँ सम्बोधन कएलनि अछि।

व्रात्य ब्राह्मणक अनुशासन मे नहि रहि वर्णाश्रमक आधार पर व्रात्य ब्राह्मण, व्रात्य क्षत्रिय, व्रात्य वैश्य एवं व्रात्य शूद्र मे विभक्त छलाह।

व्रात्यक प्रसंगमे ब्राह्मण ग्रन्थमे खाहे जे किछु वर्णित हो सभ्यताक अत्यन्त आरम्भे सँ मगध के राजनीति एवं धर्म दुहू मे व्रात्यक प्रधानता तँ पाओले जाइत छल संगहि उत्तर भारत व्रात्यक साहित्य, भाषा, लिपि एवं गणतन्त्रक सिद्धान्त सँ नितान्त प्रभावित छल। उत्तरी अवधक शाक्य एवं मल्ल, उत्तरी बिहारक लिच्छवि एवं विदेह, पूर्वक अंग, पश्चिमक काशी तथा मध्य भारतक वार्हद्रथक सम्मिलित तथा संयुक्त गणतन्त्र प्राग्वैदिककाल मे स्थापित भेल जे बुद्ध-युग मे मगधक साम्राज्यवादी सिद्धान्तक एक पैघ विरोधी छल।

वस्तुतः व्रात्यक लोकोत्तर व्यापक सिद्धान्त, साहित्य, संस्कृति एवं लिपि सामान्यतः लौकिक भेला सन्ताँ ब्राह्मण द्वारा तिरस्कृत एवं उपेक्षित भेलहुँ समग्र मगध एवं पूर्वी देशमध्य प्रसारित भेल जकर स्पष्ट प्रभाव तत्कालीन एवं परवर्ती संस्कृत साहित्य मे पाओल जाइछ।

व्रात्यक भाषाकेँ वाटुला[३२]वा वर्तनी अर्थात् पूर्वी देश वा स्तोत्र कहल जाइछ। मिथिलामे वर्णमाला केँ वर्तनि तथा भोजपुरी मे बरतौना कहल जाइछ जे वाटुला वा वर्तनीक परिवर्तित आधुनिक क्षेत्रिय रूप थिक।

व्रात्यक लिपिकेँ वर्त्तुल कहल जाइत छल। वर्त्तुलक अर्थ वृत-उलच एवं गोलाकार पदार्थ कएल गेल अछि[३३]। तिब्बती पर्यटक[३४]केँ बिहार ऐबाक पूर्व वर्त्तुल वा वैवर्त्त

---

२५ ५-२-१४।
२६ ३०-५-२३।
२७ ३-४-१-१।
२८ ९-६-२८।
२९ संस्कृत इंगलिश कोष, पृ० १०४३।
३० अनुशासन पर्व।
३१ १०-२०-२१-३२।
३२ आप्टे, संस्कृत-अंग्रेजी कोष, पृ० १३९६, १३९५; लेखकक मैथिली साहित्यक आदिकाल, पृ० १८।
३३ वाचस्पत्यम्, षष्ठभाग, पृ० ४८५४।
३४ धर्मस्वामीक जीवनी, भूमिका, पृ० ३।

लिपिक अध्ययनक आवश्यकता होइत छलनि। डा० एस० सी० दास[35] एवं डा० सी० एस० टर्नर[36] तिब्बतक प्रतिदिनक व्यवहारक "उमेन" लिपिक जे नमूना (चित्रसंख्या २-६) प्रस्तुत

चित्र संख्या-२

(१-२) उचेन तथा (३-४) उमेन लिपि

३५ सीसोमा डी कोरस अपन ग्रंथ तिब्बतीय व्याकरणक परिशिष्ट मे तिब्बती लिपिक (१) उचेन, उमेन, दुटशा तथा लन्तशा एहि चारिटा भेदक वर्णन कएलनि अछि। उचेन मे लिखा-पढ़ीक काज होइछ। उमेन साधारणतः प्रतिदिनक व्यवहारिक कार्यक निमित्त अछि

चत्र संख्या–३

(१) पेमा तशुग-छुग्र, (२) ख्युग यीग, (३) खुग्स-यीग कंण रींण, (४) दपे-यीग कंण-थुन तथा (५) हत्र-थग (एहि लिपिक व्यवहार पोन धर्मावलम्बी द्वारा होइत छल)।

जे आकृतिक अनुसारे चारि प्रकारक— (१) पेमा तशुग-छुग्र—ई छोट गोलाकार लिपि थिक जे सुहल्लेख एवं प्रेमपत्रक निमित्त व्यवहृत होइछ, (२) ख्युग यीगक व्यवहार केवल वाणिज्य व्यापारक हेतु होइछ, (३) कदपे वा खुग्स-यीग कंण रींण सुन्दर लेखन कलाक निमित्त तथा (४) दपे-यीग कंण-थुनक व्यवहार छोट-छोट पुस्तिकाक लेखनक निमित्त होइछ।

चित्र संख्या-४
लन्तशा (रंजा) लिपि

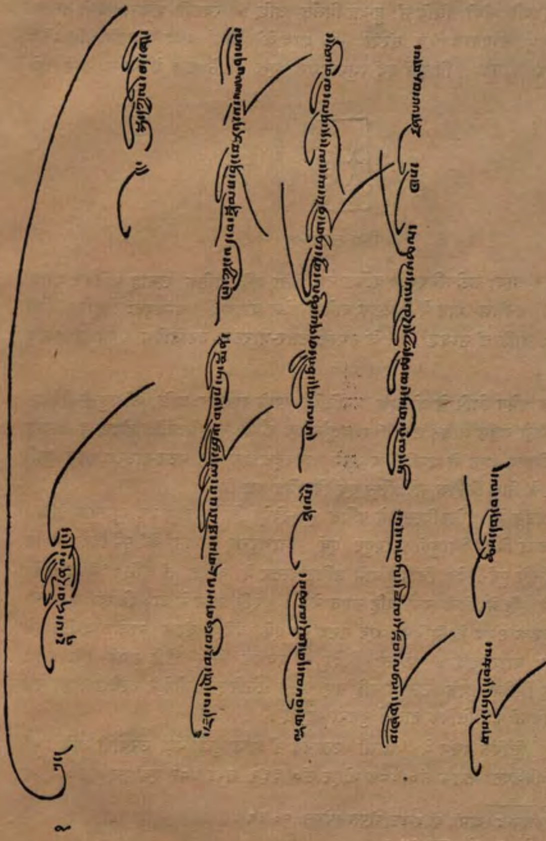
दुरशाक व्यवहार प्रधानतः सूचना, पुस्तकक पृष्ट परहक आवरणक लिपि एवं तकथा पर अंकित नामक हेतु होइछ। दुरशाक व्यवहार मुख्यतः पोन धर्मक अनुयायीक द्वारा होइत छल।

उपर्युक्त तीनू प्रकारक तिब्बती लिपि कें श्री एस० सी० दास ई० सनक सातम आओर आठम शताब्दी मे मगध मे प्रचलित देवनागरी लिपिक परिवर्त्तित रूप मानैत छथि।

चित्र संख्या–५
लन्तशा (रंजा) लिपि

लन्तशा (रंजा)क व्यवहार पुस्तकक शीर्षक, अभिलेख, धार्मिक मन्त्र आदिक लेखन मे होइछ जकरा डा० एस० सी० दास मगधक उद्भव मानैत छथि। (ज० ए० सो० आफ बं०, १८८८. पृ० ४७-४८)।

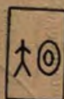
३६ एकाउन्ट इन तिब्वत, पृ० २२३; ज० ए० सो० बं० अंक ५७, पृ० ८२। एमेन लिपि मे कतिपय ग्रन्थ बिहार रिसर्च सोसाइटीक पुस्तकालय मे पाण्डुलिपिक रूप मे उपलब्ध अछि।



चित्र संख्या-६

(१) उमेन तथा (२) उचेन लिपि

कएलनि अछि ओ कैथी लिपि सँ हू-बहू मिलैत अछि। स्वामी शंकरानन्दजी तन्त्रक आधार पर सिंधु सभ्यताक चित्र संख्या ७क शब्द केँ 'कथ' शब्द पढ़लनि अछि।[३७] 'कथ' उपनिषद कालक कृषि कर्म एवं पशुपालकक एक जाति छल जे कथक नामे सेहो



चित्र संख्या-७

प्रख्यात छलाह। प्रायः कठोपनिषद मे वर्णित नाचिकेता एहि जातिक छलाह जनिकर वंशज एहुखन देशक भिन्न-भिन्न भाग मे खटिकक नामे पाओल जाइछ। सम्भवतः बिहारक कैथी लिपि एहि कथ जाति सँ सम्बद्ध छल जे समस्त उत्तर-भारतक जनलिपिक रूपमे अद्यावधि प्रचलित अछि।

तिब्बतक उमेन लिपि जे ओतएक जनलिपिक रूपमे व्यवहृत अछि, केँ क्लु-ई-यीगे वा वर्त्तुल लिपि सेहो कहल जाइत छल[३८]। वर्त्तुल एवं कैथी दुहू एके प्रतीत होइछ जे अत्यन्त प्रारम्भहि सँ बिहार प्रान्त मे जनलिपिक रूपमे व्यवहृत छल तथा पठन-पाठनक काज ब्रह्मी मे होइत छल जे सिंधु लिपिक परिवर्त्तित एवं विकसित रूप थिक।

एहि प्रसंग मे ललितविस्तर मे वर्णित पूर्व-विदेह लिपिक नाम बड़ महत्त्वक अछि। डा० राजेन्द्र लाल मित्र[३९]आधुनिक रंगपुर एवं दिनाजपुरक भू-भाग केँ पूर्व-विदेह मानैत छथि जकर लिपि पूर्व-विदेह लिपिक नामे ललितविस्तर मे वर्णित तँ अछि[४०]किन्तु विदेह लिपिक प्रसंगमे एहि मे कोनो चर्चा नहि कएल गेल। एहि प्रसंग मे डा० मित्रक कथन[४१] जे भगवान बुद्धक समय मे मिथिला एवं मगध दुहू एके वैदेही वंशक राजाक अधीन एके राज्य मे गनल जाइत छल। फलतः विदेह एवं मगधक लिपि ओहि समय एके छल। अतएव विदेह लिपिक पृथक उल्लेख नहि कए ब्रह्मी लिपिएक ओहिमे उल्लेख कएल गेल तथा मगधलिपि सँ कैथीलिपिक तात्पर्य बुझना जाइछ।

विदेह लिपिक प्रसंग मे वैशाली उत्खनन सँ प्राप्त मुद्रा बड़ उपयोगी अछि।[४२] एहि मुद्रा मे विशेषतः फलक सं०-४८क मोहर सं० ३६९ तथा ४८२ एवं फलक सं० ५०क

---

३७ शंकरानन्द स्वामी, दी इन्डस पीपुल स्पीक्स, पृ० ६९।
३८ ज० रौ० ए० सो० अंक १७।
३९ ललितविस्तर, अं० अनुवाद, पृ० ५२।
४० ओएह, पृ० १८३।
४१ ओएह, पृ० २८ एवं ५३।
४२ आरक्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट्स, १९१३-१४।

मोहर सं० ८०० सँ बड़ संकेतक उपलब्धि होइछ जे चित्र संख्या ८ अ, ब तथा घक द्वारा प्रस्तुत कएल जाइछ। यद्यपि एहि मोहरक निर्माण गुप्तयुग मे भेल किन्तु कारीगरी एवं आकार सँ प्रतीत होइछ जे अवश्य एहि मोहरक सम्बन्ध सिंधुघाटी सँ छल। एहि



चित्र संख्या–८ अ

मोहर मे दू प्रकारक लिपि पाओल जाइछ। ऊपर मे तँ विशुद्ध चित्र-लिपि अछि आओर नीचाँ मे गुप्त लिपिक प्रारम्भिक रूप अछि जकरा तांत्रिक कोषक आधार पर श्री शंकरानन्द स्वामी एवंक्रमेँ पढ़लनि अछि[४३] :—

अ. फलक संख्या ४८क मोहर सं० ३६६

मोहरक क्षेत्र दू भाग मे विभक्त अछि। ऊपरमे पाँच प्रकार पदार्थक प्रतीक-चेह्न अछि जे बाँमा सँ दहिना एवंक्रमेँ उल्लेख कएल गेल अछि—

(१) ज्योति केँ प्रसारित करैत वा ऊपर मे फूलक गुच्छा सँ सजाओल एक नाम बासन,

(२) नमगर एवं पातर वृक्षक आकार सन एक वस्तु,

(३) अपन धरकेँ प्रसारित केनहार स्थूल वृक्ष,

(४) बाँमा भाग त्रिशूल सँ परिवेष्ठित युद्धक भाला, तथा

(५) ज्योति वा फूलक गुच्छा सँ सुसज्जित पूर्ण कलश।

मोहरक निम्नस्तरक गुप्त लिपि केँ "अरमिकिश्वरस्य" अर्थात् अरमिकिश्वर मंदिरक मोहर पढ़ल गेल अछि।

मोहरक ऊपरक भाग मे अंकित प्रत्येक चित्रलिपि केँ शंकरानन्द[४४] संयुक्ताक्षर बूझि एवंक्रमेँ पढ़लनि अछि :—

(१) ब्रह्मा (बासन)— अ (१)

(१ अ) सूर्य (बासन)— र (२)

४३ शंकरानन्द, दि इन्डस पिपुल स्पीक्स, पृ० ४५।

४४ ओएह, पृष्ठ ४३—५४।

(२) वृक्ष— म (३)
(३) वृक्ष — इ (४)
(४) वृक्ष— क (५)
(४ अ) वृक्ष— इ (६)
(५) वाहु— स (७)
(५ अ) कलश— व (८)
(५) सूर्य— र (९)

अतः मोहरक चित्रलिपिक अर्थ सेहो "अरमिकिस्वर"हि होइछ।

ब. फलक संख्या ४८ क मोहर सं० ४८२ :—

अहु मोहरक क्षेत्र दू भाग मे विभक्त अछि। ऊपरक बाँमा भाग सँ छड़, बासन, चारिटा नरकटिसन वस्तु, ऊपर दहिना एवं बाँमा भाग मे क्रमशः सूर्य, तारा एवं अर्धचन्द्रक आकृति चित्रलिपि मे प्रतीकक रूप मे अंकित अछि आओर मोहरक नीचाँक लिपि जे ब्रह्मी मे अछि "शरटादकपुरी" पढ़ल जाइछ।

एहि मोहरक चित्रलिपि एवंक्रमे पढ़ल जाइछ —

(६) अर्धचन्द्र— स (१०)
(७) दू छड़, दण्ड— द्व (११)
(८) कपाली, बासन— क (१२)
(९) दीपिका— उ (१३)
(१०) सूर्य — र (१४)



चित्र संख्या ८ व

अतः चित्रलिपिक अभिलेख केँ श्री शंकरानन्द जी 'सद्यक उर' पढ़लनि अछि जे ब्रह्मी 'शरटादकक' प्राकृतिक रूप थिक। उर सेहो स्वभावतः प्राकृत मे पुरक रूप होइछ।

घ. फलक ५० क मोहर संख्या ८०० :—

ई मोहर पूर्णतः नवीन प्रणालीक द्योतक थिक। एहि मे ब्रह्मी लिपिक अभिलेख



चित्र संख्या ८ घ

ऊपर एवं नीचाँ मे तथा चित्रलिपि मोहरक मध्य मे अंकित अछि। एहि मे छटा सिन्धु लिपिक अक्षर जे ११,१२, १३ सँ १७ तकक अंकक द्वारा निर्धारित अछि।

एहि तीनू मोहरक आधार पर कहल जाए सकैछ जे लगभग २५०० वर्ष पूर्वक सिंधु घाटीक उपर्युक्त कला सिन्धु घाटी सँ २००० मील दूर मे कोना व्याप्त भेल ?

एहि प्रसंग मे छपरा जिलाक चिराण्दक १९६८-६९ क उत्खनन सँ पर्याप्त संकेत प्राप्त होइछ।[४५]

चिराण्दक[४६] उत्खनन् सँ प्राप्त नव-प्रस्तर युगक पुरातत्त्व-सामग्री उपलब्ध भेल अछि। एहि मे पाथरक कुरहरि, चित्रित माँटिक बासनक टुकड़ी, चुल्हा, पाथरक मनका (मालाक दाना), पाथरक आयुध आदि प्रमुख अछि। एहि सभ वस्तुक अतिरिक्त एहि उत्खनन मे कतिपय होम-कुण्डक अवशेष समतल धरातल सँ २५ फीट नीचाँ मे प्राप्त भेल अछि।

ई सभ होमक कुण्ड वा तँ व्रात्यक 'अग्नि स्टोम' सँ सम्बन्ध रखैछ जकरा द्वारा ओ लोकनि ब्राह्मणत्व केँ प्राप्त करैत छलाह वा एहि सँ शतपथ ब्राह्मण मे वर्णित धूमाग्निक पुष्टि होइछ जाहि सँ माधवविदेघ एवं रहुगण जंगल केँ डाहि विदेह राज्यक स्थापना कएल वा एहि सँ तिरहुतक तीर-तीर पर यज्ञक संकेतक पुष्टि होइछ जाहि सँ विदेहक एक दोसर नाम तिरभुक्ति पड़ल।

ई तँ निर्विवाद अछि जे चिराण्दक सभ्यता बड़ प्राचीन थिक तथा चिराण्दक प्राचीन निवासी लोकनि केँ सिन्धु घाटीक निवासी एवं आन-आन भागक तत्कालीन निवासी सँ आदान-प्रदान होइत रहैत छल।

---

४५ बिहार राज्य पुरातत्व एवं संग्रहालयक द्वारा संचालित उत्खनन्।
४६ डॉ० बी० एस० वर्मा, उत्खनन पदाधिकारीक सौजन्य सँ प्राप्त।

उत्खनन मे प्राप्त पथरखड़ीक बनल पातर गोलाकार मनका (सुमरनीक दाना) सिन्धु घाटी मे प्राप्त भेल मनका सँ मिलैत अछि, जे एखनधरि कतहु अन्यत्र नहि प्राप्त भेल अछि। ई सभ वस्तु केवल एकेटा छोट उत्खननक खाधि सँ प्राप्त भेल अछि। जँ वृहद रूपेँ एहि स्थानक उत्खनन भेल तँ एहेन महत्त्वपूर्ण आओरो कतिपय पुरातत्त्व-सामग्री प्राप्त होयत जे उत्तर बिहारक इतिहासक नव-निर्माण मे बड़ उपयोगी भए सकत।

चिराण्द उत्खनन मे जे पुरातत्त्व-सामग्री प्राप्त भेल अछि ठीक ओहने सामग्री दक्षिण भारतक उत्नूर, पिक्लिहाल आदि स्थान मे प्राप्त भेल अछि जकर कार्बन १४ दिनाङ्कण ई० पूर्व २००० वर्ष आएल अछि। अतः एवंक्रमक विचार जे दक्षिण भारतहिटा मे द्रविड़क प्रख्याति एवं प्रावल्य छल से पूर्णतः भ्रामक थिक।[४७]

---

४७ तमिल भाषा एवं लिपियहुँ मे दुइ भेद—(१) लोक भाषा तथा लोकजीवन सँ सम्बद्ध लिपि एवं (२) साहित्यिक भाषा तथा लिपिक रूप मे पाओल जाइछ।

तमिल पुराणक अनुसार तमिल भाषाक निर्माण भगवान शिवक द्वारा भेल जकर दुइ रूप—(१) शेंतमिल तथा (२) कोडुन तमिल छल। तमिलक साहित्यक निमित्त शेंतमिल तथा वाजवाक निमित्त कोडुन तमिल प्रयुक्त होइत छल (अवधनन्दन, तमिल साहित्य और संस्कृति, पृ० ५०)। भाषाक सदृश तमिल लिपियहुँक दुइ रूप—(१) वट्ट-एलुत्तु तथा (२) ग्रन्थम छल। वट्टएलुत्तुक अर्थ होइछ गोल अक्षर जे प्रायः वर्त्तुलहिक विकृत नाम थिक। एहि लिपिक सम्बन्ध तमिलक जन-जीवन सँ छल। ग्रन्थमक प्रयोजन ग्रन्थ लिखिवाक निमित्त तमिलक ब्राह्मणक द्वारा कएल जाइत छल। एहि लिपिक उद्‌भव ब्राह्मी लिपि सँ भेल (ओएह, पृ० ६१)।

वट्टएलुत्तुक सम्बन्ध सिन्धु लिपि सँ छल। सिन्धु सभ्यताक प्रधान देवता शिव छलाह। डा० ग्रियर्सनक कथन अछि जे शिव शब्द तमिलक शब्द थिक जकर प्रतीक लिङ्ग छल।

सिन्धु सभ्यताक उत्खनन मे मैके केँ एक एहन मुद्रा प्राप्त भेलनि जाहि मे भगवान त्रिनयन शिवक चित्रण अछि। शिवक शरीर नग्न अछि। मोहनजोदड़ोक उत्खनन मे मार्शल केँ शिवक आकृति मे उर्ध्वलिंगक एक मुद्रा प्राप्त भेलनि। प्राचीन साहित्यक कतिपय स्थल पर उल्लिखित अछि जे शिवक मूर्त्ति मे उर्ध्वलिंगक होयब आवश्यक छल। उर्ध्वलिंग सहित शिवक कतिपय मूर्त्ति भारतक पूर्वी भाग अर्थात् बिहार, उड़ीसा तथा बंगाल मे प्राप्त भेल अछि (इन्डियन कल्चर, अप्रैल १९३६, पृ०७६७)।

चीनीक माँटिक एक अन्य मुद्रा पर शिवक चित्रण अछि। एहि मे शिव योगासन मे मग्न छथि। हुनकर दुहू कात ठेहुनिया देने दूइटा नाग बैसल अछि तथा सम्मुख मे चौक मारने दुइ गोट आओरो नाग बैसल अछि। शिवक गर्दनि मे साँप लेपटाएल अछि। सम्भवतः एहि मुद्रा मे शिव एवं नागक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। एक अन्य मुद्रा मे हाथ मे धनुष-वाण लए किरातक वेष मे शिवक-मूर्त्ति पाओल जाइछ (सतीशचन्द्र काला, सिन्धु-सभ्यता, पृ० ५२-५३)।

महाभारत तथा किरातजनकीर्ति सँ ज्ञात होइछ जे आधुनिक बिहारक उत्तरी-पूर्वी भाग मे ओहि युग मे किरातक निवास छल। ओलोकनि अत्यन्त पराक्रमी एवं सुसंस्कृत छलाह। महाभारतक अनुसार राजा विराटक एक स्त्री किरात-कन्या छलथिन (पी० सी० राय

अतएव माधवविदेघ एवं हुनकर पुरोहित गौतम रहुगणक द्वारा विदेह राज्यक स्थापनाक पूर्व विदेह मे सिन्धु घाटीक सभ्यता सँ मिलैत-जुलैत एक नितान्त पैघ सभ्यता छल जकर चर्चा व्रात्यक नाम सँ अथर्ववेद मे उल्लिखित अछि।

चौधरी, सहरसा डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, पृ० १७)। भारविक किरातार्जुनीयक अनुसार शिव किरातक भेष मे अर्जुन कें दर्शन देने छलाह (सर्ग बारह एवं सोलह)।

वाल्मिकि रामायणक बालकाण्डक चौहत्तरि सर्गक अनुसार रामक द्वारा शिवक धनुष भंगक प्रसंग कें जानि परशुराम नितान्त उग्र भए सत्वर जनकपुर अएलाह। एहि सँ मिथिलहुँ मे शैव एवं वैष्णवक विरोधाभासक प्रतीति होइछ।

उपर्युक्त विवरणक आधार सँ निस्सृत होइछ जे आर्यक आगमनक पूर्व मिथिला मे एक अत्यन्त उच्च सभ्यता वर्त्तमान छल जकर सम्बन्ध शिव सँ तथा सम्पर्क समग्र भारतक तत्सम्बन्धी जाति सँ छलैक। एहि जाति कें अपन भाषा एवं लिपि छलैक। प्रतिहार-सूत्र (पाणिनिक अष्टाध्यायी मे उद्धृत) मे माहेश्वर लिपिक-वर्णन पाओल जाइछ जकर उत्पत्ति त्रिमूर्त्ति महेश्वर सँ कहल जाइछ। एहि मे वर्णित—"ज्ञानमिच्छेतु शङ्करात्" वाक्य सँ एहि कल्पनाक पुष्टि होइछ (एच० के० भट्टाचार्य, दि लैंग्वेज एण्ड स्क्रिप्ट्स आफ एन्सिएन्ट इण्डिया पृ० ७८)।

शिव सम्भवतः शिवि जनपदक उपास्यदेवता छलाह। फलतः ओ शिवक नाम सँ प्रख्यात भेलाह। शिव भारतक प्राचीन द्रविड़क एक उपशाखा छल। तमिल भाषा मे शिव शब्दक अर्थ जन कएल गेल अछि। शिविक उपास्य देवताक रूप मे शिवक पुष्टि एहु तथ्य सँ होइछ जे शिव कें कीकट सेहो कहल जाइत छल (लिंगपुराण, पूर्व भाग, २१—६८)।

शिवि सिन्धुक एहि पार झेलम (वितस्ता) सँ पश्चिमक भू-भाग मे रहैत छलाह। एहि नामक एक अभिलेख शेरकोट मे प्राप्त भेल अछि (राहुल सांकृत्यायन, ऋग्वेदिक आर्य, पृ० २३)। अणु जे ऋग्वेदक पाँच प्रधान जन मे सँ एक छलाह आण देवताक उपासक छलाह। अणु कें महाभारत मे मलेच्छ जाति कहल गेल अछि (आदि पर्व, ३५३३)। आण शब्दक अर्थ होइछ ईश्वर (रेम० एच० हेरस, स्टडिज इन प्रोटो-इन्डो मे० कल्चर, पृ०१८४)। शिव सेहो ईश्वरक नामे प्रख्यात भेलाह।

एहि प्रसंग मे महाप्रलयक चर्चा बड़ महत्त्वपूर्ण प्रतीत होइछ। महाप्रलयक नामक विषय मे भिन्न-भिन्न प्रकारक मत अछि। किछु आधार पर मनु और किछु आधार पर सत्यव्रत कें ओकर नायकक रूप मे उल्लेख कएल जाइछ (ओएह, पृ० ४१४) सत्यव्रतक नाम व्रत सँ सम्बन्धित पाओल जाइछ जनिक प्रधान देवता एक व्रात्य तथा उपासक मागध कहबैत छल (अथर्व० १५-२-१४)। अथर्ववेद एक व्रात्यक सात प्रकारक वर्णन करैत अछि जाहि मे रुद्र, महादेव तथा पशुपति शिवक रूप छथि (अथर्व० १५-५)। अतएव शिवक सम्बन्ध द्रविड़ जातिए सँ छल जे पश्चात् आर्यक देवताक रूप मे मान्य भेलाह। एहि सँ निस्सृत होइछ जे वर्त्तल लिपिक सम्बन्ध प्राचीन माहेश्वर लिपि सँ छल जकर उद्भव सिन्धु उपत्यका मे भए समस्त भारतक लोक-लिपिक रूप मे प्रसारित भेल तथा ब्राह्मी जे आर्यक लिपि छल ब्रह्मा सँ सम्बद्ध भए एकहि लिपि आकार-रूपक अनुसारे समग्र भारत मे लिखिबा-पढ़बाक लिपिक निमित्त प्रयुक्त भेल।

सम्भवतः आर्य सप्तसिंधु सँ सदानीराक तट पर आबि मात्र किछुए भाग मे बसलाह तथा ओकर अधिकांश भाग तँ अपन पूर्वक बासिए सँ निवासित रहल जकर प्रचलित धर्म, साहित्य, भाषा एवं लिपिकेँ ओ क्रमशः तेना ने आत्मसात कएलनि जे ओहि जातिक नाम एवं संस्कृतिक कोनो पतो नहि रहल ।

अतएव सिन्धुघाटीक सभ्यताक यद्यपि अन्त भए गेल किन्तु ओ बिहारक जन-जीवन मे तेना ने व्याप्त छल जे कोनो ने कोनो रूप मे अद्युखन ओ समस्त बिहार प्रान्त मे अवशिष्ट अछि। तंत्र-मंत्रक तवीजक अक्षर तथा गोदनाक प्रतीक लिपि ओहि प्राचीन लिपिक नमूना थिक जकर दार्शनिक तथ्य सँ अनभिज्ञ भेला सन्ताँ लोक ओकरा व्यवहारिक मानैत अछि।

उपर्युक्त तथ्य सँ निस्तृत होइछ जे विदेह राज्यक स्थापनाक उपरान्ते आर्य सरस्वतीक तट सँ जाहि लिपि केँ अनलनि ओ हुनका लोकनिक द्वारा नवनिर्मित राष्ट्रक नाम पर विदेह लिपि कहओलक जे पश्चात् ब्राह्मणक लिपि भेला सन्ताँ ब्रह्मी वा बंभी लिपिक नाम सँ बौद्ध युग मे व्याप्त भेल तथा जेना-जेना राष्ट्रक निर्माण एवं उत्थान-पतन होइत रहल तहिना एहि लिपियहुक नाम मे परिवर्त्तन भेल। एहि लिपि मे अशोक बौद्ध धर्मक सिद्धान्त एवं अपन आदेश केँ तिब्बत, सियाम, बर्मा, मलय आदि देश मे पठओलनि जतक लिपि पर एहि लिपिक पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होइछ।

डा० सी० एस० उपासक[४८] अशोककालीन ब्रह्मी, सिंहली, वर्मी, सियामी एवं कम्बोडी लिपि केँ एक कोष्ठक मे राखि पारस्परिक समता केँ निर्धारित कएलनि अछि जे चित्र संख्या ९ पृ० ५३ मे प्रस्तुत कएल जाइछ। डा० उपासकक अनुसार सिंहलक सभ सँ प्राचीन अभिलेख ई०सनक तेसर शताब्दी पूर्वक थिक। ओहि अभिलेखक लिपि एवं अशोकक अभिलेखक लिपि मे कोनहुटा विभिन्नता नहि पाओल जाइछ। सिंहलक प्राचीन लिपि ई० सनक चारिम शताब्दी मे किछु परिवर्त्तित भेल। फलतः तीनीगला अभिलेखक लिपि मे तथा ओकर पूर्वक अभिलेखक लिपि मे कोनो भिन्नता तँ नहि अछि किन्तु ओकर पश्चातक अभिलेखक लिपि मे क्रमशः परिवर्त्तन होमए लागल। आधुनिक जे सिंहली लिपि व्यवहृत अछि ओकर आकारक उद्भव मध्ययुगीन थिक[४९]।

बर्माक लिपिक प्रसंग मे डा० उपासकक मत अछि जे ओ प्राचीन ब्रह्मीएक एक रूप थिक। बर्मा मे सभ सँ प्राचीन लेखन सामग्री हमवजा (प्रोम) क उत्खनन मे एक स्वर्ण पत्र अभिलेख, बीस पत्रक एक ग्रन्थक पाण्डुलिपि तथा भगवान बुद्धक एक काँसक मूर्त्ति जाहि पर गुप्तब्रह्मीक अभिलेख अंकित अछि उपलब्ध भेल। एहि सँ निस्तृत होइछ जे बौद्ध धर्मक संग वैदेही लिपि सेहो भारत सँ बर्मा गेल जाहि सँ आधुनिक बर्मी लिपिक उत्पत्ति भेल।[५०]

४८ इंडियन न्युमिस्मैटिक क्रोनिकिल, अंक ५, भाग २, पृ० ५९।
४९ डैविड डीरीन्जर, दि अल्फाबेट, पृ० ३८८।
५० उपासक; इंडियन न्युमिस्मेटिक क्रोनिकिल अंक ५ भाग २, पृ० ६४।

बर्मीक प्राचीन लिपि अहोम लिपि सँ साम्य अछि। अहोम आसामक पालि रूप थिक[५१]। आसाम मे अहुखन अहोम लिपि प्रचलित अछि[५२]। बर्माक किओसा तथा जावाक कावी अभिलेखक लिपि मे प्राचीन पालिक प्रतीति होइछ।

सियाम (श्याम) मे धार्मिक ग्रन्थ मे चौकोर पालि तथा साधारण कार्य मे कुटिलाक्षरक व्यवहार कएल जाइछ। पालि अक्षरक निर्माण प्रायः सियामक दू ग्रन्थक आधार पर भेल जे एहि समय पेरिस मे अछि। एहि ग्रन्थ मे एक तँ पतिमोक्ख थिक जकर लिपि आसाम अभिलेखक लिपि सन पाओल जाइछ तथा दोसर वोरोमत ग्रन्थक लिपि जे यद्यपि ओहने अछि किन्तु ओ मूलतः कुटिल आकृतिक थिक[५३]।

सियामक एक जाति लाओस थिक। एहि जाति केँ दू प्रकारक लिपि—(१) उपदेशात्मक तथा (२) लौकिक व्यवहारक—अछि। ठीक एहि तरहक बात कम्बोडियनक संग सेहो पाओल जाइछ। ई सभ लिपि खामेन लिपि वोरोमत पाण्डुलिपि सँ सम्बन्धित अछि जे चौकोर पालिक पूर्वक प्राचीन कुटिल लिपिकेँ ओहि क्षेत्र मे प्रचारक कल्पना केँ पुष्टि करैत अछि[५४]।

कुटिल लिपि गुप्तकालीन ब्राह्मीक विकसित रूपक कल्पित नाम थिक। गुप्तकाल मे वैदेही लिपिक कतिपय अक्षरक आकृति मे एक नव मोर लेलक। फलतः एक मोर तँ अपन प्रारम्भिक रूपे केँ विकास करैत रहल जे आधुनिक मिथिलाक्षर दिसि अग्रसर भेल तथा दोसर मोर मे अक्षरक माँथक चेह्न जे पूर्व मे छोट छल बढ़ि कए पँच होमय लागल तथा स्वरक मात्राक प्राचीन चेह्न लुप्त भए नवरूप मे परिणत भेल[५५] जे आधुनिक नागरीकक प्रतिरूप थिक।

कुटिल लिपिक प्रचार छठम सँ ९वम शताब्दी ई० तक समग्र उत्तर भारत मे छल। कुटिलाक्षरक नामक प्रयोग आदित्य सेनक अफसद अभिलेख मे उपलब्ध होइछ[५६]। अफसद जकरा अफसन्द-जफ्फरपुर सेहो कहल जाइछ गया जिलाक नवादा सब-डिविजन सँ लगभग १५ मील उत्तर पूर्व मे सकरी नदीक किनार मे अछि। अभिलेखक लिपि केँ "कुटिलाक्षर" कहल गेल अछि।

कुटिल शब्दक प्रयोग सर्वप्रथम देवल अभिलेख मे भेल अछि[५७]। अभिलेखक

---

५१ इजक टेलर, दि अल्फाबेट, भाग २, पृ० ३४६।

५२ ओएइ, पृ० ३४६।

५३ ओएइ, पृ० ३४७।

५४ ओएइ, पृ० ४४७।

५५ ओझा, प्रा० भा० लि० पृ० २८।

५६ कोरपस इंसक्रीपसन इंडिकेरम, भा० ३ पृ० २००।

५७ आरक्योलोजिकल स० आफ इ०, भा०, १, पृ० ३५५।

Devanāgarī & Roman		Asokan Brahmi	Sinhalese	Burmese	Siamese	Cambodian
अ	a					
आ	ā					
इ	i					
ई	ī					
उ	u					
ऊ	ū					
ए	e					
ओ	o					
क	Ka					
ख	Kha					
ग	Ga					
घ	Gha					
ङ	Ṅa					
च	Ca					
छ	Cha					
ज	ja					
झ	Jha					
ञ	Ña					
ट	Ta					
ठ	Tha					
ड	ḍa					
ढ	ḍha					
ण	Ṇa					
त	Ta					
थ	Tha					
द	Da					
ध	Dha					
न	Na					
प	Pa					
फ	Pha					
ब	Ba					
भ	Bha					
म	Ma					
य	Ya					
र	Ra					
ल	La					
व	Va					
श	Sa					
ह	Ha					
ळ	ḷa					

चित्र संख्या–९

अंतिम पाँति मे उल्लिखित अछि जे "एहि प्रशंशाक लेखक गौड़ देशक बासी विष्णुहरिक पुत्र तक्षादित्य थिकाह जे कुटिलाक्षर मे बड़ प्रवीण छथि"।

वर्त्तमान काल मे गौड़ देश सँ बंगालक तात्पर्य होइछ किन्तु ई० सनक चारिम शताब्दी मे गौड़ गुप्त साम्राज्यक अन्तर्गत छल जे गुप्तक पतनक पश्चात् ई० सनक छठम शताब्दी मे स्वतंत्र राष्ट्रक रूप मे परिवर्त्तित भेल। गौड़क प्राचीन भू-भाग मे आधुनिक नवद्वीप, शान्तिपुर, मौलपट्टन, कण्टक पट्टन, वर्द्धमान जिलाक भू-भाग किछु पुण्ड्रक भाग तथा बिहार एवं उड़ीसाक भू-भाग सम्मिलित छल जकरा बंगाल सँ सर्वथा पृथक बुझना जाइत छलैक[५८]। मुरारी मिश्रक अनर्घराघवक अनुसार अंगक प्रसिद्ध प्राचीन राजधानी चम्पा केँ गौड़क राजधानी होएबाक गौरवो तक प्राप्त छलैक।

गौड़क प्रधानता भारतक सामाजिक एवं आर्थिक जीवन मे मुख्यतः ई० सनक सातम शताब्दी मे शशांकक राजत्वकाल मे स्थापित भेल जे बंगाल, बिहार एवं उड़ीसाक अधिकांश भू-भाग पर प्रसारित छल। शशांकक पूर्वक राजा जयनाग, धरमादित्य, गोप चन्द्र तथा समाचार देव छलाह जे ई० सनक छठम शताब्दी मे गौड़देश पर शासन कएलनि। ई राजा लोकनि तेहेन ने पराक्रमी भेलाह जे गौड़क आधिपत्य समग्र पड़ोसी देश पर स्थापित तँ होयबे कएल संगहि गौड़ सँ प्राच्य वा पूर्वी देशक बोध होमय लागल[५९] तथा भारतीय संस्कृत मे गौड़क तेहेन ने विशिष्ट स्थान भेल जे संस्कृत काव्यक दू रीति मे सँ एक गौड़क नाम सँ प्रख्यात भेल।[६०]

यद्यपि भरतक नाट्यशास्त्र मे गौड़ रीतिक प्रसंग मे कोनो प्रकारक उल्लेख नहि पाओल जाइछ तथापि गौड़ राजाक प्रधानता एवं हुनका लोकनिक कला-प्रेमक निमित्त गौड़क राजदरवार सँ गौड़ी रीतिक उद्भव भेल[६१]।

गौड़क प्रधानता भारतीय संस्कृति मे तेहेन ने बढ़ल जे स्कन्ध पुराणक लेखक केँ जखन ब्राह्मणक वर्गीकरणक आवश्यकता भेलनि तँ ओ समस्त भारतक ब्राह्मण केँ दू—(१) पञ्च द्रविड़ एवं (२) पञ्च गौड़क वर्ग मे विभक्त कएल।[६२]

अतएव केवल गौड़ देशक नाम केँ आधार मानि भारतीय इतिहासक तथ्यकेँ वास्तविकतासँ दूर राखि मात्र प्रान्तीयताक भावना सँ बूझब सर्वथा अनुचित थिक। ई तँ स्पष्ट अछि जे पाल एवं सेन राजाक कतिपय अभिलेख मे तीरभुक्ति, श्रीनगर भुक्ति, दण्ड-

---

५८ डा० डी. सी. सरकार, ज्योग्रफी आफ एन. एण्ड मे. इ०, पृ० ९८-९९।

५९ आंपइ, पृ० ११६—११७।

६० वैदर्भी एवं गौड़ी।

६१ कीथ, हि० आफ संस्कृत लि०, पृ० ६०।

६२ सारस्वताः कान्यकुब्जा गौडमैथिलिकोत्कला। पंचगौडा इति ख्याता विंध्यस्योत्तर वासिनः॥

भुक्ति, कण्कग्राम भुक्ति, प्रागज्योतिष भुक्ति आदि गौड़ देश मे सम्मिलित भू-भागक रूप मे उल्लिखित अछि।[६३]

गौड़ मे तँ विशेषतः मिथिलाक ओ भू-भाग सम्मिलित छल जे पूर्व विदेहक नाम सँ प्रख्यात छल। सहरसा, भागलपुर, पूर्णिया एवं रंगपुर-दिनाजपुरक मैथिल ब्राह्मण अद्यावधि पूवरिया नाम सँ प्रख्यात छथि जाहि सँ पूर्व विदेहक कल्पनाक पुष्टि होइछ।

अतएव देवल अभिलेखक निर्माता तक्षादित्य केँ बंगाली बूझब नितान्त भ्रामक थिक।

अफसद अभिलेखक लिपि केँ फ्लीट महोदय सातम शताब्दीक मगध लिपिक कुटिल भेद मानैत छथि।[६४] कुटिल लिपि मे लिखल अभिलेखमध्य आदित्य सेनक शाहपुर पत्थर अभिलेख,[६५] मंदार पहाड़ शीला अभिलेख,[६६] देव वर्नार्क अभिलेख आदि कतिपय सातम शताब्दी सँ बारहम शताब्दी मध्यक अभिलेख अछि।

कुटिलाक्षरक ई सभ अभिलेख ऐतिहासिक दृष्टिकोण सँ बड़ महत्त्वक अछि। कुटिलाक्षरक अधिकांश अक्षरक झुकाव देवनागरी दिसि होयब प्रतीत होइछ। उदाहरणार्थ न तथा प अक्षर केँ प्रस्तुत कएल जाइछ—

अशोक	गुप्त	कुटीलाक्षर	मिथिलाक्षर	देवनागरी
⊥	[illegible]	[illegible]	न	न
[illegible]	[illegible]	प	[illegible]	प

चित्र संख्या–१०

देवनागरीक अतिरिक्त बंगला लिपि सेहो एहि कुटिल लिपि सँ निस्सृत भेल अछि। चित्र संख्या ११ (पृ० ५६) मे देवनागरी, अशोक कालीन ब्रह्मी, गुफाक लिपि, गुप्त कालीन ब्रह्मी, कुटिल, किओसा, अहोम, तिब्बती, बंगला, आसामी एवं मिथिलाक्षरक तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत कएल गेल अछि। लिपिशास्त्रक अध्ययनक निमित्त ई तालिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।[६७] एहि सभ लिपिक अतिरिक्त पूर्वीय मलय लिपि, सिन्ध लिपि, मुल्तानक लिपि सेहो कुटिल लिपिएहि सँ निस्सृत भेल।

६३ श्री वीरेश्वर प्रसाद सिंह, ज०. बि०. रि०. सो०, अंक, ५३, पृ० ११९-१२०; हिस्ट्री आफ बंगाल, भाग १, पृ० २३-२४ (ढाका युनवर्सिटी)।
६४ कोरपस इन्सक्रीपसन इन्डिकेरम, भाग ३, पृ० २०८।
६५ ओपइ, पृ० २०८।
६६ ओपइ, पृ० २११।
६७ इजाक टेलर, दि अल्फावेट, भाग २, पृ० ३३६।

देवनागरी	अशोककालीन ब्राह्मी	गुफाक लिपि	गुप्त कालीन ब्राह्मी	कुटिलाक्षर	किओसा	अहोम	तिब्बती	बंगला	आसामी	मिथिलाक्षर
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह अ इ उ ए आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चित्र संख्या-११

डॉ० टेलरक[६८] अनुसार आसामक कुटिलाक्षर मे एहि अभिलेखक लिपि उत्तर भारतक प्रारम्भिक पठन-पाठनक लेखक लिपि सँ उद्धृत कएल गेल। हुनका अनुसारें सम्पूर्ण भारत मे दू प्रकारक लिपिक प्रचलन छल जे प्रथम तँ आसाम तथा वत्तेलुत्तु अभिलेखक छल तथा दोसर पठन-पाठनक निमित्त लिपि उत्तर मे देवनागरी, दक्षिण मे ग्रन्थम आओर पूर्व मे पालिक नाम सँ प्रसिद्ध छल।

पालि कें सिंहली परम्परा मागधी मानैत अछि। जर्मन विद्वान मैक्स वेलेसर पालि कें पाटलि वा पादलिक संक्षिप्त रूप मानि पाटलिपुत्रक तथा गायगर पालिक मूलाधार मागधी कें कहैत छथि। डॉ० उमेश मिश्र तिरहुता वा मिथिलाक्षरक उत्पत्ति प्राचीन मागधी सँ मानैत छथि।[६९] अतएव ई निर्विवाद थिक जे पालि मागधीएक अपर नाम थिक जे मगधक राजनीतिक प्रभाव मे आबि एहि नाम सँ प्रख्यात भेल तथा अशोक द्वारा सुदूर देश मे प्रसारित भेल।

सुदूर देश मे कुटिलाक्षरक प्रसारक प्रसंग मे भारतीय व्यापारी, बौद्ध भिक्षुक एवं ब्राह्मण पण्डितक कम अवदान नहि अछि।

गुप्त युग मे राजनैतिक एकछत्रताक निमित्त भारतीय व्यापारक बड़ उन्नति भेल। फलतः उज्जैन और पाटलिपुत्र व्यापारक हेतु बड़ प्रख्यात भए गेल। पद्मप्राभृतकम्[७०] मे उज्जैनक, उभयाभिसारिका[७१] मे कुसुमपुरक (पाटलिपुत्र) तथा पादताडितकम्[७२] मे उज्जैनक बाजार मे देशी एवं समुद्र पार सँ आएल वस्तुक चर्चा पाओल जाइछ।

एकर अतिरिक्त तीर्थयात्री एवं ब्राह्मण-पण्डित द्वारा अपन जीविकाक निमित्त समस्त देशक पर्यटनक उल्लेख प्राचीन साहित्य मे सेहो पाओल जाइछ। दामोदर गुप्त अपन ग्रन्थ कुट्टनीमतम मे कहलनि अछि जे ओ व्यक्ति जे घूमि-फिरि लोकक भेष, स्वभाव तथा वार्त्तालापक अध्ययन नहि करैछ ओ बिना सींघक बरद सन थिक।[७३] सुभाषितरत्नभाण्डागार मे सेहो कहल गेल अछि जे ओ व्यक्ति जे देशक यात्रा तथा पण्डितक सेवा नहि करैछ ओकर संकुचित बुद्धि पानि मे पड़ल घी सन स्थिर नहि रहैछ तथा एकर विपरीत जे व्यक्ति यात्रा करैछ एवं पण्डितक सेवा करैछ ओकर विस्तारित बुद्धि पानि मे तेल सन प्रसारित होइछ।

उपर्युक्त यात्रा सँ सम्बद्ध कश्मीरी कवि विल्हणक वृतान्त विक्रमांकदेवचरित (१०८०-१०८८ क मध्य) मे[७४] पाओल जाइछ। विल्हण अपन अध्ययन समाप्त कएलाक उपरान्त भ्रमणक हेतु प्रस्थान कएलनि अपन यात्राक क्रम मे ओ महापथ, मथुर,

६८ ओएह, पृ० ३३४।
६९ लेखकक मैथिली साहित्यक आदिकाल, पृ० ३९।
७० चतुर्भाणी १. पृ० ४-५।
७१ ओएह, ३. पृ० २-३।
७२ ओएह, ४, पृ० १०।
७३ श्लोक, २१२।
७४ जी बुहलर द्वारा सम्पादित, बम्बई, १८७५।

कन्नौज, प्रयाग होइत काशी अएलाह। काशी मे कलचुरी राजा कर्णक दरवार मे किछु वर्ष रहलाह। तत्पश्चात् ओ धारा, सोमनाथ आदि स्थानक यात्रा कएलनि। एवंक्रमें कतिपय स्थान कें देखैत ओ चालुक्यराज विक्रमक ओतए पहुँचलाह जे हुनका विद्यापतिक आसन पर नियुक्त कए समुचित आदर कएल।

मिथिलाक ब्राह्मणक यात्रा एवं पर्यटनक प्रमाण संस्कृत वाङ्मय एवं प्राचीन अभिलेख मे प्रर्याप्त रूपें उपलब्ध अछि। एहि प्रसंग मे कामरूपक महाराज भास्करवर्माक निधनपुर ताम्रपत्र बड़ महत्त्वक अछि।[७५] एहि ताम्रपत्र सँ आसामी लिपिक उत्पत्ति मे मिथिलाक अवदानक पुष्टि तँ होइतहिँ अछि संगहिँ आओर कतिपय मिथिलाक प्रक्षिप्त ऐतिहासिक तथ्यक उद्‌बोधन होइछ।

महाराज भास्करवर्मा सम्राट हर्षक प्रिय मित्र छलाह जे ई० सनक सातम शताब्दी-मध्य कामरूप पर शासन करैत छलाह। निधनपुर ताम्रपत्र अभिलेख द्वारा महाराज भास्करवर्मा अपन अतिवृद्धप्रपितामह महाभूति वर्मनक दानपत्र कें जे ओ श्रीहट्ट (सीलहट) मण्डलक चन्द्रपुर विषयान्तर्गत ब्राह्मण कें भूमिदान देने छलाह तकर पुनर्पुष्टि कएलनि।[७६]

चन्द्रपुर विषय वा चन्द्रपुरी छठम वा सातम शताब्दी मे कामरूपक शासन मे तँ छल किन्तु दशम शताब्दी मे श्रीहट्टमण्डलक चन्द्रपुर विषय पौण्ड्रवर्द्धन भुक्तिमे सम्मिलित पाओल जाइछ।

चन्द्रपुरीक चर्चा महाराज जयवर्मदेवक ताम्रपत्र अभिलेख[७७] तथा आन-आन कतिपय अभिलेख मे पाओल जाइछ जाहि सँ प्रतीत होइछ जे गौड़क साम्राज्यकाल मे चन्द्रपुरीक बड़ प्रधानता छल।

वनमालदेवक ताम्रपत्र अभिलेख[७८] मे चन्द्रपुरीक दक्षिण-पूर्व मे अभिसुरवल नामक गामक उल्लेख पाओल जाइछ जे त्रिस्रोता नदीक पश्चिम मे छल। त्रिस्रोता रंगपुरक आधुनिक टिस्टा नदी थिक जे करतोया नदीक थोड़ेक पूर्व मे अछि। अतएव चन्द्रपुरी अवश्य सहरसा वा पूर्णियाक भू-भाग मे होयत जकर अनुसन्धानक नितान्त आवश्यकता अछि। एकर सम्बन्ध पौण्ड्रवर्द्धन भुक्ति सँ छल।

गुप्त साम्राज्य काल मे सम्पूर्ण उत्तर बिहार तीरभुक्ति तथा पौण्ड्रवर्द्धन भुक्ति मे विभक्त छल। पौण्ड्रवर्द्धन भुक्ति मे आधुनिक सहरसा जिलाक किछु भाग, पूर्णिया तथा

७५ एपिग्राफिया इन्डिका, अंक १२; पृ० ११५—१२५ तथा अंक १९ पृ० ११५; २४५।

७६ ओएह, अंक १२, पृ० ७६ अंतिम पत्र।

७७ इन्डियन एन्टीक्वेरी १८९०, पृ० ३५०।

७८ ज० ऐ० सो० आफ बं० १८४०, पृ० ७६६।

उत्तर बंगालक भू-भाग सन्निहित छल[७९]। पौण्ड्रबर्द्धनक पूर्व मे करतोया नदी, जे रंगपुर, दिनाजपुर एवं बोगराक भू-भाग मे बहैत ब्रह्मपुत्र मे मिलैछ; पश्चिम मे महानन्दा, जे अंग सँ पौण्ड्रक भू-भाग कें पृथक करैछ; दक्षिण मे पद्मा तथा उत्तर मे पहाड़ी भू-भाग छल[८०]।

भास्कर वर्मा कात्यायन गोत्रक मनोरथ स्वामी तथा साधारण स्वामी नाम सँ पट्टाक निर्माण कराओल[८१] जकर जमीन कोशीक तट मे छल[८२] तथा पट्टा भास्कर वर्माक द्वारा कर्णसुवर्ण स्कन्धावार सँ जारी भेल छल[८३]।

कर्णसुवर्ण शशांकक राजधानी छल। प्रायः शशांकक मृत्युक पश्चात् भास्कर वर्मा कर्णसुवर्ण पर अधिकार कएल तथा अपन विजयक गर्व मे पुनः अपन सनद कें जारी कएलनि।

कर्णसुवर्ण गौड़क राजधानी छल। चीनी यात्री हुएन्तसांग कर्णसुवर्ण वा तँ ताम्रलिप्ति (आधुनिक मिदनापुर) होइत वा पौण्ड्रवर्द्धन होइत गेल छलाह। ओ अपन यात्राक वर्णनक क्रम मे लिखैत छथि जे कर्णसुवर्णक सीमाक अन्तर्गत प्रसिद्ध रक्तमातृका विहार छल।

डा० एस० आर० दास हालहि मे "राजवडीदंगा" नामक स्थानक उत्खनन् कएलनि। एहि उत्खनन मे हुनका ई० सनक तेसर शताब्दी सँ लए एगारहम शताब्दी धरिक पुरातत्वक सामग्री उपलब्ध भेल, जाहि मे "रक्तमातृका महाविहारक" मोहर सेहो पाओल जाइछ। अतएव एहि स्थान कें कर्णसुवर्ण मानल जाइछ जे मुर्शिदावाद जिलका ब्रह्मपुर सँ ६ मील दक्षिण मे अछि[८४]।

अतः उपर्युक्त प्रमाणक आधार पर निस्सृत होइछ जे निधनपुर ताम्रपत्रक भूमिदान कोशी क्षेत्रक ब्राह्मण कें देल गेल छल तथा ओहि दानक भूमि सेहो ओहि क्षेत्र मे सन्निहित छलैक।

उपर्युक्त प्रसंग सँ सम्बद्ध अर्थात् कामरूप राजा एवं मिथिलाक ब्राह्मणक सम्बन्ध मे सिलिमपुर प्रस्तर अभिलेख बड़ महत्त्वपूर्ण अछि[८५]। ई अभिलेख महाराज जयपालदेवक समयक थिक।

---

७९ पी० सी० राय चौधरी, सहरसा डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, पृ० २१।

८० ज० ए० सो० आफ बं० १९०८, पृ० २६९—७०।

८१ एपिग्राफिया इन्डिका, अंक, १९, पृ० ११७।

८२ ओएह, पृ० १२१।

८३ ओएह, अंक १२, पृ० ६५।

८४ सन्डे स्टेन्डर्ड, बम्बई, दिनांक ५-१-६४।

८५ एपिग्राफिया इन्डिका, अंक १३, पृ० २८३।

एहि अभिलेखक लिपि कें डा० राधागोविन्द बसक बंगाल एवं मगध मे एगारहम शताब्दी मे प्रचलित उत्तरी लिपिक एक रूप मानैत छथि जे पूर्ण भ्रामक थिक। एहि अभिलेखक लिपि मिथिलाक्षर थिक तथा विषय-वस्तु प्रहास नामक एक ब्राह्मण द्वारा एक मंदिरक निर्माण एवं अमरनाथक मूर्त्तिक स्थापना थिक जाहि मे प्रहासक वंशक प्रशस्ति सेहो लिखल गेल अछि।

प्रशस्तिक चारिम श्लोक मे वरेन्द्रक पुण्ड्र देशक भूषण स्वरूप बालग्रामक वर्णन अछि। एहि श्लोक मे एहि ग्राम कें तरकरीक एक भाग कहल गेल अछि जे शक्तिक द्वारा एक दोसरा सँ पृथक् कएल जाइछ। एहि बालग्राम मे अपन कुल-गौरव एवं पाण्डित्य सँ परिपूर्ण कतिपय ब्राह्मणक परिवारक वर्णन अछि।

अभिलेखक छठम श्लोक मे किछु ब्राह्मण द्वारा ओतए सँ हँटि सियामभव ग्राम मे बसवाक उल्लेख अछि। तदुपरान्त श्लोक आठ सँ अठारह धरि प्रहासक उत्पतिक प्रसंगक अछि। सियामभव गाँव मे पशुपति नामक एक ब्राह्मणक जन्म भेल जे षट् कर्म मे निरत छलाह। हुनका साहिल नामक पुत्र रहथिन, साहिल कें मनोरथ, मनोरथ कें सुचरित, सुचरित कें नितुला, नितुला कें तपोनिधि जे मीमाँसा मे प्रवीण छलाह, तपोनिधि कें कार्तिकेय जे विष्णुक प्रपौत्री तथा अजमिश्रक पौत्री तथा अंगदक पुत्री कलियव्वा सँ विवाह कएल। हिनका प्रहास नामक पुत्र भेलनि जनिकर प्रशंसा मे ई प्रशस्ति लिखल गेल।

श्लोक २२ मे प्रहासकं द्वारा कामरूपक राजा जयपाल देवक ९०० स्वर्ण मुद्रा एवं १००० रुपयाक वार्षिक आमदनीक भूमि-दान कें अस्वीकारक वर्णन अंकित अछि।

अभिलेखक श्लोक दू मे वर्णित अछि जे प्रहासक पूर्वज तरकरी जे श्रावस्तीक सीमाक अन्तर्गत अछि अपन उद्भव बूझैत छथि, जे पुण्ड्रवर्द्धन मे स्थित अछि। अभिलेखक चारिम श्लोक सँ ज्ञात होइछ जे श्रावस्ती गौड़ मे छल। मत्स्यपुराणक अध्याय २२ क श्लोक—"निर्मिता येन श्रावस्ती गौड़देशे द्वीजोत्तमः[८६] तथा कूर्मपुराणक[८७] अध्याय २०क श्लोक—"निर्मिता येन श्रावस्तीः गौड़देशे महापुरी" वाक्यक आधार पर प्रतीत होइछ जे उपर्युक्त ताम्रपत्रक श्लोक २ मे वर्णित श्रावस्ती अवश्ये पौण्ड्रवर्द्धन मे छल। अभिलेखक श्लोक २-७क वर्णन सँ ज्ञात होइछ जे पशुपतिक पूर्वहिँ सँ हुनकर पूर्वज जे अध्ययन, तपस्या तथा कुल-गौरव मे प्रख्यात छलाह वरेन्द्रक बालग्राम मे रहैत छलाह।

भागलपुर ताम्र-पत्र अभिलेख[८८] सँ ज्ञात होइछ जे एहि अभिलेखक २२म श्लोक मे वर्णित राजा जयपाल बंगालक राजा देपपालक छोट भाइ छलाह जे प्रागज्योतिष (कामरूप)

---

८६ श्लोक ३०।

८७ पृष्ट २२१।

८८ वरेन्द्र रिसर्च सोसाइटीक पब्लिकेसन, पृ० ५७-५८।

पर चढ़ाइ कएने छलाह्। जयपाल अपन सारनाथ अभिलेख[८९]मे अपना कें देवपालक भ्राताक रूपमे उल्लेख कएलनि अछि।

उपर्युक्त वर्णन सभ सँ प्रतीत होइछ जे बालग्राम सहरसा जिलाक आधुनिक बड़गाम थिक जतए अद्यावधि उच्चकुलक ब्राह्मणक निवास छनि।

पं० श्री रामकृष्ण झा 'किसुन'[९०]कविवर चंदाझाक किछ कविताक आधार पर बड़गाम कें भामतीकार वाचस्पति मिश्रक जन्मभूमि मानैत छथि तथा बड़गाम सँ चारि मील उत्तर पामा गाँम कें भामा गाम बूझैत छथि।

यद्यपि प्रहासक पुरखाक एक सूचीक संग एहि लेख मे इहो वर्णित अछि जे पशुपति सँ पूर्वहिं सँ बालग्रामक पण्डित अपन पाण्डित्य एवं कुलीनताक गौरव सँ समन्वित छलाह तथा बालग्रामक अड़ोस-पड़ोसक गाम सभहक वर्णन सेहो पाओल जाइछ किन्तु कोनो ठोस प्रमाणक अभाव मे एहि प्रसंग मे एखन किछु नहि कहल जाए सकैछ।

निधनपुर ताम्रपत्र अभिलेखक प्रसंग मे श्री कमलाकान्त गुप्तक[९१]विचार छनि जे सिलहटक साम्प्रदायिक वा वैदिक ब्राह्मण अपना कें मिथिलाक पूर्वक बासी कहैत छथि। एहि शाखाक मैथिल ब्राह्मण जे सिलहट मे बसलाह ओ भारद्वाज, गौतम, कास्यप, कात्यायन, कृष्णात्रेय, मोद्गल्य, पराशर, स्वर्ण-कौशिक, वत्स एवं वात्स्य गोत्रक छथि तथा अपनाकें सिलहटक सभसँ प्राचीन ब्राह्मण मानैत छथि। ओलोकनि प्रधानतः सिलहटक पञ्चखण्डा परगन्ना, जतए सँ निधनपुर ताम्रपत्र उपलब्ध भेल तथा ईटा परगन्ना जतए सँ विक्रमपुरक श्री चन्द्रक पश्चिमभाग ताम्रपत्र अभिलेख प्राप्त भेल, मे रहैत छथि।

सिलहटक मैथिल ब्राह्मणक विवरण 'वैदिक संवादिनि' नामक ग्रन्थ मे पाओल जाइछ। एहि ग्रन्थक अनुसार एहि ब्राह्मणक सिलहट मे निवासक श्रेय त्रिपुराक दुइ राजा—(१) सातम शताब्दीक आदि धर्मपा तथा (२) १२म शताब्दीक धर्मधर कें छनि। वैदिक संवादिनिक अनुसार प्रथम भूमिदान सातम शताब्दी मे पञ्चखण्डा क्षेत्र मे हुनका लोकनिक पुरखा कें प्राप्त भेल। फलतः ओ लोकनि सिलहट जिलाक पञ्चखण्डा क्षेत्रमे बसलाह।

उपर्युक्त ग्रन्थक अनुसार दोसर भूमिदान वत्सगोत्रक निधिपति कें मनुकुल प्रदेशमे १२म शताब्दी मे प्राप्त भेल जे आधुनिक ईटा क्षेत्र मे पाओल जाइछ। फलस्वरूप ओ लोकनि ओहि क्षेत्र मे बसलाह।

वैदिक संवादिनिक कथनानुसार उक्त दुहू ताम्रपत्र ने तँ उपलब्धे अछि वा ने त्रिपुरा-राजमाला मे ओकर कोनो तरहक चर्चे पाओल जाइछ। वैदिक संवादिनिक वर्णन

८९ आर्क्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट्स आफ इन्डिया १९०७-८ पृ० ७५।

९० श्रीरमानाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ०२६५-६८।

९१ कोपरप्लेट्स आफ सिलहट, लिपिक इन्टरप्राइजेल लि०, रशिदास्थान, सिलहट द्वारा मुद्रित, पृ० ५९—६३।

एवं निधनपुर ताम्रपत्र अभिलेखक विषय-वस्तु मे अधिक समता पाओल जाइछ । एवंक्रमें वैदिक संवादिनिक वर्णन तथा विक्रमपुरक महाराज श्रीचन्द्रक पश्चिमभाग ताम्रपत्रक अभिलेखक विषय-वस्तु मे सेहो समता पाओल जाइछ । अतएव वैदिक संवादिनि जकर रचनाकाल पश्चातक थिक तथा जे अनुश्रुतिक आधार पर भेल एवंक्रमक ऐतिहासिक तथ्यक भ्रामक दोष सँ युक्त अछि । श्री गुप्तजीक कथन, जे सिलहटक पूर्वी भागक हिन्दू अद्यावधि वाचस्पति मिश्रक मैथिल स्मृति सँ अनुशासित होइत छथि, बड़ महत्त्वक अछि । सम्भवतः निधनपुर ताम्रपत्र अभिलेख मे वर्णित जे ब्राह्मण सिलहट मे बसलाह ओ कोनो ने कोनो रूपें वाचस्पति मिश्र सँ सम्बद्ध होथि वा भास्करवर्मा वाचस्पति मिश्रक पूर्वजक यश-प्रतिष्ठा सँ अवगत भए ओहि क्षेत्र सँ हुनका लोकनि कें ओतए बसौने होइथिन ।

अतएव ई स्पष्ट प्रतीत होइछ जे आसामी लिपि एवं भाषाक उद्भव ओ विकास मे मिथिलाक बड़ पैघ योगदान रहलैक अछि । एहि प्रसंग मे रायबहादुर के० एल० बरुआ कहैत छथि जे "ह्वेएन्तसाँग ७म शताब्दी मे कामरूपक भाषा तथा मगधक भाषा मे अल्प विभिन्नता पौलनि । कामरूपक भाषा एवं लिपि विशेषतः पूर्वी मैथिली थिक" ।

मैथिली एवं आसामी मे मात्र उच्चारणक विभिन्नता पाओल जाइछ तथा शब्द-विन्यास मे बड़ समता अछि जेना पाँजर, वनिज, कमार घिउ, अउँठी आदि ।

मिथिलाक्षर एवं बंगला मे पूर्ण समता अछि । मिथिलाक संस्कृति तेहेन ने व्यापक छल जे बंगाल सँ[९२] जिज्ञासु ज्ञानार्जनक निमित्त मिथिला अबैत छलाह तथा मिथिलाक्षर मे अंकित ग्रन्थकें पढ़ि जे विद्वान बनि जाइत छलाह से की मिथिलाक्षर सँ प्रभावित नहि होइत छलाह ?

एहि प्रसंग मे महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्रक[९३] मत, जे ओ रघुनाथ शिरोमणिक विषय मे लिखलनि, नितान्त उपयोगी थिक ।

महामहोपाध्याय डा० मिश्रक अनुसार रघुनाथ सिलहटक एक निर्धन मैथिल ब्राह्मण-वंश मे उत्पन्न भेल छलाह जतए हुनकर पूर्वज श्रीधराचार्य ६४३ ई० मे मिथिला सँ आबि कें बसलाह । रघुनाथक पिता गोविन्द चक्रवर्तीक निधन अल्प कालहि मे भेल । फलतः रघुनाथ असहाय भए गेलाह तथा हुनक लालन-पालनक भार हुनकर माता सीतादेवी पर पड़ल जे अपन एकमात्र पुत्रक पालन-पोषण मे अपना कें असमर्थ बूझि हुनकर शिक्षाक निमित्त नदिया अएलीह जतए ओहि समय वासुदेव सार्वभौम एक टोलक स्थापना कए एक प्रख्यात नैयायिकक रूप मे प्रख्यात भए गेल छलाह । रघुनाथ हुनकर प्रिय शिष्य बनि अपन शिक्षा ग्रहण करए लगलाह ।

ओहि समय मिथिलाक विद्वानक विद्वताक प्रख्याति समग्र भारतवर्ष मे प्रसारित

९२ जयकान्त मिश्र, ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर. भा० १, पृ० ५३ ।

९३ डा० उमेश मिश्र, हिस्ट्री आफ इन्डियन फिलासफी, भा०२, पृ० ४१२-१३ ।

छल। मिथिलाक तत्कालीन नैयायिक पं० पक्षधर मिश्रक यश रघुनाथो धरि पहुँचल। अतएव ओ मिथिलाक यात्रा कए पक्षधर मिश्रक ओतए ज्ञानक जिज्ञासा मे अएलाह। तथा पक्षधर मिश्र सँ ज्ञान प्राप्त कए ओ अपन आचार्यक द्वारा "शिरोमणि"क उपाधि ग्रहण कएलनि। वासुदेव सार्वभौम सेहो पक्षधर मिश्रहिक शिष्य छलाह।[९४]

पक्षधर मिश्रक अपन हाथक लिखल विष्णुपुराण बिहार रिसर्च सोसाइटीक पुस्तकालय मे उपलब्ध अछि जकर रचना काल ३४५ ल० सं० वा १४६४ ई० थिक। ग्रन्थक अन्तिम पाँति एवंक्रमक अछि :—

वाणैर्वेदयुतैः सशमभुनयनैः संख्यांगते हायने।
श्रीमद्गौड़महीभुजो शुरुदिने मार्गं च पक्षेसिते॥
षष्ठयां ताममरावती मधिवसन या भूमिदेवालयां।
श्रीमान्पक्षधरः सुपस्तक मिदं सुद्धं व्यलेखीद्धतम्॥

एहि सँ ज्ञात होइछ जे ग्रन्थ अमरावती नगर मे लिखल गेल। मैथिल ब्राह्मणक एक मूलग्राम दधिहरे अमरावती सेहो अछि जाहि सँ अमरावतीक ऐतिहासिकताक पुष्टि तँ होइछ किन्तु एहिनगरक पहचान एखन धरि नहि भए सकल अछि। पक्षधर मिश्रक द्वारा लिखित विष्णुपुराणक लिपि सँ पन्द्रहम शताब्दीक मिथिलाक्षरक विष्टिताक बोध तँ होइतहिँ अछि संगहिँ इहो संकेत होइछ जे ओहि समय मे जे लिपि एहेन समुन्नत एवं समृद्धशील छल हो ओकर इतिहास केँ वास्तविकता सँ दूर कोना राखल जाए सकैछ ?

अतएव बंगालक संस्कृति, साहित्य एवं लिपि पर मिथिलाक प्रभाव स्पष्ट रूप मे पाओल जाइछ। फलतः दुहुक लिपि एवं भाषा बड़ साम्य अछि। मात्र एहि निमित्त बंगालक क्षेत्र मे व्याप्त मिथिलाक्षर मे अंकित अभिलेखक एवं ग्रन्थक लिपि केँ सेहो बंगला मानल जाए लागल।

मिथिलाक्षरक आधुनिक रूप विष्णुपुराणक लिपि थिक जे प्रधानतः छठम शताब्दीक आरम्भक अभिलेख मे उपलब्ध होमए लागल तथा गया अभिलेख (५८८-५८९ ई०) मे उपर्युक्त आकृतिक दिग्दर्शन होइछ। एहि आकृतिक मुख्य विशेषता तँ ई अछि जे एहि मे अक्षर दहिन सँ बाम दिसि झुकैछ तथा नीचाँ वा दहिना भाग मे एक न्यून कोण बनवैछ। अक्षर मे ठाढ़ वा टेढ़ रेखाक सिरोभाग मे सतत् छोटसन कील रहैछ तथा ओकर अन्तहु मे वा तँ एहने अलंकरण रखैछ वा दहिना भाग मे शैल-प्रवर्ध बनैछ। एहि अभिलेख सँ आगाँक चारि शताब्दीक बहुसंख्यक अभिलेख मे एवंक्रमक विशेषता पाओल जाइछ।

---

९४ ओपइ, भाग २, पृ० ३३५।

९५ जार्ज बुहलर, भा० पुरा० लि० शा०, अनु० मंगलनाथ सिंह, पृ० १०१, फलक ४, स्त० १३, १४।

९६ कोरपस ई० इन्डिकेरम, भाग ३, पृ० २७४।

फ्लीट महोदय[९६] गया अभिलेखक लिपि कें सिद्धमातृका लिपि कहैत छथि। बरूनीक अनुसार[९७] एहि नामक एक लिपि लगभग १०३० ई० मे कश्मीर एवं बनारस मे प्रचलित छल। यद्यपि बनारसक सामान्य लिपि कश्मीरक लिपि सँ मिलैत छल तथापि एहि मे नमहर आड़ि सन सिरोरेखा पाओल जाइछ जकर गया अभिलेखक लिपि मे अभाव अछि। अतः गया अभिलेखक लिपि पूर्णतः मिथिलाक्षरे थिक। सन ६३५ ई०क अंशुबर्माक अभिलेख तथा आदित्यसेनक अफसद प्रशस्तिक न्यूनकोणीय लिपि अग्रीम विकासक द्योतक थिक। अंशुबर्माक अभिलेख एवं अन्य नेपाली अभिलेख मे अक्षरक गोलाकार रूप पाओल जाइछ। अतः ज्ञात होइछ जे अहु अभिलेख सभहक लिपि मिथिलाक्षरे थिक।

क्रमशः परिवर्त्तित एवं परिवर्द्धित होइत न्यूनकोणीय वा सिद्धमातृका लिपि अपन दू नव रूप मे—(१) आधुनिक मिथिलाक्षर तथा (२) आधुनिक नागरी लिपिक दिसि अग्रसर भेल।

मैथिली भाषा एवं लिपिक उल्लेख सर्वप्रथम कोलब्रुक्स[९८] १८०१ ई० मे कएलनि। ओकर पूर्व मिथिलाक लिपि कें तिरहुता कहल जाइत छल जे अद्यावधि एहि लिपिक निमित्त व्यवहृत संज्ञापद थिक। प्रायः वैदेही लिपिक तिरहुता नाम गुप्त साम्राज्यकाले मे पड़ल।

गुप्त साम्राज्यकाल मे (चारिम-पाँचम शताब्दी) विदेह तिरभुक्तिक नाम सँ प्रसिद्ध भेल[९९]। आधुनिक तिरहुत तिरभुक्तिक परिवर्तित रूप थिक जाहि आधार पर ओहि क्षेत्रक लिपि एवं भाषाक नाम तिरहुता पड़ल। अबुल फजल[१००] अपन ग्रन्थ आइने-अकबरी मे ओहि क्षेत्रक भाषा एवं लिपि कें तिरहुता कहलनि अछि।

मैथिल परम्परा मिथिलाक्षर कें ब्रह्मी सँ उत्पन्न मानैत अछि जकरा पर तन्त्रक व्यापक प्रभाव अछि। अपन साहित्यक सम्पन्न परम्परा, शब्दक मनोहर मोहकता एवं विचारक सम्बन्धक अभिव्यक्तिक कोमलताक दृष्टि मे मिथिला कें संस्कृति एवं साहित्यक क्षेत्र मे विशिष्ट स्थान तँ अछिए संगहि भौतिक प्रपञ्च सँ रहित वीतराग भेला सन्ताँ मैथिलक देश विदेह कहौलक। सरस्वतीक तट सँ धूमाग्नि आनि आर्य अपन संस्कृतिक प्राचीन स्वरूप कर्म मार्ग कें विदेहे मे प्रचार कएल। विदेह-दर्शनक (तत्व-ज्ञान) निमित्ते ई ब्रह्मज्ञानक प्रथित क्षेत्र भेल जतए पश्चात् महाबीर एवं गौतम बुद्ध दूहू ज्ञानवादक प्रचार कएलनि।

---

९७ इण्डिका, भा० १, पृ० १-३ (सचाउ)।

९८ एसियाइटिक रिसर्चेज, अंक ८, पृ० १९९।

९९ आ० स० इ० ए० रि० १९०३-४, पृ० १०९।

१०० जेरेट द्वारा संपादित, भा० ३, पृ० २५३।

अतएव ई साधिकार कहल जाए सकैछ जे सभ्यताक प्रारम्भे मे मिथिलाक सभ्यता एक विकसित स्तर प्राप्त कए चुकल छल। व्यवसाय एवं मुद्रा-विनिमयक उच्च विकास भए गेल छल तथा ओ उपनिषद् , व्याकरण, ध्वनिशास्त्र आदिक दिशा मे सूक्ष्म अनुसन्धान मे निमग्न छल। की ई सभ तथ्य प्राचीन विदेह निवासी मे ओकर लेखन कलाक ज्ञानक पूर्व कल्पना नहि करैछ ? पुनः आई इतिहासक तथ्य प्रक्षिप्त कए केवल कल्पनाक द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त केँ सामान्य रूप सँ स्वीकार कए ओहि समृद्धशील वैदेही-लिपि केँ हमरा लोकनि बिसरि गेलहुँ तथा मैथिली लिपि जे अहु समय तिरहुताक नाम सँ विख्यात अछि ओकरा मैथिल ब्राह्मणक लिपिक संज्ञा दए एक क्षेत्रिय लिपिक नाम सँ सम्बोधन करैत छी। की एकरा विधिक विडम्बना एवं प्रपञ्चक जाल नहि कहल जाए सकैछ ?

१

अक्षरक उत्पत्ति

मानव संस्कृति एवं ओकर विकासक संगहि लिपिक उद्‌भवक आविर्भाव भेल। भारतवर्ष मे चित्रकले समस्त लिपिक विकासक मूल स्रोत थिक। भारतीय शिला चित्रक रचनाक उद्देश्य कला प्रधान वा सौंदर्य-मूलक नहि भए उपयोगितावादी, अभिचारपरक, अतिविश्वास सँ अनुप्रेरित एवं आदिम धर्म मे धार्मिक छल।

प्रागैतिहासिक मानवक चित्र एक तरहक टोना छल जे पशु कें वशीभूत केनिहारि शक्तिक प्रसन्नताक निमित्त कएल जाइत छल।[1] अतएव आदिम मानवक चित्रकला ओकर जीवनक प्रक्रियाक सहज अंग छल। ओ एक एहेन ने जटिल क्रिया छल जाहि मे ओकर समग्र शक्ति रहस्यात्मक जगतक इकाई मे केन्द्रित छल।

भारतीय शिला चित्रक समग्र रूप कें देखला पर ज्ञात होइछ जे मनुष्य अपन रूपक प्राथमिक बोध अपन छाह कें देखलाक उपरान्ते कएलक। तदुपरान्त अन्य वस्तुक छाहक ऊपरहु ओकर ध्यान केन्द्रित भेल। प्रातःकाल एवं सन्ध्याक गहन बनक स्वाभाविक प्रकाश एवं अन्धकार मे सजीव आकृतिक बोध प्रायः छाह-रूपे तँ होइछ जकरा संग आदिम मानवक घनिष्ठ सम्बन्ध छल। फलतः जे रूप कलाक आदिम अवस्था मे उद्‌भूत भेल ओहि मे मात्र बाह्य आकारहिटाक प्रधानता छल तथा भीतरी अवयवक रूप-रेखा अनावश्यक बूझि पड़ल। पूरक शैली अर्थात् केवल एक रंग द्वारा आपूरित अंश सँ वस्तुक बोध करबाक व्यापक एवं सुबोध विधि एहि हेतु बड़ उपयुक्त सिद्ध भेल। एहि शैली मे गेरुरंगक अतिरिक्त लाल, कत्थई इत्यादि कतिपय रंग प्रयुक्त भेल। पंचमढ़ी तथा ओकर अड़ोस-पड़ोस क्षेत्र मे श्वेत रंगक सेहो व्यापक प्रयोग पाओल जाइछ। एकर अतिरिक्त मटमैला, पीयर, बैंगनी एवं कारी रंगक प्रयोग एहि शैली मे सेहो भेल अछि।[2]

शिला चित्रक पूरक शैली मे चित्रक वाह्याकारे कें विशेष महत्त्व अछि जाहि सँ आकृतिक बोध होइछ। कलात्मकताक कारणे प्रायः ओहि मे ज्यामितिक रूप प्रकट भए उठल। जखन ओ रूप कोनदार-उभार सँ युक्त भेल तँ ओकरा 'कोणीय' तथा जखन ओहि मे गोलाकार रूप बनल तँ ओ 'वर्तुल' कहल गेल।[3] सम्भवतः एवंक्रमक रूप भाव एवं मुद्राक सम्यक बोधक निमित्त होइत छल जाहि सँ पश्चात चित्रलिपि एवं जनलिपि दुहुक संगहि उत्पत्ति भेल।

चित्रलिपिक सभ सँ प्राचीन उदाहरण जे उपलब्ध अछि ओ इजिप्शियन हीरो-

१ डॉ० जगदीश गुप्त, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ० ५६४
२ ओपद,पृ० ५७८
३ मत्स्यपुराण, अ० ९,

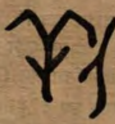
ग्लिप्स तथा चाइनीज कैरेक्टर्स थिक। लिपि मे वस्तु कें लाक्षणिक रूप मे व्यक्त करबाक परिपाटी छल। एहि तरहक लिपि कें पिक्टोग्राफ्स (चित्र संख्या १) कहल गेल अछि। चीन एवं जापान मे अद्यावधि किछु परिमार्जित रूप मे एहि लिपिक प्रयोग अहुखन कएल जाइछ।






बड़द भेंड़ सूगर बरहसिंघा





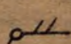
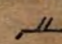

गाय भेंड़ी भेंड़ी सूगरनी

पिक्टोग्राफ्स
चित्र सं० १

पिक्टोग्राफ्स क्रमशः सूक्ष्म होइत गेल तथा जेना-जेना मनुष्यक मस्तिष्कक विकास होइत गेल तहिना ओकर रूप, वर्ण एवं स्वर मे परिवर्त्तन होइत गेलैक तथा ओ तेहेन ने सूक्ष्म

















स्वाभाविक सँ सूक्ष्मक दिशि
चित्र सं० २

रूप मे व्यवहृत होमय लागल जे पश्चात इहो धरि पता नहि चलैछ जे कोन चित्र आब कोन वस्तुक थिक (चित्र संख्या २)।

मोहनजोदड़ो एवं हरप्पाक उत्खनन मे जे लिपि उपलब्ध भेल अछि ओहि सँ प्रतीत होइछ जे ओ चित्रमय रूप केँ त्यागि पूर्वहि वर्णमय भूमिका पर पहुँच गेल छल। अधिकांश अक्षर मे एतेक ने परिवर्त्तन भए गेल अछि जे ओकर मौलिक चित्राक्षरक पता लगाएब वा ई बूझब जे कोन वर्ण कोन पदार्थक चित्र थिक यद्यपि नितान्त कठिन थिक तथापि कतिपय एहेनो लिपि अछि जे अपन पूर्वाहिक रूप मे तावतहु धरि प्रयुक्त होइत छल जकर पुष्टि मनुष्य वाचक एवं मत्स्यवाचक चित्र सँ होइछ।[४]

भारतीय अनुश्रुति सँ ज्ञात होइछ जे गंधर्व चित्रलिपि मे एतेक ने प्रवीण होइत छलाह जे राजा पृथु चित्ररथ केँ गंधर्वक राजा बनौलथिन। दशम् शताब्दीक एक तामिल ग्रन्थ 'याप्परूकलाविहृत्ति' मे उल्लिखित अछि जे प्राचीन द्रविड़ अपन विचार केँ चित्र खींचि कए प्रकट करैत छलाह। अतएव प्रतीत होइछ जे लिपिक प्रारम्भिक रूप चित्रात्मके छल जे पश्चात भावात्मक एवं प्रतीकात्मक बनि मनुष्यक विचार केँ प्रतिनिधित्व करए लागल जे कालक्रमें प्रतीकात्मक बनि गेल।

हण्टर एवं मार्शल महोदयक द्वारा प्रस्तुत सिंधु लिपिक जे नमूना पाओल जाइछ ओ प्रधानतः मनुष्य एवं आन-आन जीवधारी पदार्थ, जीवनोपयोगी पदार्थ, दिव्य प्रतीक, अण्डाकार पदार्थ, त्रिकोण, कोण तथा चतुष्कोण एवं यन्त्र-मन्त्रक रूप मे विभक्त कएल जाए सकैछ जकर अपन-अपन पृथक दार्शनिक दृष्टिकोण अछि (चित्र संख्या ३)।

सिंधु लिपिक नमूना पाटलिपुत्रक उत्खनन् तथा उपलब्ध पञ्चमार्क मुद्रा, रामपुरवा तथा सोहगौराक अभिलेख आदि मे सेहो पाओल गेल अछि। एहि सभ सँ निस्सृत होइछ जे सिंधुघाटीक लिपि जे विविध भावनाक द्योतक छल अपन प्रारम्भिक रूप मे अपन पूर्वक कलेवर मे परिवर्त्तन करैत कोनहु-ने-कोनहु रूप मे अद्यावधि पाओल जाइछ तथा अहिपन, यन्त्र-मन्त्र एवं गोदनाक प्रतीक लिपि जे समग्र देश मे परिव्याप्त अछि ओहि प्राचीन लिपिक बोधक थिक।

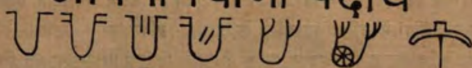
जहाँ धरि यन्त्र-मन्त्रक व्यापकताक प्रश्न अछि यन्त्रक निर्माण मे विन्दु, त्रिकोण, वृत्त तथा चतुष्कोणक प्रयोग होइछ। यन्त्रक आरम्भ विन्दु सँ होइछ। बीज एवं नाद विन्दुक प्रतीक थिक। अहि सँ सृष्टिक आरम्भ होइछ। ई शिवलिङ्गक लिङ्गस्थान, विष्णुक नाभी जतए सँ सृष्टि-पद्म निस्सृत होइछ, शिवक नाभी, जकरा पद्म पर शक्तिक विलास होइछ तथा बुद्धक मस्तक बिन्दु थिक। नटराजक मूर्त्ति मे मायाचक्रक भीतर नटराजे ब्रह्म थिकाह। इएह गगनलिङ्गक सूर्यमण्डल तथा जैन तीर्थङ्करक हृदय परहक भृगुलता वा धर्मचक्र थिक। इएह मन्दिरक कलश थिक। मन्दिर सृष्टिक प्रतीक थिक जकर आरम्भ बिन्दु-स्थान कलश सँ तथा अन्त चतुष्कोण सँ होइछ।

४ केदारनाथ शास्त्री, हरप्पा, पृ० २१२

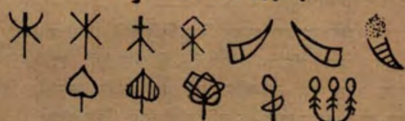
जीवधारी पदार्थ



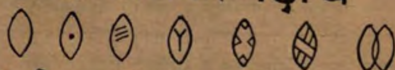
जीवनोपयोगी पदार्थ



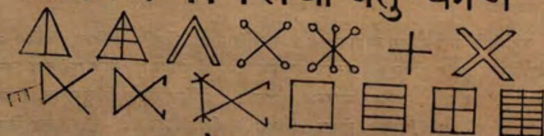
दिव्य प्रतीक



अंण्डाकार पदार्थ



त्रिकोण कोण तथा चतुष्कोण

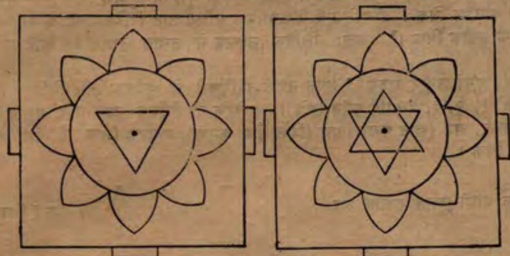


यंत्र-मंत्र



चित्र सं० ३

त्रिकोण त्रिशक्तिक रूप मे चेतनाक आत्म प्रसार थिक। ई त्रिकोण, त्रिदेव, त्रयी इत्यादिक प्रतीक थिक (चित्र संख्या ४)। बिन्दुक विस्तार मे जखन शक्तिमान शक्ति, अर्थात् शिव-शक्तिक कल्पना कएल जाइछ तँ बिन्दुक बाहर दू गोट त्रिकोण रहैछ। उर्ध्वशीर्ष त्रिकोण शिव और अधःशीर्ष शक्ति थिक (चित्र संख्या ५)। ई शिव शक्त्यात्मक बिन्दु पसरि



चित्र सं० ४ चित्र सं० ५

वृत्तक रूप ग्रहण करैछ। ई त्रिगुणात्मक प्रकृति थिक। आत्म विस्तार ओकर स्वभाव थिकैक तथा ओकर निरन्तर प्रसार होइत रहैछ। सभ वस्तु ओहि कुण्डलीक भीतर रहैछ। अतएव ओकर नाम कुण्डली एवं हिरण्य गर्भ सेहो थिक। वेद मे 'हिरण्य'क प्रयोग तेजक अर्थ मे कएल गेल अछि।

बिन्दुक विस्तार चतुष्कोणक रूप मे स्थिर रहैछ। चतुष्कोण स्थिरताक प्रतीक थिक। अतः ओकरा मूलाधार सेहो कहल गेल अछि। ई चतुष्कोण पीतवर्ण एवं पृथ्वी तत्त्वक प्रतीक थिक। अतएव ओकरा भूपुर सेहो कहल जाइछ।[५]

चतुष्कोणक प्रसंग मे स्टेला क्रमरिशक मत[६] छनि जे चतुष्कोण भारतीय शिल्पक अत्यन्त आवश्यक एवं परिपूर्ण रूप थिक। ई वृत्तक अस्तित्व भए ओकरा सँ रूप ग्रहण करैछ। प्रसारित होइत शक्ति केन्द्र-बिन्दु सँ बाहर भए वृत्त-रूप धारण करैछ तथा चतुष्कोणक रूप मे स्थिरता प्राप्त करैछ। वृत्त एवं वक्ररेखा पथ जीवन, शक्ति तथा गतिक केन्द्र थिक। चतुष्कोण नियमबद्धता एवं बढ़ैत जीवनक अन्त और परिपूर्ण रूपक तथा जीवन और मृत्युक पश्चातहुक परिपूर्णताक चेह्न थिक।

वास्तुकलाक द्वितीय अलङ्करण वृत्त थिक। अपन नियमानुसार विस्तृत जगतक लिङ्ग चतुष्कोण कालवृत्तक पूर्वहि रहैछ। वृत्तक अस्तित्व मानि चतुष्कोण बनैछ। वृत्त एक गतिशील रूप थिक जे केन्द्र-बिन्दु सँ रूप ग्रहण करैछ।[७] प्रकृति अर्थात् सक्रिय ब्रह्मक नाम-रूपात्मक जगत मे आत्म विस्तारक पूर्णता चतुष्कोण मे रहैछ।[८] ई देव-मन्दिर एवं देव-विग्रहक रेखाङ्कण थिक। ओकर चौकोर मे चारि गोट द्वार रहैछ जकरा द्वारा प्रवेश कए

५ डॉ० जनार्दन मिश्र, भारतीय प्रतीक विद्या, पृ० २२३
६ दी हिन्दू टेम्पुल, भाग २, पृ० २२
७ ओएह, पृ० ४१
८ डॉ० जनार्दन मिश्र, भारतीय प्रतीक विद्या, पृ० २२४

साधक देव-मन्दिर वा यन्त्र मे प्रवेश करैछ। चतुष्कोणक भीतर आवरण देवताक अर्थात् प्रधान देवताक सेवा मे आस-पास रहनिहार देव-देवताक स्थान रहैछ तथा मध्य बिन्दु-स्थान अर्थात् केन्द्र-बिन्दु पर प्रधान देवताक स्थान रहैछ।

उपयुक्त सिद्धान्तहि पर शिवलिङ्गक निर्माण होइछ। शिवलिङ्गक ऊर्ध्व वर्तुल भाग बिन्दु स्थान थिक। मध्य भाग मे वेदीक रूप मे वृत्त विष्णु वंश थिक तथा मूल भाग चतुष्कोण ब्रह्मांश थिक। ई गति एवं स्थित्यात्मक सक्रिय तथा निष्क्रिय ब्रह्मक साकार और निराकारक प्रतीक थिक।[९] अतः लिपिक उद्भव मे तन्त्रक स्थान बड़ विशिष्ट प्रतीत होइछ।

पं० दुर्गा शङ्कर पाठक[१०] अपन गणक तरङ्गिणी मे कुबेरक नौ निधिक विकृति आकृति के १, २, ३, इत्यादि कहैत छथि। कुबेरक नौ निधिक नाम कुंद, मुकुंद, नील, कच्छप, मकर, खर्व (छोट कमल) पद्म (किछु पैघ कमल), महापद्म (सभ सँ पैघ कमल) तथा शंख थिक।

कुंद (एक माघी फूलक कलीक रूप) = १ थिक

मुकुंद (फूल जकर डाँट मे दू गोट कली होइछ ओकर रूप) = २ थिक

नील (फूल जकर डाँट मे तीन गोट कली होइछ ओकर रूप) = ३ थिक

कच्छप (काछुक रूप) = ४ थिक

मकर (नकारक रूप) = ५ थिक

खर्व (छोट कमलक रूप) = ६ थिक

पद्म (किछु पैघ कमलक रूप) = ७ थिक

महापद्म (सभ सँ पैघ कमलक रूप) तथा = ८ थिक

शंखक रूप = ९ थिक

९ ओएह, पृ० २२४

१० सुधाकर द्विवेदी, गणित का इतिहास, भाग १, पृ० ८

महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदीक मत[११] अछि जे एहि मे सभटा प्रपंच ठाढ़ एवं टेढ़ रेखाक थिक। रेखाक र के ल मे बदलबा पर जेना कि र, ड, लक अदल बदल प्राय: होइछ, रेखाक दोसर नाम लेखा होइछ। लेखा शब्द हिसाबक अर्थ मे भगवान बुद्धक पूर्वहि सँ भारतवर्ष मे प्रचलित छल। प्राकृत जातक मध्य जाहि पर बुद्धघोषक टीका छनि, कतैको जीवन चरित मे पढ़बाकाल लेखाक रूप तथा गणनाक नाम पाओल जाइछ। रूप सँ गणित मे प्रचलित मुद्राक बोध होइत छल। भास्कराचार्य अपन बीजगणित में रूप शब्दक प्रयोग मुद्राहिक अर्थ मे कएलनि। पं० श्री जयराम ज्योतिषीक अनुसार पाणिनिक व्याकरण सँ 'लिख' (अक्षर विन्यासे) धातु सँ प्रथम लेखा (लिख्यते अर्थात् जे लिखल जाइछ) पुनि लक स्थान मे र कए देला पर रेखा शब्द बनल। ठीक एहने बात भानुदीक्षित अपन अमरकोशक टीका मे लिखलनि अछि। रेखाहि सँ अक्षरक चेह्न बनाओल गेल अछि। वेदक मन्त्र मे उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित स्वर के जनबाक हेतु सर्वप्रथम ठाढ़ तथा टेढ़ रेखाहिक निर्माण भेल। अत: एहि सँ निस्सृत होइछ जे —

देवनागरी

१ = एक ठाढ़ रेखा सँ

२ = एक तिरछी तथा एक ठाढ़ रेखा मिलौला सँ।

३ = एक ठाढ़ एक तिरछी पुनि एक ठाढ़ रेखा के मिलौला सँ।

४ = एहि मे छोट पैघ दुइ गोट तिरछी और दुइ गोट ठाढ़ रेखा अछि।

५ = एहि मे दू गोट तिरछी, दू गोट ठाढ़ तथा एक कनेक दहिन।

६ = एहि मे तीन तिरछी तथा तीन ठाढ़ रेखा अछि।

७ = एहि मे छोट-पैघ चारि तिरछी तथा तीन गोट डाढ़ रेखा अछि।

८ = एहि मे छोट-पैघ चारि गोट तिरछी तथा चारि गोट ठाढ़ रेखा अछि।

९ = एहि मे छोट-पैघ पाँच गोट तिरछी और चारि गोट ठाढ़ रेखा अछि।

---

११ ओपद, पृ० ९

एकम्, द्वि, त्रीणि, चत्वारि, पञ्च, षट, सप्त, अष्ट तथा नव ई पाणिनि एवं शाकटायनक उणादि सँ बनैत अछि। अतएव एक प्रकारे ई स्वयं सिद्ध अछि।

भारतीय संस्कृति एवं लिपिक इतिहास मे रेखाक उतार-चढ़ाव बड़ महत्वक अछि। कहुखन तँ शनैःशनैः, कहुखन प्रवल वेग मे, कहुखन ऊपर सँ नीचा दिशि भारी भए रेखा विविध प्रकारक मनोभाव केँ उत्पन्न करैछ। मन्द रेखा अस्पष्ट भए दूरक बोध करैछ। गम्भीर रेखा निकटताक द्योतक थिक। गंभीर रेखा सँ शक्ति तथा दृढ़ताक आभास होइछ। अधिक गंभीर रेखा आत्मविश्वास एवं दुराग्रहक द्योतक अछि। रेखा मे मोटाइ, क्षीणता एवं उतार-चढ़ाव आनि कोमलता, सुकुमारता तथा नीरसताक ज्ञान कराओल जाइछ। जखन रेखा मे प्रगति होइछ तँ ओ मनोभाव केँ ऊपर लए जाइछ तथा वीरता एवं शूरताक बोध करबैछ। रेखाहि सँ रूप एवं आकारक रचना होइछ। सोझ एवं ठाढ़ रेखा मोन केँ ऊपर ब्रह्माण्डक दिशि लए जाइछ। ओकर सहायता सँ मोन ऊपर उठि एक काल्पनिक जगतक दिशि अग्रसर होइछ। ओ मोन केँ जटिलता सँ उठाए एकाग्रताक दिशि लए जाइछ। अतएव मन्दिर, मस्जिद आदिक भवन प्रायः पैघ एवं उँच बनाओल जाइछ।

एकर विपरीत खसल रेखा मोन केँ एक सीमाक अन्दर निर्धारित रखैछ। एहि तरहक रेखा सांसारिकताक द्योतिका थीक। एहि रेखा मे प्रगतिक आभाव पाओल जाइछ।[१२]

भारतवर्ष मे रेखागणितक परम्परा ब्राह्मण एवं शुल्वसूत्रक समय सँ भेल। मेकडोनेल अपन संस्कृत साहित्यक इतिहास[१३] मे कहैत छथि जे शुल्वसूत्र श्रौतसूत्रक अंग थिक तथा ओहि मे प्रतिपादित रेखागणित ब्राह्मण धर्मक विशेष अंग छल। यजुर्वेद गद्य भाग मे तथा ब्राह्मण ग्रन्थ मे यज्ञवेदी बनेबा मे एहि सँ सहायता लेल जाइत छल। ओहि वेदीक रचना मे कनेको भूल भेला पर बड़ पैघ अशुभ एवं अकल्याणकर बुझल जाइत छल। डा० थीबो[१४] सेहो उपयुक्त मतक समर्थन करैत छथि। तैत्तिरीय संहिता, ब्राह्मण ग्रन्थ, बोधायन एवं आपस्तम्ब शुल्वसूत्र मे आयत आदिक नियम तथा ओकर बराबरिक क्षेत्रक अन्य क्षेत्र केँ खीचबाक विधान देल गेल अछि।

अतएव रेखाक सम्बन्ध भारतवर्ष मे धार्मिक तथ्यहि सँ छल तथा लोक अपन देवी-देवताक शक्ति एवं चरित्र केँ दर्शेबाक निमित्त प्रतीकात्मक शैली केँ अपनौलक। फलतः विष्णु, शिव, ब्रह्मा तथा हुनकर अवतारक रूप प्रतीकक माध्यमे सँ विकसित भेल। ज्ञानक देवी सरस्वती केँ धवल वर्ण देल गेल किएक तँ श्वेत रंग ज्ञानक प्रतीक थिक। एति तरहेँ सरस्वती केँ हँस वाहन भेटल किएक तँ हंस विवेक एवं बुद्धिक प्रतीक थिक। हाथ मे

१२ रामचन्द्र शुक्ल, कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, पृ० ७२
१३ पृ० ४२४
१४ ज० ए० सो० ऑफ बंगाल, १८७५, पृ० २२८

वीणा, पुस्तक तथा कमल राखल गेल किएक तँ ओ सभ कला, विज्ञान तथा विद्याक प्रतीक थिक।[१५]

प्रतीकक भावना समाज मध्य तेहेन ने व्यापक भेल जे ओकरा जीवनक संग सम्बद्ध करबाक परिपाटी चलल। फलतः गोदनाक प्रचलनक आरम्भ भेल जकर लिपि प्रतीकात्मक थिक। गोदनाक प्रतीक लिपिक एक पैघ सूची श्री सी० ई० ल्युआई, इन्डियन एन्टीक्वेरी, अंक ३३ मे प्रस्तुत कएलनि अछि। अहि सूचीक कतिपय चित्राक्षर जेना पृष्ठ संख्या २२२ महक हरिणक चित्र; २२६क सातिय (जोड़ाक चिन्ह); २४२क विच्छक चित्र; ३०२ पृष्टक माछ; ३०८ क मनुष्यक चित्र तथा पृष्ठ संख्या २४६क हाथी इत्यादिक चित्र श्री शंकरानन्दक "दि इन्डस पीपुल्स स्पीक्स"क पृष्ठ संख्या ७ मे प्रस्तुत चित्र सभ सँ साम्य अछि।

एहि सभ चित्र केँ अपन-अपन दार्शनिक विशेषता तँ अछिये संगहि श्री शंकरानन्द जीक अनुसार एहि सँ लिपिक उद्‌भव सेहो भेल।

एवंक्रमें अधिक विशद् वर्णनक निमित्त प्रतीकक सहारा लेल गेल। मूर्त पदार्थक चित्र अमूर्त विचार केँ व्यक्त करबाक हेतु प्रतीक-तुल्य प्रयुक्त कएल गेल। रक्षाक बोधक हेतु एक हाथक चित्र बनाओल गेल जे अवलाक सहायताक निमित्त तानल रूप मे छल। वृक्षक चित्रक नीचाँ सूर्यक चित्र अन्धकारक बोधक तथा वृक्षक ऊपरक सूर्यक चित्र प्रकाशक बोधक भेल। दुइ गोट एकत्र हाथ सँ मित्रक अर्थ भेल। तत्पश्चात मूल भाव संकेत सँ मौखिक ध्वनि बोधक संकेतक उत्पत्ति भेल।

आदिम मानव सर्वप्रथम अपन उल्लास केँ प्रकटक निमित्त हूँ शब्दक उच्चारण कएलनि जे भारतीय भाषाक स्रोत स्वरूप भेल। अपन उपस्थितिक बोधक हेतु हुँ, हम, हाम, तथा अः क प्रयोग होमए लागल तथा पश्चात हम् शब्दक प्रयोग एहि निमित्त सेहो भेल। हन् हन् शब्दक प्रयोग शीघ्रताक अर्थ मे भेल जकर तात्पर्य आब जान सँ मारब वा आघात करब होइछ।[१६]

हः शब्द प्रारम्भ मे हूँक सूचक छल तथा एहि सँ अपन उपस्थितिक प्रसंगक बोध होइत छल जे क्रमशः थ मे परिवर्तित भेल जाहि सँ स्थ शब्द बनल। अतएव ह, हर्, हल, हस आदि कतिपय धातुरूपक निर्माण भेल। अः क अर्थ छल हम छी जे पश्चात अस एवं अस्मिक आकृति ग्रहण कएलक। हा, हाः, आः, आहा एवं हाहा शब्दक व्यवहार व्यथा प्रकटक निमित्त होइत छल। पश्चात हा छोड़बाक अर्थ मे, हु सँ फु, भु एवं हुक प्रयोग आगि प्रज्ज्वलितक निमित्त होमय लागल जकर सम्बन्ध यज्ञ सँ छल। एवंक्रमें या, खा, दा, धा, पा, मा, इत्यादि शब्दक प्रचलन भेल।

---

१५ रामचन्द्र शुक्ल, कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ पृ० ११५

१६ मैथिली मे अहू समय हुं, हल, हाम, हन-हन शब्दक प्रयोग अपन पूर्वहिक अर्थ मे होइछ। हः शब्दक व्यवहार मिथिला क्षेत्र मे हर जोतबाक काल बड़दकेँ ठाढ़ होयबाक निमित्त हरवाह द्वारा कएल जाइछ।

आदिम मानव प्रधानतः नदीक तट पर बसैत छलाह। हुनका प्रतीत भेलनि जे नदी कल-कल शब्द मे जाइछ। अतएव कल शब्द सँ तात्पर्य भेल गेनाइक। कालक्रमें कल शब्द सँ चल, छल, ठल, डल इत्यादि शब्दक उत्पत्ति भेल। समयानुसार कल शब्द सँ जल उत्पन्न भेल। कल-कल, शब्दहि सँ लहरक हेतु कल्लोल शब्द बनल। एहि तरहेँ पात पत्-पत् शब्द मे डोलैत छल। अतः पत् शब्द सँ हिलबाक, खसबाक तथा अहि सँ पात शब्द बनल। एवंक्रमें शब्दक निर्माण भेल[१७] तत्पश्चात विचार केँ लिपिबद्ध करबाक प्रत्येक प्रणालीक प्रारम्भ मूर्त पदार्थक चित्रक द्वारा भेल। कालान्तर मे ओएह चित्र सांकेतिक बनि मौलिक ध्वनिक निमित्त प्रयुक्त होमय लागल। सर्वप्रथम लिपि भावचित्रानुरूप भेल तदुपरान्त ओ ध्वनि बोधक रूप मे परिणत भेल।

ध्वनि-बोधक चित्र ध्वनिक द्योतक थिक। ई तीन प्रकारक अछि—(१) मौखिक, जे पूर्ण शब्दक निमित्त प्रयुक्त होइछ; (२) आक्षरिक, जे शब्दक उच्चारण मात्रक हेतु प्रयुक्त होइछ तथा (३) वर्णमाला द्योतक चित्र अथवा अक्षर, जे मौलिक ध्वनिक निमित्त प्रयुक्त होइछ। एहि तरहेँ लिपि भाषाक ध्वनिक अनुकृत भेल। लिपिक संकेत सँ ध्वनि वा ध्वनि समूहक द्योतन होमए लागल तथा भाषा एवं लिपि समानरूप भेल जे पश्चात अक्षरात्मक एवं वर्णात्मक रूप मे परिलक्षित भेल। अक्षरात्मक लिपिक अवस्था मे लिपिक इकाई वाक्य अथवा शब्दक संकेत नहि रहि ध्वनि समूह वा अक्षरक चेन्ह रहैछ। जेना नागरी लिपि मे अक्षर संकेतक लिपिक थिक जे दुई गोट ध्वनिक तथा अक समुच्चय थिक। अतएव लिपिक भाषाक सूक्ष्म तत्त्व ध्वनिसमूहक सूक्ष्म रूप ध्वनि केँ व्यक्त करबाक हेतु अधिक समर्थ भेल। ओकर ओएह सामर्थ्य वर्णात्मक शक्ति थिक। वर्ण अलग-अलग ध्वनिक प्रतीक थिक।

अशोक कालीन ब्रह्मी मे बारह स्वरक चेन्ह छल जे व्यंजन मे मिलाओल जाइत छलैक। एहि सँ मैथिलीक "बाराखड़ी" वा बारह-अक्खरी" (द्वादशाक्षरी) शब्द निस्सृत भेल।

ब्रह्मी मे व्यंजनक माँथ पर कान सन बाँम एवं दहिन भाग मे जे मात्रा लगाओल जाइत छल ओकरा प्राकृत मे कन्न (कर्ण) तथा दोसर मात्रा जे ठाढ़ रेखा सन लगाओल जाइत छल ओकरा मात्ता (मात्रा) कहल गेल जे अद्यावधि एवंक्रमें पढ़ाओल जाइछ :—

क बिन कन्ने क। कंचुन का। हरिसँइ कि। दीर्घे की। ताड़े कु। बड़िजन कू। एक लै के। दू लै कै। कन मत को। दू मत कन्ना कौ। मस्ते कं। दुवुन्ना दू दासी कः।

उपर्युक्त बाराखड़ीक उद्‌भव एहि प्रकारक थिक :—

बिन कन्ने— बिना कर्णेन—कानक बिना। कन्चुन का—कर्णेन—कानक समेत का। हरिसँइ—ह्रस्व—छोट। दीर्घे—दीर्घ – पैघ। ताड़े—तले—नीचाँ। बड़िजन—वार्धक्य —पैघ (मात्रा सँ)। एकलै—एक मात्रा लए। दू लै—दू मात्रा लए। कनमत—कर्णेन मात्र

१७ एम० के० भट्टाचार्य, दि लैंग्वेज एवड स्क्रीप्ट्स आफ एन्सियन्ट इन्डिया, पृ० ९३-९४

या च—एक कर्ण तथा एक मात्रा सँ। दूमत कन्ना कौ—मात्रा द्वयेन कर्णेन च---दू मात्रा एवं एक कर्ण सँ। मस्ते—मस्तके—माथक ऊपर। कं बिंदु सँ। दुबुन्ना दू दासीकः—दासी—दक्षिणे (अक्षरस्य) दहिन दिशि दूटा बिन्दु रखला सँ। एवंक्रमें उपर्युक्त सभटा शब्द संस्कृत शब्दक अपभ्रंश थिक जे क्षेत्रिय भाषाक अनुसार समस्त देश मे किछ हेरफेर केँ प्रयुक्त कएल जाइछ।

संस्कृतक प्राचीन साहित्य मे अक्षर शब्द ध्वन्यात्मक (उच्चारित) एवं संकेतात्मक (लिखित) तँ दुहु अर्थ मे पाओल जाइछ किन्तु "वर्ण" शब्द केवल संकेतात्मक चेन्हक निमित्त प्रयुक्त होइत अछि तथा ईकार, ऊकार इत्यादि मे "कार" शब्द केवल वर्णनक हेतु प्रयुक्त होइछ। अतएव, "वर्ण" एवं कार प्रत्यय शब्द लिखित संकेतहिक सूचक थिक।[१८] वर्ण धातु सँ रंगब वा बनाएब तथा कृ धातु सँ करबाक तात्पर्य होइछ।

छांदोग्य उपनिषद मे अक्षर शब्द पाओल जाइछ तथा एहि मे ई, ऊ एवं ऐ स्वर, ईकार, ऊकार, और एकार शब्द केँ सूचित कएल गेल अछि तथा स्वरक सम्बन्ध इन्द्र सँ, ऊष्मनक प्रजापति सँ तथा स्पर्शवर्णक मृत्यु सँ कहल गेल अछि।[१९]

वर्णरूपक विषय मे लक्ष्मीधर सुभगोदयक व्याख्या चन्द्रकला मे विस्तृत वर्णन कएलनि अछि। ओ ओहि प्रसंग मे सनत कुमार संहिताक वर्णने केँ मान्यता देलनि अछि। प्रत्येक वर्ण पञ्चभूत, त्रिदेव एवं प्राणादि सँ संघटित होइछ।[२०]

सामान्यतः वर्ण केँ पृथक-पृथक तथा वर्णमाला केँ समुदित रूप मे मातृकाक संज्ञा देल गेल अछि।[२१] वर्णमालात्मक मातृका[२२], (१) केवल, (२) बिन्दुसंयुक्त, (३) विसर्गयुक्त तथा (४) उभयात्मक भेद सँ चारि प्रकारक अछि। लोक मध्य बिन्दु-विसर्ग रहित केवल मातृका प्रयुक्त होइछ तथा आन तीनहु भेदक प्रचलन मन्त्रशास्त्रेटा मे होइछ।

अकार सँ लए क्षकार पर्यन्त बिन्दुयुक्त मातृका केँ सर्वज्ञताकरी विद्या[२३] कहल गेल अछि। स्वच्छन्दतन्त्रक उक्ति थिक जे—'न विद्यामातृकापरा'[२४] अर्थात् मातृका सँ पृथक कोनो आन विद्या नहि अछि। ई सम्पूर्ण वर्णमाला रूप मातृका प्रणव सँ उत्पन्न होइछ। अतः ओङ्कारक एक नाम मातृकासूः सेहो थिक।[२५] मुनिवर्य सौभरि अपन मातृकानाममाला नामक ग्रन्थ[२६] मे सर्वप्रथम अकारादि सोलह स्वर, क्ष पर्यन्त व्यञ्जन एवं मात्राक पुःन स्थापना कए वर्णक पृथक-पृथक व्याख्या कएलनि अछि।

---

१८ छांदोग्य उपनिषद २.१०,

१९ ओपद १.१३

२० डॉ० शिव शंकर अवस्थी, मन्त्र और मात्रिकाओं का रहस्य, पृ० १२४

२१ ललितासहस्रनाम, श्लोक १६७

२२ तन्त्रसार, मातृकाविलास, पृ० ६३

२३ परशुरामकल्पसूत्र २१ दसम खण्ड

२४ पटल ११, श्लोक १९९

१५ मन्त्राभिधान ४

२६ मातृकाविलास, पृ० ९६

वर्ण शब्दक अर्थ रंग होइछ। वर्ण, वर्णन, वर्णिका इत्यादि शब्द एकहि धातु सँ निस्तृत भेल अछि। वर्णिका सँ तात्पर्य होइछ कोनो विशिष्ट स्वांगक प्रदर्शन करब जाहि सँ बानक शब्द बनल। कायिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य एहि चारि प्रकारक अभिनय केनहार के' बानक कहल जाइत छल। एवंक्रमें ध्वनि के' अभिव्यक्त केनहार संकेत के' वर्ण कहल गेल।

यद्यपि लिपिक यथार्थ अविष्कारक काल के' कहब कठिन थिक तथापि कतिपय प्रमाणक आधार सँ ज्ञात होइछ जे भारत मे लिपिक आविष्कार अशोक सँ सैकड़ो वर्ष पूर्वहि भए गेल छल। 'शील' नामक ग्रन्थ मे 'आखरक' खेलक उल्लेख अछि। पुराण मे लिखित ग्रन्थक दान के' बड़ पुण्य कहल गेल अछि। ऋग्वेदक मंत्र सँ अक्षरक संकेत उपलब्ध होइछ तथा यजुर्वेद संहिता, शतपथब्राह्मण आदि मे तँ स्पष्ट रूप मे अक्षरक निर्माणक प्रसंग मे वर्णन अछि। ब्राभव्यक प्रसंग मे अनुश्रुति अछि जे ओ शिक्षा शास्त्रक प्रणयन कएलनि। प्रणयनक अर्थ थिक प्रवर्त्तन। अतः ब्राभव्य वर्णक विवेचनाक विषय के' एक शास्त्रक रूप देलनि। अतएव भारत युद्ध सँ सात पीढ़ी पूर्वे अर्थात् करीब १५५० ई० पूर्व मे भारत मे वर्णमालाक स्थापना भए गेल छल।[२७]

अतः उपर्युक्त तथ्यक आधार पर मिथिलाक्षरक सम्पूर्ण विकास के' तीन काल—(१) प्राचीनकाल (१५०० ई० पूर्व सँ ५०० ई० पूर्व), (२) मध्यकाल (५०० ई० पूर्व सँ १००० ई०) तथा आधुनिककाल (१००० ई० सँ प्रारम्भ) मे विभक्त कएल जाए सकैछ।

वैदिककाल मे ब्रह्मी लिपिक ध्वनिसूचक संकेत वा अक्षर निम्नलिखित क्रमे' छल :—

स्वर—	ह्रस्व—	अ, इ, उ, ऋ, ऌ
	दीर्घ—	आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ
	प्लुत—	आ३, ई३, ऊ३, ऋ३, ऌ३
	संध्यक्षर—	ए, ऐ, ओ, औ
	ओकर प्लुत—	ए३, ए३, ओ३, औ३,
अयोगवाह—	अनुस्वार—	ग्वम् वा गुं
	विसर्ग—	:
	जिह्वामूलीय—	×क ×ख
	उपध्मानीय—	⌒प ⌒फ
व्यंजन—	स्पर्श—	क, ख, ग, घ ङ
		च, छ, ज, झ, ञ
		ट, ठ, ड, ढ, ण
		ळऽ, ळह३

२७ जयचन्द विद्यालंकार, भारतीय इतिहास की रूप रेखा, भाग १, पृ० २११

	त, थ, द, ध, न
	प, फ, ब, भ, म
अन्तस्थ—	य, र, ल, व,
ऊष्मण—	श, ष, स, ह
यम—	कुं, खुं, गुं, घुं

एवंक्रमें वैदिक साहित्य मे अधिक सँ अधिक ६४ ध्वनि सूचक संकेत अर्थात् वर्ण छल[२८] जे पश्चात साधारणतः जैन, बौद्ध तथा जनसामान्यक निमित्त जनिकर साहित्य प्राकृत मे छल ४६ वा ४७ अक्षर प्रयुक्त भेल। जैनक दृष्टिवाद[२९] मे, जे लुप्त भए गेल अछि, ब्रह्मी अक्षरक संख्या ४६ मानल गेल अछि जे अ सँ लए ह एवं ल (वा क्ष) तक छल। हुएन्तसंग[३०] अक्षरक संख्या ४७ कहैत छथि जे अ सँ ह तथा बाँकीक दुइ गोट अक्षर क्ष और ज्ञ छल। बौद्ध एवं जैनक प्राकृत ग्रन्थ मे ऋ, ॠ, लृ, ॡ एहि चारि स्वरक प्रयोग यद्यपि नहि होइत छल तथापि वर्णमाला मे एहि चारू अक्षर केँ स्थान छलैक जकर पुष्टि ई० सनक छठम शताब्दीक लिखल 'उष्णीविजयधारणी' नामक ताड़पत्र पर लिखल बौद्ध पुस्तक सँ होइछ जे जापानक होयुंजी नामक स्थानक बौद्ध मठ मे राखल अछि। एहि तरहेँ हस्त्राकोल सँ प्राप्त ई० सनक बारहम शताब्दीक बौद्ध तांत्रिक शिला-लेख मे प्रत्येक वर्ण पर अनुस्वार केँ लगाए सम्पूर्ण वर्णमाला बनाओल गेल अछि जाहि मे ई चारूगोट वर्ण पाओल जाइछ।[३१] सम्भवतः एहि चारू वर्णक प्रयोग प्रधानतः तन्त्र-मन्त्र मे होइत छल।

वैदिक अक्षरक स्वरूपक यद्यपि कोनो यथार्थ प्रमाण नहि प्राप्त अछि किन्तु ब्रह्मी लिपिक निर्माण मनुष्यक विविध अंङ्गक आकार एवं वैदिक कर्मकाण्ड मे व्यवहृत याज्ञिक मण्डप, त्रिकोण एवं चतुष्कोण इयादिक आधार पर भेल। कनिंधम उपर्युक तथ्यक आधार पर ओकर आठ गोट वर्गीकरण कएलनि अछि[३२] जे चित्रसंख्या ६ मे प्रस्तुत कएल जाइछ तथा ओकर विवेचन एहि तरहेँ कएलैन्ह अछि—प्रथम वर्ग मे ख तथा ग अक्षर अछि जे मनुष्यक बाँहि और जाँघक प्रतीक रूप थिक। दोसर वर्ग मे य, ज, च और छ अक्षर अछि जे योनि; तेसर वर्ग मे ट, ठ, थ, और ध अक्षर मनुष्यक नेत्रक; चारिम प, ब मनुष्यक हाथ पैरक; पाँचमक म मुँह; छठम वर्गक त, व, न, क और र अक्षर नाकक; सातम वर्गक ल तथा ह अक्षर लिङ्ग और फारक एवं आठम वर्गक श आओर स अक्षर मनुष्यक कानक प्रतीक थीक।

प्रथम वर्ग मे मात्र दुइ गोट अक्षर ख तथा ग अछि। प्रथम मनुष्यक बाँहिक तथा दोसर जाँघक क्रियाक प्रतिनिधित्व करैछ। ख अक्षरक आकृति खन्ती सँ उद्‌भूत भेल जाहि

२८ ओझा, प्राचीन लिपिमाला, पृ० ४५-४६
२९ बूलर, इण्डियन स्टडीज, पृ० १६, २८१
३० सेम्युअल बील, बुद्धिस्ट रेकर्ड आफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग १, पृ० ७८
३१ ओझा, प्राचीन लिपि माला, पृ० ४६-४७
३२ कनिंघम, कोरपस इन्सक्रीप्सन इन्डिकेरम, फलक संख्या २८

प्रथम वर्ग बांहि औरजांघक प्रतीक	प्रारम्भिकरूप	मोहरकअक्षर ४०० ई·पू·	अशोककालीन ब्राह्मीअक्षर २५० ई·पू·	मिथिलाक्षर
ख	खन			
ग	गगन गुफा		∩∩	
दोसर वर्ग योनिक प्रतीक				
य	योनि,यव			
ज	जघन			
च	चमस			
छ	छत्र			
तेसर वर्ग नेत्रक प्रतीक				
ट	टङ्कण		(C	
ठ	ठक्कुर,थारी		○	
थ	नेत्र		⊙	
ध	धनुष		D D	
चारिम वर्ग हाथक प्रतीक				
प	पाणि			
ब	वासस्थान		□	
पांचम वर्ग मुहक प्रतीक				
म	मुख,मत्स्य			
छठम वर्ग नाकक प्रतीक				
त	ताल,तारा,तरंग			
व	वीणा			
न	नेमि,नाक		⊥	
क	कटार		+	
र	रश्मि			
सातम वर्ग लिंगक प्रतीक				
ल	लवाक,लंगर			
ह	हर			
आठम वर्ग कानक प्रतीक				
श	श्रव(कान)			
स	सर्प(सांप)			

चित्र सं० ६

सँ आर्यलोकनि यज्ञक निमित्त मण्डप आदि निर्माण करैत छलाह्। खन्ती संस्कृत शब्द खनित्रक मैथिली रूप थिक जकर व्यापार खन् अर्थात् खुनब छल जे मनुष्य बाँहि सँ करैत छलाह्। फलतः ख अक्षर मनुष्यक बाँहिक प्रतीक रूप थिक।

ख अक्षरक उत्पत्तिक आधार स्वरूप सम्भवतः आकाश सेहो थिक जाहि सँ शून्यताक बोध होइछ। संस्कृत मे जतेक आकाश वाचक शब्द अछि ओ सभ केँ सभ शून्य लिखल जाइछ। अमरकोशक—"शून्यं तु वशिकं तुच्छारिक्तके" वाक्य मे शून्य केँ रिक्त कहल गेल अछि। अतएव आकाशक एक नाम खग सेहो थिक। ख अक्षरक खोखलापन सम्भवतः खर्गक (मृगक) खूर सँ निस्सृत भेल अछि।

ग शब्द मनुष्यक दुइ जाँघक प्रतीक रूप थिक जे गम् धातु सँ निस्सृत भेल। प्रायः गंगा नदीक नाम निरन्तर जेबाक निमित्तहि तथा गगन शब्दक नामकरण अपन मेघमालाक संग सतत घूमबाक आधारहि पर पड़ल। एकर अतिरिक्त ग अक्षर गुफाक प्रतीक सेहो थिक जकर पुष्टि एहि अक्षरक आकृति सँ होइछ।

दोसरवर्ग मे य, ज, च और छ अछि जे योनिक प्रतीक थिक। वेदनाक आनन्दहिक विभक्त रूप इच्छा एवं क्रिया थिक। अर्थात् इच्छा एवं क्रियाक सम्मिलित रूपक नाम आनन्द तथा ज्ञान-इच्छा क्रियाक नाम चिदानन्द थिक। सारांश जे योनि चिदानन्दक आदि तथा सभ मेँ सरल प्रतीक थिक।[33]

य और ज अक्षरक स्वरूप साम्य प्रतीत होइछ। सम्भवतः एहि दुहु अक्षरक पूर्ववर्त्ती चित्र जौ (यव) छल जे एक लम्ब रेखा सँ दुइ भाग मे विभक्त भए य और जक प्रतीकक रूप मे संयोगक बोधक थिक जाहि सँ युग वा जोड़ाक उद्‌भव भेल। अशोक कालीन ब्रह्मीक जक मध्यक छोट वृत्त जे शून्यक आकार मे अछि ओहि सँ नेत्र-योनिक बोध होइछ। ई चन्द्रमाक एक गोट विशेषण थिक। कनिंघमक अनुसार[34] संस्कृतक योषा एवं जोषा शब्द जे स्त्रीक अर्थ मे प्रयुक्त होइछ, य वा योनि धातुए सँ निस्सृत भेल तथा तिब्बती "चोमो" वा "चो" शब्द जकर तात्पर्य स्त्री होइछ प्रायः अहि धातु सँ सम्बद्ध अछि।

च तथा छ अक्षर सेहो य एवं ज अक्षर सन जे दुइ भागक संयोगक प्रतीक थिक ठीक ओकरे विपरीत च आओर छ दुइ भागक पृथक्करणक प्रतीक रूप थिक जे चिर एवं छेद धातु सँ बहराएल। प्रथम सँ तँ "चीरावली" तथा "चीरा-बंद" शब्द बनल जकर तात्पर्य सुन्दरि युवती होइछ तथा दोसर सँ स्त्री प्रत्यान्त कतिपय शब्द जेना, चमर, छुरिका, छत्र तथा चाक इत्यादिक निर्माण भेल।

तेसर वर्ग मे ट, ठ, थ और ध शब्द अछि जे नेत्रक प्रतीक थिक। वृत्त नेत्रक सर्वप्रधान प्रतीक थिक। अतएव एहि तरहक प्रतीक प्रधानतः चक्रवत् होइछ। चक्र गतिक प्रतीक थिक जे स्वतः गतिशील भए समग्र सृष्टि मे ककरहु स्थिर नहि रहए दैछ।

---

३३ डॉ० जनार्दन मिश्र, भारतीय प्रतीक विद्या, पृ० २८७

३४ कोरपस् इन्सक्रीप्सन इन्डिकेरम, पृ० ५६

ओ सभ केँ विकासक माध्यम सँ परिणत वा परिपक्वावस्था मे लए पुनि ओकरा समेटि लैछ।[३५] चक्रक गति ग्रहक परिभ्रमण सँ उत्पन्न होइछ जे पुनर्गमनक प्रतीक थिक। चक्राकार परिभ्रमण रजोगुणात्मक प्रवृत्तिक प्रत्यक्ष प्रदर्शन थिक।[३६] नेत्रक सर्वोत्तम प्रतीक विन्द्वाकार वा विन्दु रहित चक्र थिक। विन्द्वाकार चक्र सँ ठ तथा विन्दु रहित सँ थक बोध होइछ। ठ सूर्यक चक्रकेँ तथा थ नेत्रकेँ प्रतिनिधित्व करैछ। ठ शब्द सँ ठक्कुर तथा थ सँ थारी बनल।

ट तथा ध अक्षर मे ट प्रकट अर्द्ध चक्र तथा ध व्यासक द्वारा संयुक्त अर्द्ध चक्र थिक। अर्धचन्द्र अमृत-तत्वक बोधक थिक जे शिवक माँथ पर देखाओल जाइछ। ट सँ टङ्कण शब्दक उद्भव भेल जकर अर्थ खनित्र होइछ। अशोकक अभिलेखक ट लिपि खनित्र सँ साम्य प्रतीत होइछ। ध अक्षर धनुषक प्रतिनिधित्व करैछ। अशोक कालीन ब्रह्मीक ध धृ धातु सँ सम्बद्ध अछि जाहि सँ धरा, धारिणी तथा धातृः शब्द बनल जकर तात्पर्य पृथ्वी, माँता तथा माँता भूमि थिक।

चारिम वर्गक प तथा ब अक्षर हाथ एवं पायरक प्रतीक थिक। एहि वर्गक अक्षरक स्वरूप वर्गाकार होइछ।। वर्ग पृथ्वीक प्रतीक थिक।[३७]

प अक्षर सँ सम्बन्धित शब्द पाणि (हाथ) तथा पाद (पायर) थिक जकर संग स्वभावतः पाँचक संख्या सम्बद्ध अछि। एहि अक्षरक मूल चित्ररूप पाँच आँगुर सँ युक्त ऊपर उठल हाथ थिक। कालान्तर मे मध्यक तीन गोट आँगुरक प्रचलन अवरूद्ध भए केवल अशोक कालीन ब्रह्मीक प अक्षर सन रहल। पश्चात पक्षीक पाँखि (पक्ष), पुष्प एवं पूजाक प्रतीकक रूप मे प्रयुक्त होइछ।

ब अक्षरक धातु रूप बास एवं बाड़ी थिक जे वर्गक आकारक होइछ। वर्ग पूर्णताक बोधक थिक। एहि सँ "चतुस्पाद"क सेहो तात्पर्य होइछ जे कृत, त्रेता, द्वापर एवं कलि-युग थिक। बक सम्बन्ध पृथ्वी सँ प्रतीत होइछ।

वर्ग पाँचमक म अक्षर मुँहक प्रतीक थिक। एहि अक्षरक स्वरूप बाओल मुँह थिक जकर चित्राक्षर रूप माँछ, मकर एवं मूँस छल।

विष्णुक दस अवतार मे सृष्टिक क्रमबद्ध विकासक विवरण अछि। आकाश, पवन एवं तेज सूक्ष्म तत्त्व थिक। स्थूल सृष्टि मे सर्वप्रथम जल तत्व अैछि जाहि सँ सर्वप्रथम जीवक विकास भेल। मत्स्यावतार ओकरहि प्रतीक थिक। मकर सँ विष्णुक कानक मकरक आकृतिक कुण्डल सँ तात्पर्य थिक जाहि सँ सांख्य एवं योगक बोध होइछ। मैथिलीक माकरी शब्द मकरहि सँ व्यवहृत भेल। मूँस गणेशक बाहन थिक। मूसक काज थिक

---

३५ डॉ० जनार्दन मिश्र, भारतीय प्रतीक विद्या, पृ० १७

३६ डाडिवल, हिन्दू पोलिथेइज्म, पृ० ३५२

३७ देवराज विद्यावाचस्पति, मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र, पृ० ३९०

वस्तुक अंग प्रत्यंग केँ कतरब जकर तात्पर्य विश्लेषण सँ अछि। एहि हेतु ओ मीमांसाक उपर्युक्त वस्तुस्वरूप विश्लेषण कारिणी बुद्धिक प्रतिनिधि प्रतीत होइछ।

वर्ग छठमक त, व, न, क और र अक्षर नाकक प्रतीक थिक। एहि अक्षर सभहक उद्भव मनुष्यक नासिकाक निम्न भाग सँ भेल जे त्रिकोणाकार आधारक विस्तृत रूप मे रहैछ।

त अक्षरक स्वरूपक उत्पत्ति तन् धातुरूप सँ भेल जकर अर्थ पसरब होइछ। एहि प्रतीकक उद्भवक प्रसंग मे कहल जाए सकैछ जे ई तालः, तारा, तरंग तथा तृ शब्द सँ भेल। व शब्दक आकृति वीणा सन प्रतीत होइछ जे सम्भवतः, वाहु, वेणु, बिन्दु तथा वीणा सँ सम्बद्ध छल। धनुष और वाणक बड़ पैघ सम्बन्ध रहैछ। धनुष सँ मस्तिष्कक बोध होइछ जे उन्मादन, तापन, शोषण, स्तम्भन तथा सम्मोहन एहि पाँच प्रकारक वाण केँ प्रेषित करैछ। न अक्षर प्रधानतः मनुष्यक नाकक चित्रक प्रतीकात्मक अक्षर थिक। न धातुक अर्थ नाक होइछ तथा एहि सँ नाक, नाश तथा नेमि आदि शब्दक उद्भव भेल। क अक्षरक चित्रात्मक रूप कटार थिक तथा एहि सँ काँटी, कील तथा काल शब्दक उत्पत्ति भेल। र अक्षरक स्वरूप अशोकक अभिलेख मे या तँ सरल रेखाक रूप मे अछि वा किछु वक्राकार रूप मे अछि। प्राय: एहि अक्षरक प्रारम्भिक रूप नितान्त क्षीण रहल होयत जे रश्मि शब्द सँ प्रतीत होइछ तथा एहि अक्षर सँ रेखा, रजु तथा रथ शब्दक उद्भव भेल।

वर्ग सातमक ल और ह अक्षर लिंगक प्रतीक थिक। अशोकक अभिलेख मे एहि दुहु अक्षर मे बड़ समता अछि। ल अक्षर पुरुष लिङ्गक तथा ह हाथीक सूँढ़क चित्रसन अछि। लिङ्ग शब्दक प्रयोग चेन्ह, अनुमान, सांख्यक प्रकृति, शिवक एक प्रकारक मूर्त्ति तथा शिशनक अर्थ मे होइछ। तन्त्रालोक सँ लिङ्ग शब्द सँ सृष्टि तथा संहारक कारणक ज्ञान होइछ। ल सँ लय तथा ग सँ आगमन अर्थात् विकासक बोध भेला सन्ता ई सृष्टिक अव्यय पदक बोधक थिक।[३७*] ल अक्षर सँ लाँगल तथा लंगरक उत्पत्ति भेल। ह अक्षर हरक प्रतीक थिक तथा हाथीक सूड़क आकार मे भेला सन्ता हस्त, हस्ती इत्यादि शब्द एहि अक्षर सँ निस्तृत भेल।

वर्ग आठमक श तथा स अक्षर कानक प्रतीक थिक। संस्कृतकोष मे श सँ प्रारम्भ शब्दक श्रव, श्रुति तथा श्रोता आदि शब्द श्रु धातु सँ बनल जकर अर्थ सुनब होइछ। जे किछु सुनल जाइछ ओकरा शब्द कहल जाइछ तथा तत्व जे सर्वाधिक शब्द उत्पन्न करैछ ओ जल वा सर थिक। अतः एहि सँ सर एवं सरित शब्दक उद्भव भेल। स अक्षरक चित्रात्मक आकृति सर्प थिक।

षक प्रसंग मे याज्ञवल्क्यक कथन थिक जे उत्तर-भारत में यजुर्वेदी संहिता पाठ मे

३७* आह्निक ४, कारिका १३१

टवर्गक संगक संयोग कें छोड़ि सर्वत्र ष कें ख कहल जाइछ जेना षष्ठी कें खष्ठी, वर्षा कें बर्खा इत्यादि[३८]। अतएव मिथिलाक्षर मे यद्यपि ष अछि किन्तु ओकर पूर्वक चित्राक्षर प्रायः नहि छल।

अशोकक अभिलेख मे स्वर वर्णक—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, तथा व्यञ्जन वर्णक क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह् पाओल जाइछ। एहि वर्ण मे सँ कतिपय वर्णक रूप चित्राक्षार मे नहि पाओल जाइछ जकर उद्भव पश्चात भेल। स्वर वर्णक चित्राकृतिक प्रसंग मे कनिंघमक विचार छनि जे ई सभ अक्षरक उद्भव पश्चातक विषय थिक। अतएव एहि अक्षर सभहक आकृतिक रूप चित्रात्मक नहि छल।[३९] सम्भवतः स्वर वर्णक उद्भव वैदिक यज्ञ एवं तान्त्रिक प्रक्रिया मे व्यवहृत मन्त्र एवं मण्डल सँ भेल। अ अक्षर ॐकारक प्रतीक थिक। ॐकार शब्दक दू गोट रूप समस्त और व्यस्त अछि। समस्त रूप मे ई ब्रह्म वा परा-शक्तिक वाचक थिक तथा अर्द्धमात्रा समेत ॐ ब्रह्मक वाच्य तथा वाचक दुहु थिक। अर्द्ध-मात्रा सहित ॐ शब्द ब्रह्मक प्रत्यक्ष रूप भेला सन्ता एहि मे तथा परब्रह्म मे कोनो टा भेद नहि रखैछ।

ॐकार, अकारादि वर्णक द्वारा त्रयी तीन वृत्ति (जाग्रत, स्वप्न आओर सुषुप्ति) त्रिभुवन तथा त्रिदेवक रूप मे अपन व्याकृत रूपक बोध करबैछ। यज्ञ सूत्रक तीन सूत्रक गोलाकार त्रिगुणात्मिका प्रकृति एवं ॐकारक प्रतीक थिक। ॐकारक नाम वर्तुल अर्थात् गोल थिक।[४०] ई, ऋ, उ, म, सत्व-रज-तम, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ऋक्-यजुः-साम इत्यादिक प्रतिरूप थिक। आ शब्द अ शब्द सँ निस्सृत भेल अछि। ई आत्मन् शब्दक प्रतीक थिक जे अत् धातुक रूप थिक। अत्क अर्थ थिक सतत गमन अर्थात् जे स्वतः गतिशील भए तथा जकर संसर्ग सँ वस्तुमात्र गतिशील बनि जाए। इ अक्षरक आकृति अशोकक ब्रह्मी मे तीन गोट बिन्दु रूप मे अछि। इ बिन्दुत्रयात्मक सँ त्रिलिङ्ग (स्वयंभू, बाण, इतर), श्वेत, रक्त तथा मिश्रित वर्णक बोध कए स्वतः त्रिकाल, त्रिलोक, त्रिवेद एवं त्रिपुरा रूप मे थिक। उ अक्षर सँ ॐ हिक बोध होइछ, ए शब्द त्रिकोणक प्रतीक थिक जाहि सँ शून्यस्थ, भग वा गुप्त मण्डलक बोध होइछ। एकर तीन कोण इच्छा ज्ञान तथा क्रिया थिक। ब्रह्मी मे ऐ और औ अक्षर नहि पाओल जाइछ तथा ओ अक्षर सँ ॐ हिक बोध होइछ।

अशोक कालीन ब्रह्मी अक्षरक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे ब्रह्मीक स्वर वर्ण

३८ पं० ओझा, भा० प्रा० लि०, पृ० ४६

३९ ए० कनिंघम, कोरपस ई० ई०, भाग १, पृ० ६०

४० ॐकारो वर्तुलस्तारो मन्त्राद्यः प्रणवो ध्रुवः मातृकाकोष।

व्याकरणक वृद्धि एवं गुणकक सन्धि नियम सँ पूर्णतः अनुप्रेरित अछि।

ब्राह्मीक अ, इ ओर उ प्रधान स्वर वर्ण थिक जकरा सँ आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ तथा अं स्वर वर्ण बनल।[४१]

अशोकक पूर्वक ब्राह्मी वर्णक नमूना चित्र संख्या ६क मोहरक चित्राक्षर मे पाओल जाइछ जे मेजर क्लार्क केँ हरप्पाक उत्खनन मे प्राप्त भेल छल।[४२] डॉ० कनिंघम एहि मोहरक लिपि केँ ब्राह्मी लिपिक सहायता सँ 'लच्छमीय' (चित्र सं० ७) शब्द पढ़लनि अछि।[४३] एहि मोहरक लिपि प्रतीकात्मक थिक।



चित्र सं० ७

हरप्पा मे प्राप्त चित्रलिपि केँ आधार मानि डॉ० बी० बी० लाल भारतक विभिन्न भाग सँ उत्खनन मे प्राप्त प्रागैतिहासिक कालक पँघ-पँघ पाथर (मेगालिथ्स) आदि पुरातत्व सामग्री मे चित्रित संकेत एवं चित्र केँ हरप्पाक चित्रलिपि सँ मिलान कएलनि अछि[४४] तथा ओकर कतिपय चित्राक्षर केँ ब्राह्मीक अक्षर सँ समता देखौलनि अछि। ओ अपन लेखक चित्र संख्या १क प्रतीक संख्या प्रथमक अक्षर ब्राह्मीक ग, चित्र संख्या २क प्रतीक संख्या दोसर त, चित्र संख्या ३० अक प्रतीक संख्या ४६क अक्षर श, चित्र संख्या ३२, ४क प्रतीक संख्या ५१क अक्षर ब्राह्मीक म इत्यादि कतिपय अक्षरक अतिरिक्त वृक्ष, मण्डल, चक्र, सूर्य आदिक चित्रात्मक प्रतीकक मिलान हरप्पाक प्रतीकात्मक चेह्न सँ सेहो कएलनि अछि। एहि तथ्यक आधार पर प्रश्न अछि जे आर्यक आक्रमणक उपरान्त सिन्धु घाटीक निवासी आखिर गेलाह कतए ?

४१ सी० एस० उपासक, दि हिस्ट्री एण्ड पैलियोग्राफी आफ मौर्यन ब्रह्मी स्क्रीप्ट, पृ० १५
४२ कनिंघम, आ० स० आफ ई०, भाग ५, पृ० १०८
४३ कनिंघम, को० ई० ई, भाग १, पृ० ६१
४४ एन्सिएन्ट इन्डिया, भाग १६, पृ० ४-२४

उपर्युक्त प्रश्नक समाधान लोथल तथा रंगपुरक उत्खनन मे प्राप्त पुरातत्वक सामग्री सँ होइछ। एहि सामग्रीक आधार सँ निस्तृत होइछ जे सिन्धुघाटीक निवासी अपन क्रमिक इतिहासक संग अपन अस्तित्व केँ बनौने रहलाह जकर पुष्टि गुजरात एवं दक्षिण बिहारक सोनितपुरक उत्खनन मे प्राप्त पुरातत्वक सामग्री सँ होइछ। उत्तर बिहारक चिराण्दक उत्खनन तँ मिथिलाक कोन कथा भारतीय इतिहास मे एक पैघ मोर अनैत अछि जाहि सँ पुष्ट होइछ जे शतपथब्राह्मणक समय धरि (१००० ई० पूर्व) समग्र भारत मे एक पैघ संस्कृति व्याप्त छल तथा सभ भागक निवासी केँ पारस्परिक आदान-प्रदान होइत रहैत छलैक।

जहाँ धरि लिपिक समस्याक प्रश्न अछि जे अशोक कालीन ब्रह्मीक पूर्वक कोनो सिलसिलेवार लिपि किएक नहि उपलब्ध होइछ? यद्यपि एहि प्रश्नक उत्तर किछु कठिन बुझना जाइछ तथापि ई तँ निर्विवाद थिक जे ऋग्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण एवं उपनिषद सन ग्रन्थक निर्माण बिना लिपिक नहि भए सकैत छल। तदुपरान्त इहो सत्य जे गंगा एवं ओकर सहायक नदीक माटि सँ निर्मित मिथिलाक भूमि सतत कोशी, कमला, गंडक आदिक बाढ़ि सँ अपन पूर्वक कलेवर केँ नवीन रूप मे बदलैत रहलीह अछि। एहि परिस्थिति मे ऐतिहासिक अवशेष केँ एक तँ ताकबे बेजाए और जँ कतहु किछु बाँचलो अछि तँ ओकर अन्वेषण भेल कहिया?

अतएव कोनो वस्तुक ज्ञानक अभाव मे ओकर अस्तित्व केँ नहि मानव अनुचित थिक जखन कि अशोकक पूर्वक लिपि कतिपय स्थान मे उपलब्ध भेल अछि।

एहि संदर्भ मे डॉ० डी० आर० भण्डारकर चित्र संख्या ८क अभिलेखक लिपि केँ नवप्रस्तर युगीन लिपि कहैत छथि तथा एहि अभिलेखक अन्तिम अक्षर केँ ब्रह्मीक म, दोसर केँ त तथा मध्यक अक्षर केँ ओ अ पढ़लनि अछि।[४५]

ई अभिलेख राँची सँ प्राप्त भेल अछि तथा एहि प्रसंग मे वड़ वाद-विवाद अछि। एहि अभिलेखक लिपि केँ किछु गोटा तँ अशोक कालक और किछु हालक मानैत छथि।[४६] किन्तु एवंक्रमक विचारक आधार मात्र कल्पना एवं अन्दाज थिक। जखन सिन्धुघाटीक सभ्यताक समकालीन एक पैघ सभ्यता, नाग, असुर, कीकट, व्रात्य आदि नामे सम्पूर्ण बिहार मे व्याप्त छल जकर समता सिन्धुघाटीक सभ्यता सँ कएल जाइछ तखन एहि अभिलेखक लिपि केँ ओहि युगक नहि मानब नितान्त भ्रामक थिक। अतएव अवश्ये एहि अभिलेखक लिपि नवप्रस्तर युगीन थिक जे १५०० ई० पूर्व सँ कमक कथमपि नहि भए सकैछ।

राँची नवप्रस्तर युगीन लिपिक अतिरिक्त अशोकक पूर्वक लिपि मे एखन धरि दूइ गोट छोट-छोट शिला लेख उपलब्ध भेल अछि। अहि मे सँ एक गोट तँ अजमेर जिलाक बड़ली ग्राम मे प्राप्त भेल तथा दोसर नेपाल तराईक पिप्रवा नामक स्थानक एक स्तूपक भीतर सँ प्राप्त एक पात्र पर जाहि मे भगवान बुद्धक अस्थि (राख) छल अंकित अछि।

४५ सर आशुतोष मुखर्जी सि० जु० अंक, भाग, ३ (१), पृ० ४९४, ५१४
४६ ज० बि० रि० सो०, भाग ९, पृ० २७२

बड़ली अभिलेख तँ एक स्तंभ पर अंकित लेखक एक गोट भाग थिक जकर पहिल पाँति मे 'वीराय भगवत' आओर दोसर मे 'चतुरा सितिवस' अंकित अछि। एहि अभिलेखक लिपि एवं अशोक कालीन ब्रह्मी लिपि दुहु एके थिक।



चित्र सं० ८

पं० हिराचन्द गौरीचन्द ओझाक अनुसार ई अभिलेख ४४३ ई० पूर्वक थिक।[४७] एहि अभिलेखक लिपि अशोकक अभिलेखक लिपि सँ पूर्वक थिक किएक तँ ओहि महक 'वीरायक' 'वी' अक्षर रूप मे अछि। एहि महक 'वी' मे जे ईक मात्राक चेह्न अछि ओ ने तँ अशोकक अभिलेखमे वा ने ओहि सँ पश्चातक अभिलेखक लिपि मे पाओल जाइछ। अशोकक समय मे उपर्युक्त चेह्नक स्थान मे नव प्रकारक चेह्न प्रयुक्त होमय

४७ भारतीय प्रा० लिपिमाला, पृ० ३

लागल छल।[४८] पिप्रवा लेख सँ ज्ञात होइछ जे शाक्य जातिक लोक भगवान बुद्धक अवशेष केँ ओहि स्तूप मे रखने छलाह जकरा ४८३ ई० पूर्वक मानल जाइछ।[४९]

पिप्रवा अभिलेख मे ३७ गोट अक्षर अछि जे अशोकक अभिलेखक अक्षर सँ पूर्णतः साम्य अछि। अक्षरक कुटिलता सेहो पाओल जाइछ।

सोहगोड़ाक ताम्रपत्र अभिलेख मे ७२ अक्षर अछि जे अशोकक अभिलेखक लिपि सँ साम्य अछि। डॉ० के० पी० जयसवालक अनुसार ई अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्यक समयक थिक। एहि अभिलेखक लिपि किछु तँ सोझ और किछु कुटिल रूप मे पाओल जाइछ।

अशोकक पूर्वक ब्रह्मी अक्षर कतिपय आनो आन अभिलेख मे पाओल जाइछ। एहि तरहक अभिलेख मे ऐरण मुद्रा अभिलेखक लिपि[५०] तक्षशिला मुद्रा लिपि[५१] महास्थान प्रस्तर अभिलेखक लिपि,[५२] इत्यादि प्रमुख अछि। एहि प्रसंग मे पटनाक मोहर[५३] नितान्त महत्त्वपूर्ण अछि। ई मोहर मौर्य सँ पूर्वक थिक। प्रथम मोहर पर नंदय अर्थात् 'नंदक मोहर' अंकित अछि जाहि मे द दहिन दिशि अछि। दोसर मोहरक लेख 'अगपलश' महक अ अपन मूल रूप मे अछि।

एरणक मुद्रा अभिलेख उलटा पाओल जाइछ जकरा बूलर दहिन सँ बाँम दिशि लिखबाक कल्पना करैत छथि जे पूर्णतः भ्रामक थिक। वर्त्तमान मिथिलाक्षर मे च, ड, द, न, व आदि अक्षर अशोकक ब्रह्मी अक्षरक उनटल रूप थिक। एहि तरहक अक्षरक आकृति देश-भेदक अनुसार होइत छल।

उपर्युक्त तथ्य सँ निस्सृत होइछ जे ब्रह्मी लिपिक व्यापकताक निमत्तहि अशोक अपन आदेश-लेखन मे एहि लिपिक प्रयोग कएलनि जकरा अपन-अपन स्थानीय भेद तँ अछि किन्तु ओहि मे बड़ समता पाओल जाइछ। वस्तुतः महाभारतक पश्चातक भारतीय इतिहास मगधक इतिहास थिक। अतएव अत्यन्त प्राचीन कालहि सँ उत्तर भारत मे एक सार्वदेशिक भाषा एवं लिपिक विकास भए रहल छल जे वैदिक भाषा एवं लिपि सँ उद्‌भूत एवं लौकिक संस्कृति सँ समन्वित छल। अशोकक अभिलेखक भाषा एवं ब्रह्मी लिपि प्रधानतः विदेहक लिपि एवं भाषा छल जकरा अशोक अपन विशाल साम्राज्यक प्रशासनक निमित्त एकसूत्रीय सार्वदेशिक भाषा एवं लिपि मे जोड़बाक हेतु अपन आदेश लेख केँ पाटलिपुत्र सँ जारी कएल जे ओहि युग मे साम्राज्यक राजधानी छल। फलतः ओहि युगक लिपि जे मिथिलाक्षरक पूर्ववर्त्ती रूप छल अपन मौलिक रूप मे सुदूर प्रान्त एवं देश मे प्रयुक्त कएल गेल। ओहि

४८ ओपह, पृ० ३
४९ ज० रॉ० ए० सो०, १८९८, पृ० ३८९
५० कनिंघम, एनसिएन्ट क्वाइन्स ऑफ इन्डिया, पृ० १०१
५१ इन्डियन एन्टिक्वेरी, भाग ३३, पृ० ८
५२ इन्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टर्ली, १९३४, पृ० ५०
५३ कनिंघम, आ० स० रि०, भा० १५, ३, १·२

युगक ब्रह्मीक अक्षर मे जे किछु स्थानीय भेद परिलक्षित होइछ ओकर कारण थिक जे पाटलिपुत्र मे अभिलेखक प्रारूपक निर्माणक उपरान्त ओ विविध प्रान्त मे पठाओल जाइत छल जकरा स्थानीय अधिकारी प्रस्तर पर लिखबाए जारी करबैत छलाह।[५४] अतएव अशोकक आदेशक लिपि मे प्रधानतः दुई गोट भेद—(१) उत्तरी तथा (२) दक्षिणी ब्रह्मीक रूप मे पाओल जाइछ। विन्ध्य वा नर्मदा सतत विभाजनक कार्य कएलक। दक्षिणी ब्रह्मी गिरनार एवं शिद्धापुरक अभिलेख मे सभ सँ अधिक तथा धौली आओर जौगढ़क आदेश लेख मे कम रूप मे पाओल जाइछ।

उत्तरी ब्रह्मी मे सेहो लिखबाक रूप सतत एकहि रंगक नहि अछि। प्रयाग, मठिया निग्लीव, पडेरिया, रधिया एवं रमपुरबाक स्तंभक लिपि मे परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध पाओल जाइछ। ससराम, बराबर तथा साँचीक अभिलेखहु मे कोनो विशेष अन्तर तँ नहि अछि किन्तु धौली, दिल्ली, मेरठ तथा प्रयागक आदेश लेख मे किछु अन्तर अछि। एहि अभिलेख मे कतिपय अक्षरक कोणीय रूप पाओल जाइछ तथा कालसीक चट्टान-आदेश लिपि मे एक पृथक विशेषता पाओल जाइछ। अतएव अशोक कालीन उत्तरी ब्रह्मी लिपिहुक तीन—(१) उत्तरी पूर्वी, (२) उत्तरी मध्य तथा (३) उत्तरी पच्छिमी भाग छल। एहि महक उत्तरी-पूर्वी भाग तँ अपन क्रमिक विकासक संग अपन प्राचीन रूप केँ धएने रहल जकर परिवर्त्तित रूप आधुनिक मिथिलाक्षर थिक और उत्तरी मध्य तथा उत्तरी पश्चिमी मौर्य-कालीन ब्रह्मी सँ आधुनिक देवनागरी, गुजराती, गुरुमुखी आदि लिपिक उद्भव भेल।

उपर्युक्त तथ्यक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे अशोकक समय मे एकहि लिपि समग्र भारतवर्ष मे तँ प्रचलित छल किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकारक लिखबाक शैलीक कारणे ओहि मे क्षेत्रीयताक रूप तखनहि उभरि गेल छल जे पश्चात क्षेत्रीय लिपि सभहक उद्भव स्रोत बनल।

अशोकक विविध अभिलेख मे प्राप्त एकहि अक्षरक भिन्न-भिन्न रूप केँ मिथिलाक्षरक संग तुलनात्मक अध्ययन कएला सँ प्रतीत होइछ जे ओहि कालक उत्तरी ब्रह्मीक पूर्वी भागक

५४ मौर्यकाल मे प्रस्तर-अभिलेख प्रधानतः पहिने तँ लिपिकर वा दिपिकर द्वारा तैयार कएल जाइत छल और तत्पश्चात ओहि अभिलेखक लिपि केँ खुननिहार प्रस्तर पर खुनैत छल। एहि खुननिहारक निमित्त छिन्दति शब्दक प्रयोग पाओल जाइछ। अशोक कालीन एकहि अक्षरक जे विविध भेद पाओल जाइछ ओकर कारण खुननिहारे छल जकरा पर स्थानीय प्रभाव छलैक।

खुननिहार प्रायः अपढ़ होइत छल। अतएव अभिलेख केँ प्रस्तर पर खोदलाक उपरान्त पुनः शुद्ध कएल जाइत छलैक। अशोकक कतिपय अभिलेख मे पश्चात अक्षर जोड़बाक स्पष्ट प्रमाण परिलक्षित होइछ। कहुखन खुननिहारक दोष सँ लिपि बनटल-पुनटल भए जाइत छलैक जे एरण शिलाक अभिलेख, येर्रगुदी अभिलेख (एन्युएल रिपोर्ट, आ० स० आफ इन्डिया, १९२८-९, पृ० १७१-७) तथा सिलोनक कतिपय अभिलेख मे एहि तरहक भ्रम पाओल जाइछ।

अपन पृथक विशेषता छल जकर अक्षर प्रयाग, रधिया, मठिया रमपुरवा, निग्लीव, पडोरिया तथा सारनाथक अभिलेख मे उपलब्ध होइछ तथा अशोक कालक ब्रह्मी प्रधानतः कोणीय, कुटिल तथा मिश्रित रूप मे विभक्त छल। एहि तरहक अक्षरक आकृति बोधगया अभिलेखक[५४*] ख, ण, च, य, ल, स तथा ह अक्षर मे मुख्यतः पाओल जाइछ जे आधुनिक मिथिलाक्षर सँ पूर्णतः साम्य अछि।

एवंक्रमें अशोकक कालहि सँ ब्रह्मीक उत्तरी-पूर्वी रूप अपन पृथक विशिष्टताक संग प्रगतिक दिशि अग्रसर होइत अपन पूर्वक रूप केँ पकड़ने रहल जकर पूर्ण विकास गुप्त साम्राज्य काल मे भेल।

ईसाक चारीम तथा पाँचम शताब्दीक अभिलेखक लिपि केँ सामान्यतः गुप्त लिपि कहल जाइछ। हार्नलीक अनुसार[५५] एहि अक्षरक दुइ गोट—पूर्वी तथा पश्चिमी—भेद अछि। एहि भेद मे अन्तर ल, ष तथा ह अक्षर मे उपलब्ध अछि। पूर्वी भेद मे लक बाँम भाग नीचाँ दिशि झुकैछ। ष अक्षरक आधारक रेखा गोल कएल गेल तथा मध्यक नीचाँ भाग झुकैत टेढ़ डंटा मे एक फंदा सन जोड़ि देल गेल अछि। ह अक्षरक आधारक रेखा दबा देल गेल अछि तथा ठाढ़ रेखा मे जोड़लहुक बाँम भाग मे पूर्णतः घुमा देल गेल अछि। पश्चिमी भेद मे एहि तीनू अक्षरक प्रयोग और अधिक पूर्ण रूपे प्रचलित छल।

गुप्तलिपिक पूर्वी विभेदक नमूना हरिषेणक प्रयाग-प्रशस्ति तथा कहाँव-प्रशस्ति मे पाओल जाइछ। अवश्ये प्रयाग-प्रशस्ति समुद्रगुप्तक राजत्वकाल मे, संभवतः ३७० ई० तथा ३९०क मध्य मे खुनल गेल होयत आओर कहाँव-प्रशस्ति स्कंदगुप्तक शासनकाल मे अर्थात् सन् ४६० ई० मे खुनल गेल छल। फ्लीटक अभिलेख संख्या ६ जे मालवा मे भिलसाक निकट पाओल जाइछ पूर्वी लिपिक बोध करबैछ। एहि अभिलेखक लेखक चन्द्रगुप्त द्वितीयक एक मंत्री थिकाह जे अपन स्वामीक संग मालवाक अभियान मे गेल छलाह तथा अपना केँ ओ पाटलिपुत्रक निवासी कहैत छथि।[५६] अतएव एहि अभिलेखक लिपि मिथिलाक्षर थिक।

एवंक्रमें गुप्तकाल मे उत्तरी अभिलेख मे पूर्वी एवं पश्चिमी भारत दुहु क्षेत्र मे एक नव विकासक आरम्भ भेल जकर पूर्ण प्रभाव सर्वप्रथम ५८८-९क गया अभिलेख तथा लक्खामंडल प्रशस्तिक अक्षरक आकृति पर पाओल जाइछ। एहि रूपक मुख्य विशेषता ई थिक जे एहि महक अक्षर दहिन सँ बाँम भाग में झुकैत अछि। नीचाँ मे दहिन दिशि अन्त मे एक न्यून कोण बनैत अछि। अक्षर ठाढ़ वा तिरछी रेखाक सिरोभाग पर सर्वदा एक गोट छोट डारि बनैत अछि। एकर अन्तहु दिशि शैल-प्रबर्ध बनैत अछि। अन्तिमक प्रायः चारि-पाँच शताब्दीक अभिलेख मे एवंक्रमक विशेषता पाओल जाइछ। जार्ज

५४* कनिंघम, महाबोधि, फलक १०, संख्या ९ तथा १०

५५ ज० ए० सो० बं०, भाग ६०, पृ० ८०, इ० ए०, २१, पृ० २९

५६ जार्ज बूलर, भा० पु० शा०, हिन्दी अनुवाद, मंगल नाथ सिंह, पृ० ९७५

बूलर[५७] एहि वर्गक लिपि केँ न्यूनकोणीय अक्षर कहलनि अछि तथा फ्लीट गया अभिलेखक संपादन मे मात्र ऐतबेक लिखि संतोष कएलनि जे अक्षर उत्तरी वर्गक थिक[५८] जे पूर्णतः आधुनिक मिथिलाक्षर थिक।

सन् ६३५क अंशुवर्माक अभिलेख तथा ओकर प्रायः समकालिक आदित्य सेनक अफसद प्रशस्तिक अक्षर मिथिलाक्षरक आधुनिक विकासक द्योतक थिक। अंशुवर्माक अभिलेख तथा तत्कालीन अन्य नेपाली लेख मे षक गोल रूप पाओल जाइछ जे मिथिलाक्षरे थिक। अफसद प्रशस्ति सँ सम्बद्ध लेखक लिपि केँ फ्लीट[५९] सातम शताब्दीक मगधक कुटिल-भेद कहैत छथि जे नितान्त भ्रामक थिक। कुटिल अक्षर सँ तात्पर्य थिक ओहि अक्षर सँ जे कठिनाई सँ पढ़ल जाए। एहि अक्षरक एवंक्रमक नाम प्रायः ओकर वर्ण एवं विशेषतः मात्राक कुटिल आकृतिक कारण पड़ल। कुटिल लिपि मे अक्षरक ठाढ़ रेखा नीचाँ दिशि बाँम भाग मे झुकल रहैछ तथा स्वरक मात्रा अधिक टेढ़ रहैछ। अतएव एहि अक्षरक नामकरण कुटिल भेल। एहि लिपिक अक्षरक सिरोभाग पर छोट सन डाँरि रहैछ तथा अ, आ, घ, प, म, य, ष, तथा सक ऊपरक अंश दू भाग सँ युक्त रहैछ तथा प्रत्येकक सिरोभाग संयुक्त रहैछ।

देवल अभिलेख मे 'कुटिलाक्षराणि'[५९] तथा विक्रमांकदेवचरित मे 'कुटिल लिपि'[६०] वाक्य पाओल जाइछ जे अक्षर तथा लिपिक विशेषण थिक। मेवाड़क गुहिल वंशी राजा अपराजितक समयक (ई० सन् ६६१क) प्रशस्तिक अक्षर केँ 'विकटाक्षर'[६१] कहल गेल अछि तथा अफसदक अभिलेख मे 'विकटाक्षराणि' शब्द पाओल जाइछ।[६२] एहि सँ प्रतीत होइछ जे 'विकट' तथा 'कुटिल' दुहु पर्यायवाची शब्द थिक जे अक्षरक आकृतिक निमित्त प्रयुक्त भेल अछि।

कुटिलाक्षरक लिपि मंदसोर सँ प्राप्त राजा यशोधर्मक लेख[६३], नेपालक अंशुवर्माक लेख,[६४] मगधक गुप्तवंशी आदित्यसेन[६५] एवं जीवित गुप्त द्वितीयक लेख[६६] आदि कतिपय लेख मे पाओल जाइछ जकर प्रचलन ई० सन्‌क छठम सँ ९वम शताब्दी धरि समग्र उत्तर-पूर्वी भारत मे छल।

---

५७ भा० पु० शा०, अनुवादक मंगलनाथ सिंह, पृ० १०२
५८ गुप्त ई० पृ० २७४
५९ ए० ई०, भाग १, पृ० ८१
६० १८-४२
६१ ए० ई०, भा० ४, पृ० ३२
६२ फ्लीट, गु० ई०, पृ० २००
६३ ओएह, पृ० १५०
६४ ए० ई०, भा० १४, पृ० ९८
६५ फ्लीट गु० ई०, पृ० २००; २०८; २११
६६ ओएह पृ० २१३

आदित्य सेनक तीन गोट अभिलेख प्राप्त भेल अछि। एहि अभिलेख मे सँ केवल शाहपुर अभिलेखक[६७] रचनाकाल ई० सन् ६७२ देल गेल अछि। एहि अभिलेख मे आदित्य सेनक वंशावली देल गेल अछि। ओ गुप्तवंशक माधव गुप्तक बालक छलाह। देववर्नाकं अभिलेखक अनुसार[६८] आदित्यसेनक पुत्र देवगुप्त, देवगुप्तक पुत्र विष्णुगुप्त तथा विष्णु-गुप्तक पुत्र जीवितगुप्त द्वितीय छलाह जनिकर ओ प्रशस्ति थिक।

जीवितगुप्तक देववर्नाकं अभिलेखक स्वर वर्णक लिपिक प्रारम्भिक रूप एवं क, ग, च, ज, ट, ठ, ड, थ, ध, भ, म, य, तथा ह अक्षरक आकृति मे तँ कोनो परिवर्त्तन नहि परिलक्षित होइछ किन्तु बाँकी अक्षरक आकृति मे पूर्णतः परिवर्त्तन परिलक्षित होइछ।

जीवितगुप्त द्वितीयक पश्चात गौड़, मगध एवं बंग मे किओ प्रबल शासक नहि भेलाह। फलतः राज्य-भार गोपाल प्रथमक ऊपर आएल। डॉ० मजुमदारक अनुसार गोपाल प्रथमक राजत्वकाल ७९०-९५ ई० एवं ७५०-७७० ई०क अवधि काल मे छल।[६९]

उपर्युक्त तथ्य सँ सम्बद्ध बंगालक कुलीन प्रथाक पादुर्भावक इतिहास बड़ महत्वक अछि। धुर्वानन्द मिश्रक महावंश वा मिश्रग्रन्थ तथा राढ़ी-कुलमञ्जरीक अनुसार बंगाल मे कुलीन प्रथाक प्रवर्त्तक राजा आदिसुर छलाह जनिकर राजत्वकाल ७३२ ई० मे प्रारम्भ भेल तथा ओ बंगाल मे वैदिक ब्राह्मण कें ७४६ ई० मे अनलनि।[७०]

भारतीय इतिहास मे एखन धरि सूर वंशक कोनो पता केवल दू-तीन नामक अतिरिक्त नहि अछि। अतः प्रतीत होइछ जे आदिसुर, क्षितिसुर, तथा क्षितिसुरक वंशज महिसुर, धरासुर आदि उपनाम स्वरूप थिक तथा आदिसुर सँ तात्पर्य गुप्तवंशक आदित्य सेन सँ अछि जनिकर काल सन् ६७२ ई० शाहपुर प्रशस्ति मे देल गेल अछि। अतएव कुलाचार सँ सम्बद्ध ग्रन्थक अनुसार आदिसुरक राजत्वकाल ७३२ ई० थिक जे अनुश्रुतिक आधार पर अछि। एहि प्रसंग मे उल्लिखित अछि जे क्षितिसुर वत्स, सावर्ण, भारद्वाज, शांडिल्य तथा कश्यप गोत्रक ५६ टा ब्राह्मण कें ५६ ग्राम दान देलथिन जनिका ओ अपन संग अपन प्रश्रयक अवधि मे राधा अनलथिन।[७१] सम्भवतः आदिसुरक उपर्युक्त राजत्वकाल ७३२ ई० क्षिति-सुरहिक राजत्वक अवधि हो जे पश्चात अनुश्रुति मे आदिसुरक नाम सँ कौलाचारक ग्रन्थ मध्य सन्निहित कएल गेल।

अनुश्रुतिक अनुसार आदिसुर कान्यकुब्ज सँ बंगाल मे ब्राह्मण कें अनलनि जे ओतएक कुलीन ब्राह्मणक पूर्वज छलाह। एहि प्रसंग मे डॉ० डी० सी० सरकारक[७२]

६७ ओएह, पृ० २०८
६८ ओएह, पृ० २१७
६९ इन्डियन कल्चर, भा० १४, अं ४, पृ० १७४
७० ओएह
७१ ओएह, पृ० १७६
७२ स्टडीज इन सोसाइटी एण्ड एडमिनिस्ट्रेसन ऑफ एन्सिएन्ट एण्ड मेडिएवल इन्डिया, भाग १, पृ १२

कहब छनि जे बंगालक ब्राह्मणक मूल एवं मैथिल ब्राह्मणक मूल ततेक ने साम्य अछि जे ओ एहि दुहुक एकत्वक द्योतक थिक। मैथिल ब्राह्मणक पलिवार गंगौली मूलहि सँ बंगालक ब्राह्मणक गाणी वा गांगुली मूलक उद्भव भेल तथा एहि सँ गंगोपाध्याय शब्दक उत्पत्ति भेल।

एहि प्रसंग मे निम्नलिखित प्रश्नक समाधान बड़ आवश्यक प्रतीत होइछ :—

(१) यद्यपि बंगालक इतिहास मे सूर राजवंशक अस्तित्व अछि किन्तु आदिसुरक चर्चा वाचस्पति मिश्रक न्यायकणिकाक अतिरिक्त कतहु अन्यत्र नहि पाओल जाइछ। डॉ० डी० सी० सरकारक अनुसार[७३] आदिसुर पाल राजाक अधिनस्थ मिथिलाक एक गोट छोट शासक छलाह। किन्तु मिथिलाक इतिहास मे एखनधरि कतहु अन्यत्र आदिसुरक उल्लेख नहि उपलब्ध भेल अछि। एकर अतिरिक्त बंगालक किछु कुलपंञ्जीक अनुसार आदिसुरक राजधानी गौड़ मे छल तथा ओ बंगाल एवं उड़ीसाक राजा छलाह एवं किछु कुलाचार सँ सम्बद्ध ग्रन्थक अनुसार आदिसुरक आधिपत्य बंगालक अतिरिक्त अंग, कलिंग, कर्णाट, केरल, कामरूप, सौराष्ट्र, मगध, मालवा तथा गुजरात पर छल और हुनकर राजधानी पूर्व बंगालक विक्रमपुरी मे छलनि।[७४] विक्रमपुरी भागलपुरक प्रसिद्ध विक्रमशिला छल जकर चर्चा राजधानीक रूप मे कतिपय ताम्रपत्र एवं शिलालेख मे पाओल जाइछ। स्वतः आदित्य सेनक अभिलेख एहि भाग मे प्राप्त भेल अछि।

कुल पञ्जीकाक उपर्युक्त वर्णन मे यद्यपि तथ्य केँ विस्तारक संग उल्लेख कएल गेल अछि जे मुख्यतः अनुश्रुतिक आधार पर आधारित अछि तथापि एहि सँ निस्सृत होइछ जे आदिसुर कोनो प्रख्यात राजाक उपनाम स्वरूप थिक जनिकर प्रावल्य कम सँ कम बिहार एवं बंगाल मे अवश्य छल। मिथिलाक अनुश्रुतिक अनुसार आदिसुर गुप्तवंशक राजा छलाह। गुप्तवंशक आदित्यसेनक तीन गोट अभिलेख मिथिलाक सन्निकटक भू-भाग सँ प्राप्त भेल अछि। सम्भवतः आदिसुर गुप्तवंशक आदित्य सेनहिक उपनाम छल जनिकर शासन सम्पूर्ण बिहारक भू-भाग पर छलनि। अतएव आदिसुर अपन राज्य मिथिलाक बौद्ध विरोधी ब्राह्मण केँ छोड़ि कान्यकुब्जक ब्राह्मण केँ ब्राह्मण-धर्मक प्रचारक निमित्त बंगाल मे लए गेलाह जे समीचीन नहि बुझना जाइछ।

(२) बंगालक कुलाचार सँ सम्बद्ध ग्रन्थक अनुसार आदिसुर बंगाल मे कोलाँच ब्राह्मण केँ बसौलनि। एहि कोलाँच सँ कान्यकुब्जक अर्थ कएल जाइछ जे उपर्युक्त नहि बुझना जाइछ। वनगाँव प्रशस्ति मे कोलाँच ब्राह्मणक उल्लेख पाओल जाइछ। डॉ० डी० सी० सरकार[७५] कोलाँच केँ कान्यकुब्ज बुझैत छथि जे समीचीन नहि प्रतीत होइछ। मैथिल ब्राह्मण मध्य कतिपय मूलग्राम पाओल जाइछ जाहि मे कोलाँच सेहो अछि। वनगाँव

७३ ओएह, पृ० २७
७४ ओएह, पृ० २६
७५ ओएह, पृ० २३

प्रशस्ति जे विग्रहपाल तृतीयक थिक (एगारहम शताब्दीक) कञ्चनपुर स्कंधावार सँ जारी कएल गेल छल। सम्भवतः कञ्चनपुरहि सँ कोलांच शब्दक निर्माण भेल हो जकर अपन पृथक सामाजिक अस्तित्व ओहि युग मे छलैक। अतएव मात्र शब्दार्थ केँ आधार मानि कोलांच सँ कान्यकुब्ज बूझब नितान्त भ्रामक थिक जखन कि ७३२ ई० पूर्व वा पश्चात कान्यकुब्ज ब्राह्मण मध्य कखनहुँ कोनहु प्रकारक कुलीन वा पञ्जी प्रथाक प्रचलन नहि पाओल जाइछ। एहि परिस्थिति मे जँ बंगाल मे कुलीन प्रथाक प्रचार आदिसुर कान्यकुब्ज ब्राह्मणक द्वारा कएलनि तँ अवश्ये एहि सँ सम्बद्ध प्रथा कोनो ने कोनो रूप में कान्यकुब्ज ब्राह्मण मध्य अवश्य रहैत।

वैद्यकुल पञ्जीक अनुसार बंगालक राजा वल्लाल सेन बंगालक ब्राह्मण, कायस्थ एवं वैद्य जाति मध्य कुलाचारक प्रवर्त्तन कएलनि। सम्भवतः वल्लाल सेन जे वैद्य छलाह वा तँ पुनः कुलाचार केँ संगठन कएलनि वा बंगालक ब्राह्मणे सन वैद्य जातियहु केँ ओ एहि प्रथा सँ सम्बद्ध कएलनि। फलतः ओ पश्चात कुलाचारक प्रवर्त्तकक रूप मे कुलपञ्जीका ग्रन्थ मध्य मानए जाए लगलाह जकर निर्माण मात्र अनुश्रुतिक आधार पर भेल।

(३) कौल शब्द कुल शब्द सँ बनल अछि। कुलक अर्थ होइछ कुण्डलिनी शक्ति तथा अकुलक अर्थ होइछ शिव। जे व्यक्ति योग-विद्याक मदति सँ कुण्डलिनीक उत्थान केँ सहस्रार मे स्थित शिवक संग संयोग करबैछ ओकरहि कौल[७६] वा कुलीन[७७] कहल जाइछ।

कुलीन शब्दक वाक्य —"कौ शरीरे लीनं यत्प्रभास्वरं यदज्ञानरसेनान्ते वाह्यते कृतं"[७८] अर्थात् कुक तात्पर्य शरीर मे लीन प्रभास्वर ज्योतिः स्वरूप[७९] तथा वस्तुजगत वा रूपादि विषय समूह मे लीन[८०] सँ अछि। कुल सँ तात्पर्य साधन सँ थिक। तांत्रिक बौद्ध सिद्धान्त तथा मत्स्येन्द्र नाथ विरचित कौलज्ञाननिर्णय, अकुलवीर तंत्र तथा कुलानन्द तंत्र मे सहज विवेचन, वाह्याचार-विरोध, वाह्यसाधना विरोध, कुलविचार (जेना नटी, रजकी, डोबीं, चंडाली तथा ब्राह्मणी), रहस्यात्मक शब्दावलीक दृष्टि सँ मत्स्येन्द्र नाथक योगिनी कौलमत तथा तांत्रिक बौद्ध मत सर्वथा एके थिक।[८१]

---

७६ कुलं शक्तिरिति प्रोक्तमकुलं शिव उच्यते।
कुलेऽकुलस्य सम्बन्धः कौलमित्यभिधीयते।
—स्वच्छन्द तन्त्र।

७७ कुलं शक्तिः समाख्याता, अकुलं शिव उच्यते।
तस्यां लीनो भवेद्यस्तु सकुलीनः प्रकीर्तितः।
—गुप्तसाधन।

७८ बौ० दो०, च० १८, सं० टी०

७९ ओएइ, वं० टी०

८० चर्या० पृ० ९६

८१ प्रबोध चंद्र वागची, कौल निर्णय, पृ० ५५-५९

कौलमार्गक प्रसंग मे तंत्रलोक मे सन्निहित अछि। एहि ग्रन्थक अनुसार मीन वा मच्छंदविभु कामरूप महापीठ मे कौल मार्गक स्थापना कएलनि। कौलज्ञाननिर्णय मे कौलक वर्णन अछि। मत्स्येन्द्रनाथक विषय मे जतेक कथा प्रचलित अछि ओहि सभ सँ संकेत प्राप्त होइछ जे मत्स्येन्द्रनाथ कामरूप देशक अपन यात्राक पूर्वहि गोरखनाथ कें अपन शिष्य बनौलनि। मत्स्येन्द्रनाथक कुलाचार सँ सम्बद्ध जे किछु ग्रन्थ अछि ओहि मे कहल गेल अछि जे मत्स्येन्द्रनाथ कामरूप मे 'कौल योगिनी' मत वा सिद्ध कौल मतक प्रचार कएलनि।

राजगुरु योगिवंशकार मत्स्येन्द्रनाथक समय ५२२ ई० मानलनि अछि।[८२] चीनी पर्यटक हुएन्त्सांग भावविवेक एवं मत्स्येन्द्रनाथ कें समकालीन मानैत छथि।[८३]

भावविवेकक समय ५५० ई० थिक।[८४] लेवीक कहब छनि जे मत्स्येन्द्र नाथ ६५७ ई० मे नेपालक राजा नरेन्द्र देवक आमंत्रण पर ओतए गेलाह। अतः मत्स्येन्द्रनाथक समयक पश्चात आदित्यसेनक प्रादुर्भाव भेल जकर पूर्वहि सँ मिथिला मे कुलीनक प्रथा प्रचलित छल तथा मिथिलहि सँ कौल मार्ग कामरूप गेल।

कुल-कुण्डलिनी शक्तिए कुलाचारक प्रधान अवलम्बन थिक। कुण्डलिनीक संग जे आचार कएल जाइछ ओकरहि कुलाचार कहल जाइछ। ई आचार मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा तथा मैथुन एहि पञ्च मकारक सहयोग सँ अनुष्ठित होइछ जकर सम्बन्ध अन्तर्योग सँ अछि। ब्रह्मरन्ध्र मे स्थित सहस्त्रदलकमल सँ टपकनिहार अमृत कें कुलार्णव तन्त्र मे मद्य कहल गेल अछि। ऊँच साधनाक बल पर जे साधक कुण्डलिनी तथा परम शिवक संग सम्मिलन भेला सन्ता मस्तक मे स्थित इन्दु सँ टपकैत अमृत कें पान करैछ ओकरहि योगिनी तन्त्र मे मद्यप कहल गेल अछि तथा जे साधक पुण्य और पाप रूपी पशु कें ज्ञानरूपी खड्ग सँ कटैत अछि तथा अपन चित्त कें ब्रह्म मे लीन करैछ तकरहि कुलार्णव तन्त्र मे मांसाहारी कहल गेल अछि।

आगमसारक अनुसार जे व्यर्थक वकवाद नहि कए अपन वाणी कें संयम रखैछ, ओकरहि आगमसार मे वास्तविक मांसाहारी कहल गेल अछि। शरीर मे इडा और पिङ्गला नाड़ी कें तान्त्रिक भाषा मे गंगा तथा यमुना कहल गेल अछि। एहि दुहुक योग सँ सर्वदा प्रवाहित भेनहार श्वास एवं प्रश्वास दुइ मत्स्य थिक। जे साधक प्राणायाम द्वारा श्वास, प्रश्वास बन्द कए कुम्भक द्वारा सुषुम्ना मार्ग मे प्राण-वायुक संचालन करैछ यथार्थतः तकरहि मत्स्य-भक्षक कहल जाइछ। सत्सँगक प्रभाव सँ मुक्ति तथा कुसँगति सँ बंधन प्राप्त होइछ। असत्संगतिक मुद्रणक नाम कें विजय तन्त्र मे मुद्रा तथा कुसंगति कें छोड़ि सत्संगति कें प्राप्त करबा कें मुद्रा साधन कहल गेल अछि। सुषुम्ना तथा प्राणक समागम कें तान्त्रिक भाषा मे मैथुन कहल जाइछ। स्त्रीक सहवास सँ वीर्यपातक समय जे सुख होइछ

८२ नगेन्द्र नाथ उपाध्याय, ता० बौ० सा० और साहित्य, पृ० २२८

८३ ओतहि

८४ ओतहि

ओहि सँ करोड़ों गुणा अधिक सुषुम्ना मे प्राण वायु केँ स्थित भेला पर होइछ जकरा मेरु तन्त्र मे प्रकृत मैथुन कहल गेल अछि ।

कौलक आचार केँ कुलागम वा कुलशास्त्र तथा ओकर अनुयायी केँ कौल, कुलपुत्र वा कुलीन नामे सम्बोधन कएल जाइत छल । थेरवाद बौद्ध ग्रन्थ मे कुलपुत्रक चर्चा प्रायः पाओल जाइछ ।

मैथिल एवं बंगालक ब्राह्मण केँ कुलदेवता रहैत छनि तथा एहि दुहु केँ कौलिक मंत्रक परिपाटी अछि ।

बंगालक कुलाचार सम्बन्धी ग्रन्थ मे कुलाचारीक नाम प्रधानतः मिश्रान्त अछि जाहि सँ ओ मैथिलत्वक बोध करबैछ ।

उपर्युक्त तथ्यक अतिरिक्त कौलमत पूर्णतः शाक्तमत थिक तथा मिथिला एवं बंगालक ब्राह्मण दुहु शाक्त होइत छथि । ओलोकनि मांस एवं माँछ केँ खाद्यपदार्थ बुझैत छथि किन्तु कान्यकुब्ज ब्राह्मणमध्य ने तँ कौल मतहि प्रचलित अछि वा ने ओलोकनि मांस एवं माँछ खाइत छथि । ओलोकनि प्रधानतः वैष्णव होइत छथि । एहि परिस्थिति मे बंगालक ब्राह्मणक एहि तरहक सामाजिक आचरण आदि सँ हुनका लोकनि केँ कान्यकुब्जक वंशज बूझब नितान्त भ्रमात्मक थिक ।

(४) मिथिला एवं बंगालक संस्कृतिक प्रसंग मे डॉ० डी० सी० सरकारक[८५] कहब छनि जे विदेह मे बसलाक उपरान्त आर्य क्रमशः ओतए सँ उत्तर बंगाल, मगध तथा पुण्ड्र सँ आसाम मे निवासित भेलाह तथा सम्पूर्ण बंगाल केँ नन्द एवं मौर्य राजाक राजत्वकाल मे पटनाक संग घनिष्ठ सम्बन्ध छल । अतः बंगालक संस्कृति, साहित्य एवं लिपि पर मिथिलाक संस्कृतिक पूर्ण प्रभाव पाओल जाइछ । अतएव मिथिलाक संस्कृति, भाषा एवं लिपि स्वतः पश्चिम बिहारक अपेक्षा बंगाल सँ अधिक साम्य अछि ।[८६]

आधुनिक बंगलाक्षर मे जे किछु विभिन्नता अछि ओ जखन मुद्रणालयक अविष्कार भेल तथा बंगला साहित्य प्रगति कएलक और ओकरा हेतु मुद्रण अक्षरक निर्माण होमय लागल तखन छपबाक सुविधा केँ दृष्टिकोण मे राखि मात्र किछु अक्षरक पूर्ववर्त्ती आकृति मे किछु परिवर्त्तन कएल गेल ।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणक लिपि अशोकक कालहि मे देवनागरी दिसि मोड़ लेलक जे अद्यावधि पाओल जाइछ किन्तु आश्चर्य तँ एहि वस्तुक थिक जे बंगाल मे अद्दखन देवनागरीक प्रचारक अभावे अछि ।

उपर्युक्त तथ्यक अतिरिक्त मैथिल ब्राह्मणक रीति-रेवाज, ओढ़ब-पहिरब सँ लए भाषा एवं लिपि आदिक बड़ समता बंगालक ब्राह्मण सँ पाओल जाइछ जाहि सँ प्रतीत होइछ जे

८५ डी० सी० सरकार, स्टडीज इन दि सोसाइटी एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ एन्सिएन्ट एण्ड मेडियेभल इन्डिया, भाग १ पृ० १

८६ ओतहि, पृ० २२१

बंगाल मे कुलीन प्रथाक संग मिथिलाक्षरक आधुनिक रूपक प्रचार आदित्य सेनहिक द्वारा भेल जनिकर अभिलेख मुख्यतः मिथिलाक निकटवर्त्ती क्षेत्र मे पाओल जाइछ।

अतः बंगालक ब्राह्मण कान्यकुब्जक वंशज नहि भए ओ अवश्ये मैथिल ब्राह्मणक वंशज थिकाह जनिकर पूर्वज केँ आदित्य सेन मिथिला सँ बंगाल लए गेलाह जे मिथिलाक संस्कृति, साहित्य एवं लिपिक संग बंगालक संस्कृति साहित्य एवं लिपिक उद्भव स्रोत भेलाह।

वाचस्पति मिश्र जनिकर काल ८४१ वा ८४२ ई० थिक[८७] अपन ग्रन्थ न्यायकणिका मे आदित्य सेनहिक चर्चा आदिसुरक नामे कएलनि अछि। सम्भवतः वाचस्पति मिश्र आदित्य सेनक प्रपौत्र जीवितगुप्त द्वितीयक प्रश्रय मे छल होथि तथा जाहि नृगक उल्लेख ओ अपन ग्रन्थ मध्य कएने छथि ओ प्रायः जीवित गुप्तहि होथि।

उपर्युक्त तथ्य केँ दृष्टि मे राखि मिथिलाक्षर एवं बंगला लिपिक समताक कारण परिलक्षित तँ होइतहि अछि संगहि इहो अवगत होइछ जे बंगाल एवं मिथिला मे एतेक घनिष्ट सम्बन्ध एहि सभ कारणे भेल।

जीवितगुप्त द्वितीयक पश्चात बंगाल एवं बिहार मे पारस्परिक कलह सँ जनजीवन अशान्त छल। अतएव आठम शताब्दी मे पूर्वी भारत मे अराजकता छल तथा लोक एहि अराजकताक अभिशाप सँ मुक्तिक निमित्त गोपाल प्रथम केँ राजा बनाओल।

गया, बोधगया तथा बिहारक अन्य भाग मे उपलब्ध कतिपय अभिलेखक आधार सँ ज्ञात होइछ जे पूर्वी भारत पर पालक आधिपत्य छल। भागलपुर[८८] तथा मुँगेर ताम्रपत्र अभिलेख, बादल प्रस्तर अभिलेख[८९] आदि मे पालक वंशावली पाओल जाइछ। दिनाजपुर ताम्रपत्र[९०]अभिलेखक अनुसार गोपालक राजत्वकाल ७६५ मे प्रारम्भ भेल तथा एहि वंशक १७ राजा राज्य कएलनि जाहि मे इन्द्रद्युम्नक राजत्वकाल १२०० ई० छल जे एहि वंशक अंतिम राजा छलाह।

पाल राजा लोकनिक अभिलेख मे ए, ख, ञ, त, म, र, ल, आओर स अक्षर मे यद्यपि किछु नागरी दिशि झुकाव अछि किन्तु ओ नागरी नहि भए मिथिलाक्षरहिक अन्य रूप थिक तथा अ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ, ख, घ, झ, ञ, ट, थ, ध, प, फ, र, श, ष अक्षर पूर्णतः मिथिलाक्षर थिक।

---

८७ डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, ज० बि० रि० सो०, भाग ४६ पृ० ७०

८८ एसियाटिक रिसर्चेज, भाग १; डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्री ऑफ मिथिला, पृ० २०३-२६

८९ ज० ए० सो० ऑफ बं० भाग ४३, पृ० ३५८

९० अनिरूद्ध झा, शामला लम योग, एपेंडिक्स २

मिथिलाक्षरक आधुनिक रूपक विकासक प्रसंग मे चन्द्र, वर्मन एवं सेन राजा लोकनिक अभिलेख बड़ महत्त्वक अछि।

श्रीचन्द्रदेवक रमपल ताम्रपत्र प्रशस्ति[९१] जे श्री विक्रमपुरक राजधानी सँ जारी कएल गेल छल तथा पौण्ड्रवर्द्धन भुक्ति मे स्थित भूमिदानक प्रसंगक अछि मिथिलाक्षरक प्रसंग मे बड़ महत्वपूर्ण तँ अछिये संगहि विक्रमशिलाक राजनैतिक महत्वक द्योतक सेहो थिक। एहि प्रशस्तिक श्लोक संख्या २ मे चन्द्रवंशक प्रवर्त्तक पुर्णचन्द्र केँ रोहितगिरिक (आधुनिक शाहाबादक रोहताशगढ़) शासकक रूप मे उल्लेख कएल गेल अछि।

चन्द्र राजा लोकनि सँ सम्बद्ध अभिलेख, मुद्रा तथा वर्मनक वंशावली सँ ज्ञात होइछ जे अराकान प्रदेश मे ७म शताब्दीये सँ चन्द्र लोकनिक राज्य छल।[९२] तारनाथक अनुसार चन्द्र राजा लोकनिक राज्य पाल राजाक पूर्वहि मे छल।[९३] भारतीय अनुश्रुतिक प्रसिद्ध गोपीचन्द एहि वंशक गोपीचन्द्र थिकाह।[९४] एहि वंशक अनेक राजा पूर्वीय बंगालक एवं मिथिलाक पूर्वी क्षेत्र मे राज्य करैत छलाह जनिकर तात्कालीन भूभाग पौण्ड्रवर्द्धन भुक्ति मे सन्निहित छल।

रमपल प्रशस्तिक लिपि मिथिलाक्षर थिक जकर निर्माण सोझ रेखा, दक्षिण अन्तक भाग सँ एक लम्ब रेखा जे सोझ रेखा सँ किछुएक पैघ रहैछ नीचाँक दिशि झुकैत अछि सोझ रेखाक बाँम भागक अन्त मे स्पर्श रेखा सँ सम्बद्ध एक रेखा दक्षिण दिशि अग्रसर होइछ जे सोझ रेखाक संग न्यूनकोण बनबैछ। दक्षिण दिशि एवं एहि स्पर्श रेखा सँ एक कोनक आकारक चेह्न उभरैछ जे कुटिलाक्षरक रूप अ एवं आ अक्षर मे भिन्नता पाओल जाइछ। तदुपरान्त ठ, त, ण, य आदि अक्षर पूर्ण रूपेँ आधुनिक मिथिलाक्षर थिक।

भोजवर्मनक वेलवा ताम्रपत्र प्रशस्ति[९५] विक्रमपुरक स्कन्धवार सँ जारी कएल गेल छल तथा एहि सँ सम्बन्धित बाँका सवडिवीजनक अमरपुर थानाक अन्तर्गत भरको रामपुर नामक श्यामल मूलक मझरौठी यादव अपना केँ एहि अभिलेखक श्लोक ९मे उल्लिखित सामलवर्म देवक वंशज बुझैत छथि।[९६] सामलवर्मक

९१ ए० ई०, भाग १२, पृष्ठ १३६
९२ आर० सी० मजुमदार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, भाग १, पृ० १९२
९३ ई० हि० क्वा०, भाग ६, पृ० २२०
९४ ओएह
९५ गोपाल द्वितीयक जाक्लिलपारा अभिलेख (ज० ऐ० सो० ऑफ बंगाल, १९६१, पृ० १४२) वट पर्वत स्कन्धावार सँ जारी कएल गेल छल। वट पर्वत विक्रमपुरीयेक अपर नाम थिक।
९६ डॉ० अभय कान्त चौधरी, मिथिला भारती, अंक १, भाग १-२ पृ० ८५

पिता जातवर्मन एकादश शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे अंग एवं कामरूप पर अधिकार कएलनि ।[९७]

वेलवा प्रशस्तिक लिपि कें डॉ० राधा गोविन्द बसक एगारहम शताब्दीक उत्तरी लिपि तथा श्री चन्द्रक रमपल प्रशस्तिक लिपि कें एगारहम-बारहम शताब्दी मे उत्तरी-पूर्वी श्रेणीक एक लिपि कहलनि अछि जे पूर्णतः भ्रामक थिक। एहि दुहु प्रशस्तिक लिपि विशुद्ध मिथिलाक्षरक आधुनिक रूप थिक जे बिना कोनो परिवर्त्तन कें एहि अभिलेख मे प्रयुक्त कएल गेल अछि।

वेलवा प्रशस्ति मे व्यवहृत अ अक्षरक आकृति मे चेह्नक लोप भए जाइछ जेना एहि अक्षरक शिरोभाग उन्मुक्त रहैछ। एवंक्रमक आकृति त्रिभुजक एक भुजा कें वक्र रेखाक संग संयुक्त करबैछ जे लम्बरेखाक अन्तिम भागक नीचाँक बिन्दुक आकारक वक्र भाग कें मिलबैत अछि। एहि तरहक रूप अर्थ, अधःपतन, अष्टगच्छ आदि वाक्य मे पाओल जाइछ। एहि तरहक रूप आ अक्षरहुक संग पाओल जाइछ जे अ अक्षरक यौगिक रूप थिक तथा साधारणतः एहि अक्षर मे तीक्ष्ण शिरोभाग तथा लम्ब रेखाक नीचाँक भाग मे ठोस त्रिभुज रहैछ। किन्तु वेलवा प्रशस्ति मे एहि तरहक आकृतिक अंशतः लोप भए प्रधानतः दुइ प्रकारक आकार पाओल जाइछ। प्रथम आकार मे त्रिभुजक आकृति ठोस रूप मे नहि अछि। एहि तरहक रूप 'आचन्द्रार्कम्' वाक्य मे पाओल जाइछ तथा दोसर प्रकारक आकृति मे संयोगक शिरोभाग उन्मुक्त भेला सन्ता त्रिभुजक लोप करबैछ जे 'आसीत' एवं 'आप्नवान' वाक्य मे उपलब्ध होइछ। एहि तरहें आन-आन स्वरक अक्षर एवं व्यञ्जन सभ-कें-सभ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप मे निर्मित पाओल जाइछ जकर विवेचना पृथक कएल जायत।

आधुनिक मिथिलाक्षरक आकृति प्रधानतः बंगालक राजा लक्ष्मण सेनक तर्पदिघीक दान-पत्र प्रशस्ति[९८] तथा कामरूपक वैद्यदेवक दानपत्र[९९] मे पूर्णतः पाओल जाइछ जकर अक्षर श्रीधरक अंधराठाढ़ी अभिलेख[१००] नरसिंह देवक कनदाहा अभिलेख[१०१] एवं पक्षधर मिश्रक स्वलिखित विष्णुपुराणक लिपि[१०२] सँ साम्य अछि। तर्पदिघी अभिलेख एवं कामरूपक वैद्यदेवक ताम्रपत्र प्रशस्तिक 'इ' आओर 'ई' मे विशेष अन्तर नहि अछि। वैद्यदेवक दानपत्रक ए, ऐ मे तँ नहि किन्तु ई मे किछु परिवर्त्तन

---

९७ वेलवा प्रशस्ति श्लोक ८

९८ ए० ई०, भाग १२, पृ० ८

९९ ओपइ, भाग २ पृ० ३५०

१०० ज० बि० रि० सो०, भाग ९ पृ० ३०२

१०१ डॉ० के० पी० जयसवाल, ज० बि० रि० सो०, भाग २०, पृ० १५

१०२ बिहार रिसर्च सोसाइटी मे सुरक्षित अछि।

पाओल जाइछ। अनुस्वार कें अक्षरक ऊपर नहि लिखि आगाँ मे लिखल गेल अछि तथा ओकर नीचाँ हलन्त सन तिरछी रेखा लगाओल गेल अछि। ऊ और ॠ क मात्रा मे स्पष्ट अन्तर नहि अछि। ब आओर व मे कोनो तरहक भेद नहि अछि तथा शिरोभाग सोझ डाँरि सँ नहि रहि एवंक्रमक ⌒ पाओल जाइछ जकर विकास पश्चात उड़िया लिपि मे भेल।

३

तंत्रक प्रभाव

वर्त्तमान मिथिलाक्षर जकरा तिरहुता सेहो कहल जाइछ अशोकक उत्तरी-पूर्वी आदेश लेखक लिपिक परिवर्त्तित रूप थिक जकर विकास ई० सनक चारिम और पाँचम शताब्दी मे पूर्ण रूपें भेल। ओहि युगक लिपिक कल्पित नाम गुप्तलिपि थिक जकरा आकृतिमे क्षेत्रीयताक रूप नीक जकाँ पाओल जाइछ। एहि कालक लिपिमे दक्षिणी और उत्तरी भेद तँ छलहे पूर्वी और पश्चिमी भेद सेहो छल जकर अपन विशिष्टता छलैक। पश्चात जेना-जेना तन्त्रक प्रधानता बढ़ल लोकक रहन-सहन, खाएब-पीब सँ लए पठन-पाठनक प्रणाली मे सेहो परिवर्त्तन भेल। मूलतः गुतलिपि ई० सनक छठम शताब्दीक पश्चात कलात्मक भेला सन्ता कुटिलात्मक होमय लागल जकरा कुटिल लिपि कहल गेल।

कुटिल लिपि ई० सनक छठम सँ नवम शताब्दी धरिक प्रायः समस्त उत्तर भारतक अभिलेख मे पाओल जाइछ। एहि लिपिक अक्षरक सिरोभाग प्रधानतः एहेन रहैछ जे आधुनिक मिथिलाक्षरक स्वाभाविक स्वरूप तँ थिक किन्तु कतहु-कतहु छोट सन डाँड़र सँ सेहो सिरोभाग वेष्ठित रहैछ। अ, आ, घ, प, म, य, ष और सक ऊपरक अंश दुई भाग मे विभक्त होइछ और साधारणतः प्रत्येक विभाग परहक माँथक चेन्ह संलग्न रहैछ। अलवेरूनी[1] अपन भारत यात्राक वृत्तान्तक क्रममे कहैत छथि जे ओहि समयमे सिद्धमातृका नामक लिपि सर्वप्रमुख छल जे कश्मीर, बनारस तथा मध्य भारत मे प्रचलित छल।[2] वस्तुतः ओहि युगमे मिथिलाक्षर पर सिद्धलोकनिक प्रभाव भेला सन्ता ओकर एक नाम सिद्धमातृका सेहो छल। एहि लिपिक निर्माण तन्त्रक आधार पर भेल जकरा मध्य बीज अर्थात संक्षेपक नितान्त महत्त्वपूर्ण स्थान छल। संस्कृत वाङमय मे एहि बीजक विविध प्रकारक प्रयोजन कएल गेल अछि। कतहु गुह्य तन्त्र केँ आओरो गुह्य बनेबाक प्रयोजन तँ कतहु सूत्रपद्धतिक करणे संक्षेप रूपक आवश्यकता बुझना गेल। एहि तरहक पद्धतिक आधार पर भारतीय संगीतक सात मुख्य स्वर—स, रि, ग, म, प, ध, नि, जे स सँ षड्ज, रि सँ ऋषभ, ग सँ गन्धार, म सँ मध्यम, प सँ पञ्चम ध सँ धैवत तथा नि सँ निषादक बीज मन्त्रक उत्पत्ति भेल।[3] बीज मन्त्रक प्रसंग मे गुह्य मण्डली मे एहि तरहक कथन-पद्धति प्रागैतिहासिक कालहि सँ प्रचलित अछि :—

'सप्तमस्य द्वितीयस्थमष्टमस्य चतुर्थेकम्। प्रथमस्य चतुर्थेन भूषितं तत् सबिन्दुकम्'।

---

१ डा० एडवर्ड सचाऊ, अलवेरूनी इण्डिया भाग १, पृ० ९ मे उल्लिखित अलवेरूनीक जन्म ९७३ मे भेल

२ ओतहि, पृ० १७३

३ सुदर्शन देवी सिंघल, गणपति तत्व, भू० पृ० १६

सप्तम वर्ग (अनतस्य)क दोसर वर्ण थिक र। अष्टमक चतुर्थ वर्ण (ऊष्म्) थिक ह, प्रथमक चतुर्थ वर्ण (स्वर) थिक ई। बिन्दुक अर्थ थिक म। अतः सरस्वतीक बीजमंत्र भेल ह्रीं।[४]

बौद्ध और शैव विचार धारा मे एहि बीज मन्त्र कें प्रमुख स्थान प्राप्त भेल। उत्तर भारतक शैव दर्शनक प्राचीन कालक उद्धार कोष[५] बीजक कोष थिक। एहि मे वर्णित बीजक ई सँ इन्द्र, घ्नी सँ शतघ्नी, द्रीं सँ चन्द्र तथा म सँ मण्डूक आदिक बोध होइछ।

बौद्ध और शैव धर्मक द्वारा बीज मन्त्रक प्रचार भारत सँ सुदूरवर्त्ती देशहु मे भेल। चीन और जापानक बीजाक्षर कें लिखबाक निमित्तहि 'सिद्धम्" लिपिक प्रयोग भेल। चीनी भाषा मे वर्णमाला नहि अछि। प्रत्येक शब्दक हेतु रेखा सँ निर्मित विशेष चित्राक्षर अछि। अतएव प्रत्येक गुह्य मन्त्र, धारणी एवं सूत्रक अनुवाद रूप मे नहि भए मूल रूपे मे अधिक प्रभावशाली भेला सन्ता ८म शताब्दीक लगभगक कलात्मक भारतीय 'सिद्धम्' लिपिक प्रयोग ओतए आरम्भ भेल। डा० आर० एच० वन गुलिक महोदय एहि विषय पर अपन विवेचनात्मक पुस्तक "सिद्धम्" मे लिपिक कलात्मक रूपक विवेचन करैत बीज तथा बीज मण्डलक विस्तृत वर्णन कएलनि अछि। हुनका अनुसारें बीज यन्त्र विशेष देवी-देवता, सूत्र, मन्त्र और धारणीक प्रतिनिधित्व करैछ।[६] एहि प्रसंग मे सिद्धम् बीजाक्षरक संग्रह, व्याख्या आदिक ऊपर जापानी विद्वान जोउन्क सहस्रभागीय बृहद ग्रन्थ बोङ्काकु शिन्यों विशेष उल्लेखनीय अछि। १७म शताब्दीक आरम्भ मे नागोयाक उत्तर मे स्थित मीनो नामक स्थानक शिङ्गोन् मन्दिरक एक भिक्षु यूजान् प्रत्येक बीजाक्षर कें स्तूपक रूपमे मानलनि अछि। हुनका अनुसारे बिन्दु सँ आकार, चन्द्र सँ वायु, शिरो-रेखा सँ अग्नि, अक्षरक आकार सँ जल तथा ओकर आधार सँ पृथ्वीक बोध होइछ। एवंक्रमे भिक्षु यूजान् प्रत्येक बीजाक्षर कें एहि जगतक वस्तुमात्रक आधारस्वरूप पञ्चमहाभूत सँ युक्त कहलनि अछि।[७] एहि प्रसंग मे चीनी पर्यटक इत्सिङ्गक यात्रा-विवरण बड़ महत्त्वक अछि। ओ अपन यात्राक वर्णनक क्रम मे संस्कृत व्याकरणक पाँचगोट ग्रन्थक उल्लेख कएलनि अछि (१)—सि. तँ. चङ्ग अर्थात् सिद्धव्याकरण जकरा ओ सिद्धिरस्तु कहैत छथि। ई ग्रंथ विद्यारम्भक प्रथम ग्रंथ छल जे छौ वर्षक नेना के पढ़ाओल जाइत छल तथा छौ मासमे ओकर अध्ययन समाप्त होइत छल, (२) ग्रंथ महेश्वर द्वारा उद्‌बोधित पाणिनिक सूत्र छल जे आठ वर्षक नेना कें आठ मास धरि पढ़ाओल जाइत छलैक, (३) ग्रंथ धातु पाठ छल जे १००० श्लोकक छल, (४) जमादित्यक कृत अष्टधातु छल जे दश वर्षक नेना कें तीन वर्ष धरि पढ़ाओल जाइत छल, तथा (५) ग्रंथ १८००० श्लोकक वृत्ति सूत्र छल।[८]

एहि मे सँ प्रथम ग्रन्थ याने सि तँ. चङ्ग अर्थात् सिद्धिरस्तु कें छोड़ि और सभटा ग्रंथ तँ भारत मे उपलब्ध अछि किन्तु एहि ग्रंथक प्रसंगक उल्लेख इत्सिङ्ग एवं ह्वेनत्सांगक

४ साधनमाला, भूमिका
५ गणपतितत्व, भू०, पृ० १७
६ श्रोतहि, पृ० १८
७ श्रोतहि, पृ० १८
८ तकाकुसु, पृ० १००; ज० आ० दि ओ० रि० मद्रास, अंक १० भाग ४, पृ० ११-२६

यात्रा विवरणमे पाओल जाइछ तथा जापान एवं वोडलिग पुस्तकालयमे ई ग्रन्थ अहुखन उपलब्ध अछि ।

एहि पाँचो ग्रंथ मे प्रथम ग्रंथ सि० तँ० चङ्क अर्थात् "सिद्धिरस्तु" मे उनचास गोट अक्षर छल जे एक दोसरा सँ सम्बद्ध और अट्ठारह भागमे विभाजित छल । एहि ग्रंथमे ३०० श्लोक छल तथा प्रत्येक श्लोक मे चारि पाठ रहैत छलैक जकर प्रणेता महेश्वर केँ कहल जाइछ । एकर पुष्टि हितोपदेशक मंगल वाक्य—

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादात्तस्य धुर्जटेः ।
जाह्नवीफेनलेखेव यन्मूर्ध्नि शशिनः कला ।।

सँ सेहो होइछ । एहि मंगल श्लोक मे शिवक प्रसादेँ सिद्धिक कामना कएल गेल अछि । अतएव प्रतीत होइछ जे सिद्धिरस्तुक प्रणेता महेश्वरे थिकाह ।

सिद्धिरस्तु हितोपदेश वा अमरकोष सन कोनो छोटे-छीन ग्रंथ छल । मिथिलाक क्षेत्र मे सिद्धिरस्तु पढ़वाक परिपाटी अद्यावधि अछि । मिथिलाक प्रत्येक गामक प्रत्येक संभ्रान्त मैथिल ब्राह्मणक नेना विद्यारम्भक पूर्व मे सिद्धिरस्तु नामे—

सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी ।
उग्रेण तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः ।।[१]

पाठ अहुखन कण्ठस्त करैत अछि जे प्रायः सिद्धिरस्तु ग्रन्थक मंगल श्लोक थिक । एहि श्लोकक विश्लेषण एहि तरहेँ कएल जाइछ—

"सा शिखर वासिनी देवी ते प्रीता भवतु ।
उग्रेण तपसा जया देव्या पशुपतिः पतिरूपेण लब्ध ।।

एहि मंगल श्लोकमे पार्वतीक अनुग्रहक कामना कएल गेल अछि जे उग्र तपक द्वारा महेश्वर केँ पतिक रूप मे प्राप्त कएलनि ।

वस्तुतः महेश्वरक कृपाक बिना सिद्धि प्राप्त करव दुर्लभ थिक । तदर्थ जे महेश्वरे केँ प्राप्त कएलनि जँ हुनकहि अनुग्रह उपलब्ध भए जाए तँ पुनः सिद्धि प्राप्त करव आसान होइछ । एहि मंगल श्लोकक आधार पर आधुनिक द्वादशाक्षरी या बाराखड़ीक निर्माण भेल ।

सिद्धिरस्तु केँ सिद्धम् बुझब नितान्त भ्रामक थिक । प्रारम्भ मे बौद्धलोकनि "नमो सर्वज्ञाय" वाक्यक द्वारा भगवान बुद्धक प्रशंसाक उपरान्त अध्ययन प्रारम्भ करैत छलाह । किन्तु जखन सिद्ध-संतक प्रभाव पड़ल तँ ओहु मे परिवर्त्तन भेल तथा पश्चात जेना-जेना बौद्धधर्म मे तन्त्रक प्रधानता बढ़ैत गेल बौद्ध मन्त्रहु मे परिवर्त्तन भेल तथा 'नमो सर्वज्ञाय' मन्त्रक स्थान मे "ओं नमः सिद्धम्" प्रयुक्त होमय लागल जे अद्यावधि विद्यारम्भक पूर्व नेना केँ 'ओ ना मा सी धं'क रूप मे पढ़ाओल जाइछ जे सिद्धक प्रशंसाक मन्त्र थिक ।

'ओ ना मा सी धं' बौद्ध सिद्ध संत द्वारा प्रणीत भेला सन्ता ब्राह्मण द्वारा उपहासप्रद होइत छल जकर मूल कारण वज्रयान और सहजयान सिद्ध संतक हाथेँ गुरुक स्वरूप कलुषित

१ गंगानाथ झा, कविरहस्य, पृ० १०

भए गेला सँ थिक। वस्तुतः गुरुक वास्तविक महत्त्व चिंतनक क्षेत्र सँ अधिक साधनाक क्षेत्र मे छल। नीतिवाक्यामृत मे तँ स्पष्ट रूपेँ वर्णित अछि जे आचार्यहीन गुरु सँ पढ़ब निरर्थक थिक तथा एहि सँ उनटे फलक प्राप्ति होइछ। पालवंशक राजत्वकालधरि नालन्दा तथा विक्रमशिला आदि महाविद्यालय मे योग्य शिष्य केँ गुरु "सिद्धिविहारिक" नामे सम्बोधन करैत छलाह। एहि सँ प्रतीत होइछ जे शिष्य केँ विद्याप्राप्तिक हेतु सिद्धि प्राप्त करब अनिवार्य छल।

सिद्धिरस्तु केँ किओ किओ बौद्धवाङ्मय मे सिद्धिवस्तु नामे उल्लेख कएलनि अछि जे भ्रामक थिक। सम्भवतः या तँ ओ सिद्धिरस्तुए थिक वा सिद्धि अस्तु थिक। एहि प्रसंग मे ह्वेनत्सांग[१०] अपन यात्राक वर्णन मे (१) सि तँचङ्ग याने सिद्धिरस्तु, (२) वारह चङ्ग याने वारहखड़ी तथा (३) सिद्धिरस्तु नाम सँ तीन ग्रन्थक उल्लेख कएलनि अछि जे वस्तुतः एके थिक।

एहि प्रसंग मे भाष्यकार कश्यपक कहब छनि जे दुर्भाग्य सँ ई ग्रन्थ चीन सँ लुप्त भए गेल किन्तु जापान मे ई ग्रन्थ अहुखन सुरक्षित अछि जकरा ओ देवनागरी मे होएब मानैत छथि जे पूर्णतः भ्रामक थिक। ओ अवश्ये मिथिलाक्षर मे अछि जकर अनुसंधान होएब नितान्त आवश्यक अछि।

कश्यपक अनुसार सिद्धिरस्तु सिद्धमक स्त्रीलिङ्ग रूप थिक जे सिद्धिक अर्थ मे प्रयुक्त होइत छल। वोडलिंग पुस्तकालय मे एहि ग्रन्थक एक प्रति सिद्धक अट्ठारह भागक नामे उपलब्ध अछि जकर रचना काल १५६६ ई० थिक। एहि सँ प्राचीन ग्रन्थ जे ओतए सिद्धिकोषक नामे सुरक्षित अछि ओ ८८० ई०क लिखल थिक। एहि ग्रन्थ मे सिद्धिक अट्ठारह भाग, उनच्चास अक्षर तथा ३०० श्लोक अछि जे पूर्णतः इत्सिङ्गक सिद्धिरस्तु सँ साम्य अछि।

एहि सभ तथ्यक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे सिद्धिरस्तुक सम्बन्ध शिवसूत्र सँ छल जकरा अबोद्ध लोकनिक नेना विद्यारम्भक अवसर पर प्रथम ग्रन्थक रूप मे अध्ययन करैत छल जे अद्यावधि मिथिलाक क्षेत्र मे 'सा ते भवतु···' नामे प्रयुक्त कएल जाइछ तथा 'ओ ना मा सी धं' सँ ब्राह्मण केँ तेना ने विरोध छल जे जँ ओ अहुखन कोनहु नेनाक मुहेँ 'ओ ना मा सी धं' पढ़ैत सुनैत छथि तँ व्यंगार्थ कहि उठैत छथि जे "गुरुजी खसला चितंग।" एहि तरहक आचरण मिथिलाक प्रत्येक गाम मे पाओल जाइछ।

यद्यपि ब्राह्मणक एहि कथन मे विरोधाभास अछि तथापि सिद्धि प्राप्तिक निमित्त साधनाक पक्ष एहि व्यंगक मूल मे सन्निहित अछि। अक्षर शब्द अक्षय (ब्रह्म) शब्द सँ निस्सृत भेल अछि जकर उपलब्धिक हेतु सिद्धिक आवश्यकता तँ होइछ किन्तु सिद्धि बिना साधनाक नहि भए सकैछ। अतएव 'गुरुजी खसला चितंग' सँ तात्पर्य साधनाक अभाव मे सिद्धिक निष्फलता सँ थिक।

खाहे जे किछ हो जाहि सिद्धिरस्तुक चर्चा इत्सिङ्ग सातम शताब्दी मे कएलनि ओ अहुखन यथार्थतः ओहि नामे मिथिला मे व्यवहृत अछि तथा अलबेरूणीक सिद्धमात्रिका लिपि

१० तकाकुसु, १७०-७१

कोनहु आन लिपि नहि भए अवश्ये मिथिलाक्षर थिक जकरा पर तन्त्रक प्रभाव प्रत्यक्ष रूपें लक्षित होइछ।

बीजाक्षरक लिखब सेहो कला और साधना थिक। सुलेख लेखन मे प्रत्येक रेखाक मोटाइ, गोलाइ, लम्बाई आदिक विशेष अर्थ अछि। एकर अतिरिक्त सुलेखक रहस्यमयता, गुह्यता, पवित्रता आदिक दिग्दर्शनक आवश्यकता पर बड़ जोड़ देल गेल अछि।

बीज विचार, नाम तथा भावक संक्षिप्त रूप थिक जकर विस्तृत प्रयोग तन्त्रक ग्रन्थ मे उपलब्ध अछि।

तन्त्रमार्ग रहस्यमार्ग थिक। रहस्य तत्व कें प्रतीक द्वारा व्यक्त कएल जाइछ। किएक तँ सत्य भाव एवं अभाव सँ पृथक अछि। अतः भाषाक द्वारा ओकर वर्णन सम्भव नहि थिक। भाषा वा तँ भावात्मक भए सकैछ वा अभावात्मक। अतएव तंत्र प्रतीकक उपयोग करैछ। "शुक्र" कें वैरोचन", "मूत्र" कें वज्रोदक, स्त्रीन्द्रिय कें पद्म, लिंग कें वज्र आदि प्रतीक द्वारा वर्णित कएल जाइछ।[११] लामावाद मे अविद्या कें आँन्हर ऊँटनी, चेतन रहित इच्छा कें योनि, पाप कें कारी घोंघा, पुण्य कें श्वेत घोंघा, विज्ञान कें बानर[१२] इत्यादि कहल गेल अछि। तथागत गुह्यक मे प्रतीकक द्वारा सत्यक दिशि संकेत कएल गेल अछि। मण्डल शब्दक हेतु भग्, बोधिचित् एवं शरीर ई तीन टा प्रतीक थिक।[१३] पुष्प शब्द नवीन स्त्रीक निमित्त आएल अछि।[१४] चक्रक अर्थ थिक ज्ञान सँ जकर सृष्टि भेल अछि।[१५] विद्या शब्दहु स्त्रीक हेतु प्रयुक्त होइछ।[१६]

प्रतीकात्मक कथन पद्धति उपनिषदहु मे पाओल जाइछ। मुंडकोपनिषद मे पक्षीक वर्णन तथा श्वेताश्वतर मे हंसक वर्णन एहि प्रतीकात्मक पद्धति पर भेल अछि। एवंक्रमें अज एवं अजाक वर्णनहु प्रतीकात्मक थिक। शब्द साधनाहु मे उपनिषद् नितान्त जोड़ दैछ। धेनुरूपा वाकक चारि गोट स्तनक चर्चा स्वाहाकार, वषटकार, हन्तकार, एवं स्वाधाकारक नामे उपनिषद् मे पाओल जाइछ। एहि वाक्यरूपी धेनुक वृषभ कें प्राण मन कें वत्स्य कहल गेल अछि।[१७] अर्थात् मन, प्राण तथा वाकक एकता जे उपनिषदक पूर्वक योगी मे प्रचलित छल ओकरा स्वीकार कएल गेल अछि। उपनिषद् मे वाक्, उपासना, प्राण वो वासना, उद्गीथोपासना अथवा ओंकारोपासनाक रूप मे वर्णित अछि। तांत्रिक स्वर मे शब्द साधना मे मंत्र साधनाक महत्व अधिक अछि। बीजाक्षरक व्याख्या जे तंत्र मे पाओल जाइछ ओ उपनिषदहु मे सुरक्षित अछि। हृं क अर्थ हृदय, "द"क दान तथा

---

११ इन्द्रभूति, ज्ञान सिद्धि

१२ डब्लु० ए० वैडेल, लामाइजम्॥

१३ भगं मण्डलमाख्यातं, बोधिचित्तं च मण्डलम्।
देहं मण्डलमिति युक्तं त्रिपु मण्डल कल्पना॥
अष्टादश पटल

१४ अष्टादश पटल

१५ ज्ञानसत्वेन यत् सृष्टं, ज्ञानचक्रमिति स्मृतम्, ओतहि

१६ ओतहि

१७ वृहदारण्यक उपनिषद, १. ६. १. तथा ४. ३. ५

यमक अर्थ अक्षर कएल गेल अछि।[१८] एवंकमें प्रतिकृति लिपिक रूप मे व्याप्त भए क्रमशः पृथक-पृथक वर्ण मे विभक्त भेल जकरा मातृका कहल जाइछ।

मन्त्रशास्त्र मे विलोममातृका, बहिर्मातृका तथा अन्तर्मातृकाक विशेष चर्चा पाओल जाइछ। प्रचलित मातृकाक सविन्दुक उनटा रूपहि विलोम मातृका थिक। लिपिमयी देवीक रूप कें बहिर्मातृका कहल जाइछ। एहि मे विशेष क्रम सँ अकारादि वर्णक द्वारा देवीक अंगक निर्माण कएल जाइछ। आधार, स्वाधिष्ठान आदि चक्र मे, साधक जखन मातृका वर्णक वं शं षं सं आदि क्रम सँ न्यास करैछ तखन ओकरा अन्तर्मातृका कहल जाइछ। सुश्लिष्ट क्रम अ सँ क्ष पर्यन्त बुझल जाइछ। अकार कें मातृकाद्य तथा क्षकार कें मातृकान्त कहल जाइछ।[१९]

मातृकाक संख्या पचास अछि। वर्णमाला कें स्थूल मातृका कहल जाइछ[२०] जे वैखरीवाक थिक। विशेषतः श्वर अर्थात् कठिन वा घनीभूत भेला सन्ता ओकरा बैखरी कहल जाइछ। अथवा निश्चित रूप सँ ओ ख अर्थात् कर्ण विवर मे बैसैत अछि वा बिखर नामक प्राण सँ प्रेरित भेला सँ ओकरा वैखरीक आख्या प्रदान करैछ।

नानार्थक, पद एवं वाक्यक स्वरूप रचना केनहार, अर्थ सँ सर्वथा साम्य, कर्मक फल रूप मे अभीष्ट अर्थ कें देनहार, स्वदेह सँ उत्पन्न पचास अक्षर सँ निर्मित नानाविध विख्यात धातु सँ एहि विश्व कें व्याप्त कए चिदात्मा रूप सँ अहं इत्याकारक मातृका शक्ति विलास करैछ।[२१]

स्फुरण सँ अन्वित ज्ञाने प्रकाश नामक ब्रह्म थिक। ई सर्वज्ञत्व, सर्वेश्वरत्व इत्यादि शक्ति सँ सदा युक्त रहैछ। बटवीजक अन्तर्गत वटवृक्षक सूक्ष्म रूपक सदृश्य शब्द-सृष्टिक सूक्ष्म रूप कें धारण केनिहारि पुर्वोक्त त्रिपुरसुन्दरीए परा वाणी थिकीह तथा हुनकहि निर्माण, तरण एवं शब्दविधानात्मक गुणक कारण मातृका कहल जाइछ।[२२]

आचार्य अभिनवगुप्त सिद्धयोगीश्वरीक मतानुसार आनन्दात्मिका विसर्ग शक्ति कें शब्दराशि वा मातृकाक नामे वोध कएलनि अछि। ओहि मे जकरा प्रकाश कहल गेल अछि सएह अ वर्णक द्योतक अनुत्तर पद थिक तथा "ह" वर्णहि विसर्ग थिक जाहि दुहूक संघट्ट सँ अहं होइछ, तेज रूप अनुत्तर कें अकुल वा शिव कहल जाइछ तथा हुनकर कौलिकी नामहि विसर्ग थिक।[२३] अकुल अथवा कौलिकी शब्द द्वारा वोध्य अथवा

१८ ओतहि ५. ३. १

१९ मातृकाद्यः स्वराद्यश्च······प्रथमो भवेत् ॥२॥
मातृकानिघण्टु

२० मातृका च त्रिधास्थूला सूक्ष्मा सूक्ष्मतरापि च, सुत संहिता अ० ५ २ वि १;
सुत संहिता तात्पर्यदीपिका व्याख्या।

२१ शक्ति स्तोत्र

२२ ओतहि, पृ० १७

२३ अनुत्तरं परंधाम तदेवाकुलमुच्यते।
विसर्गस्तस्य नाथस्य कौलिकी शक्तिरुच्यते।
(तृ० अ० ॥१४३)

अकार-हकार द्वारा सांकेतिक शिव-शक्तिक संघट्ट केँ आनन्द शक्ति कहल गेल अछि जाहि सँ विश्वक निर्माण होइछ। ओकरा सार, हृदय तथा विसर्ग कहल जाइछ। देवीयामल ग्रन्थ मे कालकर्षिणी, महाडामरक योग मे श्रीपरा तथा श्रीपूर्वशास्त्र मे मातृसद्भावक नाम सँ ओकर वर्णन कएल गेल अछि।[२४] ई परमशक्तिए प्रतिभादेवी थिकीह।[२५]

स्वच्छन्द तन्त्र मे कहल गेल अछि जे सम्पूर्ण विद्या एवं प्रणव सँ उपलक्षित समस्त मन्त्रक उद्भव भूमि, संसारक उत्पत्ति, स्थिति एवं संहारक, अव्यय महाविद्या, माया सँ ऊपर विद्यमान छथि। अ, क, च, ट, त, प, य तथा श एहि आठ वर्ग सँ भिन्न पूर्वोक्त विद्यए मातृका छथि।[२६]

सुप्रसिद्ध ३६ तत्व मे आरम्भ सँ गनला पर शुद्ध विद्या पाँचम तत्व थिक। सदाशिव तत्व केँ नाद तथा ईश्वर तत्व केँ बिन्दु कहल गेल अछि। ओकर अनन्तर नीचाँ मे शुद्ध विद्या तत्व अछि। ओतए अहं तथा इदंक समान स्थिति रहैछ। शिव तत्व मे अहं विमर्श होइछ। सदाशिव तत्व मे अहमिदं तथा ईश्वर तत्व मे इदमहं विमर्श होइछ। शुद्ध विद्याक स्थिति शुद्ध एवं अशुद्ध सृष्टिक बीज मे रहैछ। अतः ओकरा परापर दशा वा भेदाभेद दशा कहल जाइछ।

वामकेश्वर तन्त्रक अनुसार मन्त्रमयी मातृका देवी कालरूप सँ प्रस्फुटित भेला सँ गणेश, ग्रह, नक्षत्र, योगिनी तथा राशिरूप थिकीह।[२७]

अनुत्तर रूप अकार एवं आनन्दरूप आकार केँ इकारात्मक इच्छा शक्ति सँ जोड़ला पर बीजत्रयक संघट्ट सँ एकारात्मक जन्माधाररूप एकादशम बीजक उदय होइछ जकरा त्रिकोण कहल जाइछ। ई परमानन्दमय स्थान थिक। एहि सँ जगतक उत्पति होइछ। ज्ञानरूपी रत्नक पेटी, समग्र सुखक आलय, एकारक आकृतिरूप ई गुप्त त्रिकोण, मातृकाहिक प्रसार थिक। अ, आ, तथा इक संयोग सँ जनित उत्कृष्ठ आधारात्मक ई परम्परा शक्ति, अ, क, च, ट, त, प, य सातम वर्गमयी तथा माँथ, टीक, ललाट, हृदय आदि मे रहए वाली थिकीह।[२८]

ई अकारादि तथा हकारान्त समस्त वर्णक प्रत्याहाररूप अहन्ता थिकीह। अनुत्तर एवं विसर्गात्मक ककार एवं सकारक प्रत्याहर-क्षकाररूपिणी होइतहुँ ई अक्षय थिकीह जे आदि सिद्ध शिव सँ उत्पन्न भेल अछि।

एहितरहेँ वर्णक समुदित शक्तिरूप स्थूल मातृका जे वस्तुतः एकहि गोट अछि किन्तु पश्चात ओ पचास पृथक-पृथक वर्णक शक्तिरूप पृथक-पृथक मातृकाक रूप मे विकसित

---

२४ तृतीय अध्याय
२५ तां परां प्रतिभां देवीं सङ्गिरन्ते ह्यनुत्तराम्। ६६
२६ स्वच्छन्दोद्योत, पृ० ४८४
२७ वामकेश्वरी, प्रथम पटल
२८ तं० विवेक, पृ० १०३; १०४

भेल। ओना तँ पचास मातृका वर्णक नव-वर्गक उल्लेख पाओल जाइछ किन्तु सप्त एवं अष्ट मातृकाए अधिक प्रसिद्ध अछि।[२९]

तन्त्रसद्भाव,[३०] मालिनी विजयतन्त्र[३१] आदिक अनुसार अ, क, च, ट, त, प, य, तथा क्ष ई नौ गोट मातृका वर्ग थिक। श्री भासुरानन्द नाथ क्षक स्थान मे ल कें स्थान दए नौ वर्ग कें पूर्ण कएलैन्ह अछि।[३२]

श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रक[३३] अनुसार मातृकाक—अ, क, च, ट, त, प, तथा य ई सात गोट वर्ग थिक।

अवर्ग सँ भैरवक वोध होइछ। अनुत्तर-अकार सँ लए विसर्गपर्यन्त सोलह वर्णक समुदाय कें स्वर शब्द सँ बोधित कएल जाइछ। स्वतः प्रकाशित, शब्दक स्वभावशील, भेदरूप उपताप तथा विश्वक आक्षेप करबाक निमित्त भैरव, स्वर शब्द[३४] वाच्य थिक। स्वर कें बीज तथा क आदि व्यञ्जन कें योनि कहल जाइछ। क आदि योनि वर्णक तत्वक प्रसार सेहो अ स्वरहि सँ होइछ। अतः स्वरक वा अवर्गक अधिष्ठाता भैरव थिकाह। बीज वर्णहि घनीभूत भए क, च, आदि वर्णक रूप ग्रहण करैछ। ई बीजक द्वारा व्यक्त होइछ। अतः व्यञ्जन कहल आइछ। उक्त बीजक संसर्ग जगतक हेतु भेला सँ ई योनि पद वाच्य थिक। एहि वर्गक प्रत्याहारक जे 'क्ष' वर्णक थिक सएक भैरवी थिकीह। अतएव अवर्ग द्वारा भैरव एवं योनि वर्गक समाहारक "क्ष" वर्ण द्वारा भैरवीक पूजा कएल जाइछ। भौरवीए योगीश्वरी रूपा उमा थिकीह। अवशिष्ट "क" सँ लए "श" तक सप्त वर्ग द्वारा सप्त मातृकाक पूजा कएल जाइछ।[३५]

एहि आठहु वर्गक अधिष्ठातृदेवी जे सप्तमातृकाक नाम सँ प्रसिद्ध छथि उमा देवी थिकीह तथा ओ सात रूप मे अपना कें विभक्त कएलैन्ह अछि। एहि सातहुक नाम एवं स्वरूप एवंक्रमक अछि :—

अवर्गक अधिष्ठातृ देवी महालक्ष्मी थिकीह। ज्ञान दीप्तिमयी उमे महालक्ष्मी थिकीह। क वर्गक अधिष्ठातृदेवी ब्राह्मी थिकीह। ब्राह्मी कें कमलपत्र सन कान्ति छैन्ह तथा ओ दिव्य आभरण सँ अलंकृत छथि। ओ आग्नेयि दिशा मे स्थित छथि।

चवर्गक देवी माहेश्वरी थिकीह। शङ्ख एवं गायक दूध सन हुनकर कान्ति छैन्ह तथा ओ महातेजस्विनी छथि। ओ ईशान दिशा मे स्थित छथि। टवर्गक देवी कौमारी थिकीह। पद्मगर्भ सदृश हुनकर कान्ति एवं केयूर सँ अलंकृत हार छैन्ह। ओ उत्तर दिशा मे स्थित छथि।

---

२९ वरिवस्या रहस्यं, पृ० १७
३० शिव सूत्र वि०, पृ० ५४
३१ तृ० अध्याय, श्लोक ११
३२ वरिवस्या रहस्य, पृ० १७
३३ प्र० पटल १
३४ स्वच्छन्दोद्योत, प्रथम पटल पृ० २८
३५ स्वच्छन्दोद्योत, प्रथम पटल

तवर्गक देवी वैष्णवी थिकीह। स्निग्ध नीलोत्पल सदृश हुनकर कान्ति छैन्ह, हार एवं कुण्डल सँ ओ मण्डित छथि तथा दक्षिण दिशा मे स्थित छथि। पवर्गक देवी वाराही थिकीह। नील नीरद सन हुनकर कान्ति तथा समस्त आभरण सँ ओ आभूषित छथि। ओ वारुणी दिशा मे स्थित छथि।

यवर्गक देवी ऐन्द्री थिकीह। शङ्ख, कुन्द तथा इन्दु सन धवलहार एवं कुण्डल सँ ओ आभूषित छथि तथा उत्तर दिशा मे स्थित छथि। शवर्गक देवी चामुण्डा थिकीह। ओ प्रदीप्त एवं करालवदना छथि तथा नैऋत्य दिशा मे स्थित छथि।[३६]

मातृकाक कलासमूह वा वर्ण समूह केँ मातृका चक्र कहल जाइछ। मातृकाकेँ वर्णक माता, शक्ति, देवी रश्मि एवं कला नाम सँ अभिहित कएल जाइछ।[३७] ई वर्णहिक पर्यायवाची शब्द थिक। शक्ति, देवी रश्मि आदि नामहि द्वारा एवंक्रमक संकेत प्राप्त होइछ जे वर्ण केवल कल्पनामूलक नहि थिक। प्रत्येक वर्ण एक शक्ति-विशेष थिक। स्वयं

---

३६ (१) अवर्गे तु महालक्ष्मीः कवर्गे कमलोद्भवा ॥३४॥
चवर्गे तु महेशानी टवर्गे तु कुमारिका।
नारायणी तवर्गे तु वाराही तु पवर्गिका ॥३४॥
ऐन्द्री चैव यवर्गस्था चामुण्डा तु शवर्गिका।
एताः सप्तमहामातृः सप्तलोकव्यवस्थिता ॥३६॥
(स्वच्छ प्र० पटल)

(२) मातरः सप्तरूपिण्यो नानालङ्कारभूषिताः ॥१०१७॥
परिवार्य महात्मानं समन्तात पर्यवस्थिताः।
ब्राह्मी कमलपत्राभा दिव्याभरणभूषिता ॥१०१८॥
आग्नेय्यां दिशि देवेशि स्थिता वै श्रीरिवापरा।
शंखगोक्षीरसङ्काशा त्वैशान्यां तु वरानने ॥१०१९॥
माहेश्वरी महातेजास्तिष्ठते सुरपूजिता।
कौमारी पद्मगर्भाभा हीरकेयूरभूषिता ॥१०२०॥
दिश्युत्तरस्यां देवेशि कामिनीपर्युपासिता।
स्निग्धनीलोत्पलनिभा हारकुण्डल मण्डिता ॥१०२१॥
दक्षिणस्यां दिशि तु सा उपास्ते परमेश्वरम्।
वैष्णवीति च विख्याता शिवेन परमात्मना ॥१०२२॥
नीलजीमूतसङ्काशा सर्वाभरणभूषिता।
वारुण्यां दिशि देवेशि वाराही पर्युपस्थिता ॥१०२३॥
शङ्खकुन्देन्दुधवला हारकुण्डल मण्डिता।
ऐन्द्र्यां दिशि च सा देवी इन्द्राणी पर्युपस्थिता ॥१०२४॥
करालवदना दीप्ता सर्वाभरणभूषिता।
नैऋत्यां दिशि चामुण्डा उपास्ते परमेश्वरम् ॥१०२५॥
स्वच्छन्द, १० पटल।

३७. स्वाभासा मातृका ज्ञेया क्रियाशक्तिः प्रभोः परा।
तस्याः कलासमूही यस्तच्चक्रमिति कीर्तितम् ॥२६
शि० सू० वा० द्वितीयः प्रकाश

वर्णक निमित्त वर्ण शब्दक उल्लेख नहि भए वर्णभट्टारक नाम सँ एहि अभिधानक प्रयोग तन्त्र मे पाओल जाइछ।[३८]

मातृकाक वर्ण-रूपक सम्बन्ध मे कतिपय मत अछि। कामधेनुतन्त्र, सनतकुमार संहिता, सौभाग्य भास्कर, मातृकानाम माला आदि तन्त्रक ग्रन्थ मे वर्णक स्वरूपक वर्णन सन्निहित अछि।

वर्णक उत्पत्तिक सम्बन्ध मे गणपतितत्व[३९] मे उल्लिखित अछि जे अ, आ सँ मनुष्यक माँथ, ए, ऐ सँ कर्ण, तथा ओ, औ सँ कण्ठ और ग्रीवाक प्रतिनिधित्व होइछ। क अक्षर सँ प्रति जिह्वा, ख सँ मूलाधार, ग कटि, घ पायु, और ङ सँ उपस्थक प्रतिनिधित्व होइछ। च अक्षर सँ जांघ और नितम्बक, छ सँ टाँग और ठेंहुन, ज सँ केँहुनी तथा भुजापादक, तथा ञ सँ आँगुर और नखक बोध होइछ। ट अक्षर सँ नाभि, ठ हृदय, ड सँ गुह्यान्तर, ढ प्लीहा तथा ण सँ पङ्क्तिन बुझल जाइछ। त अक्षर सँ मनुष्यक पृष्ठ माँस, थ सँ वक्षोमाँस, दसँ जठर, ध सँ आन्त्र और न सँ हृदयक प्रतीति होइछ। प अक्षर सँ स्तनक, फ सँ पृष्ठ, ब अक्षर सँ ···, भ सँ बाहु हस्त तथा म अक्षर सँ फुप्फुसक तात्पर्य होइछ। य अक्षर सँ कण्ठ, र सँ तालु. ल सँ मूर्धा, व सँ प्रतिजिह्वा श सँ ऊर्ध्वोष्ठ और गाल, ष सँ जिह्वाग्र, स सँ अधरोष्ठ, ह सँ हृदय नाड़ी तथा केश धरिक सुरताधिक फलक बोध होइछ।

शिवमहापुराण, लिङ्गमहापुराण तथा मालिनी विजयोत्तर तन्त्र मे सेहो एहि प्रसंग मे चर्चा तँ पाओल जाइछ किन्तु एहि सभ मे स्थानक क्रम मे विभिन्नता अछि तथापि एहि सभ सँ निस्सृत होइछ जे प्रतिकृति एवं भाव रूप मे परिवर्त्तित चित्रलिपि कालक्रमेँ लिपिक आकार ग्रहण कए ई० सनक ५०० वर्ष पूर्व सँ २५० वर्ष पूर्व धरि एकरूपता केँ रखने रहल। तदुपरान्त ५०० ई० सन धरि अपन क्रमिक विकासक संग प्रान्तीयता एवं क्षेत्रीयताक रूप ग्रहण कएल जे ५०० ई० सँ ९०० ई० तकक युग मे तन्त्रक प्रभाव सँ कलात्मक रूप ग्रहण कए आधुनिक मिथिलाक्षर दिसि अग्रसर भेल। फक्युँहर ५०० ई० सँ ९०० ई० तकक युग केँ शाक्त युग कहलनि अछि।[४०] हुनका अनुसारेँ ९०० सँ १३०० ई० तकक युग मे अनेक यामल साहित्यक रचना भेल। अतएव मिथिलाक्षरक आधुनिक रूपक निर्माण विशेषतः एहि युग मे भेल जकरा पर तन्त्रक प्रभाव प्रत्यक्ष रूप मे परिलक्षित होइछ।

आधुनिक मिथिलाक्षरक उद्भव एवं विकासक क्रमिक इतिहासक प्रसंग मे नारायण पालक भागलपुर दानपत्रक लिपि, श्री चन्द्रक रामपल दानपत्रक लिपि, महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्रक लिपि, भोज वर्मनक वेलवा दानपत्रक लिपि, लक्ष्मण सेनक तरपण दिघी दानपत्रक लिपि तथा पक्षधर मिश्रकृत (ल० सं० ३४४ = १४६४ ईसवी) विष्णुपुराणक लिपिक तुलनात्मक अध्ययन चित्र सं० १ और २ मे प्रस्तुत कएल जाइछ।

---

३८ पार्थिरिशका, पृ० १८६

३९ पृ० १३६।

४० जे० एन० फक्युँहर, दि रिलिजियस क्वेस्ट आफ इण्डिया, पृ० १६७

श्री चन्द्रक रामपल दानपत्र तथा भोज वर्मनक वेलवा दानपत्र मे स्वर वर्णक अ आ और उ समान रूपें पाओल जाइछ। रामपल दानपत्र मे अ अक्षर साधारणतः एकहि तरहक अछि किन्तु वेलवा दानपत्र मे अ अक्षरक दुई गोट भेद पाओल जाइछ। पहिल भेद

	नारायण पालक भागलपुर दानपत्र	श्री चन्द्रक रामपाल दानपत्र	महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्र	भोजवर्मनक वेलवा दानपत्र	लक्ष्मण सेनक तर्पन दिघि दानपत्र	पक्षधर मिश्रक विष्णु पुराण
अ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
इ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ई					[illegible]	
उ	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ऊ						
ऋ						
ए		[illegible]				[illegible]
ऐ					[illegible]	
ओ				[illegible]		
औ						
क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ख	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ङ						
च	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
छ	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
ज	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
झ						
ञ				[illegible]		[illegible]
ट	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चित्र १

मे त्रिभुज अधिक चाकर अछि जे प्रायः समद्विबाहुक अपेक्षा समबाहु भए गेल अछि किन्तु दोसर भेद मे मस्तिष्क कें बढ़ि गेला सें उपकरण त्रिभुज मे परिणत भए गेल अछि जे त्रिभुजक एक भुजा कें वक्ररेखाक संग मिलवैत अछि तथा लम्बरेखाक नीचला भागक अन्तिम अंश कें जोड़ैत अछि। एहि तरहें आ अक्षर स्वरूपतः अ अक्षरहि सें बाहर भेल अछि। रामपल दानपत्र मे आ अक्षरक लम्बरेखाक अन्तिम भाग मे त्रिभुज पाओल जाइछ किन्तु वेलवा दानपत्र मे अ अक्षरहि सन आ अक्षरहु कें दुई गोट भेद अछि। पहिल भेद मे त्रिभुजक अभाव अछि किन्तु दोसर भेद मे त्रिभुज पाओल जाइछ। इ अक्षर एकहि तरहें रामपल दानपत्र मे पाओल जाइछ जकर मस्तक वाणाकार तथा दुहू कात दुई गोट छोट-छोट वृत्त पाओल जाइछ किन्तु वेलवा दानपत्र मे इ अक्षरक रूप मे किछु परिवर्त्तन भेल अछि।

एहि अक्षरक एहि रूप मे एक छोट वक्र समतल रेखा दुहू क्षेत्रक ठीक बीच मे जोड़ल गेल अछि। आन-आन स्वर वर्ण मे कोनहु तरहक विभिन्नता नहि अछि।

	नारायण पालक भागलपुर दानपत्र	श्रीचन्द्रक रामपाल दानपत्र	महिपाल प्रथमक बनगाद दानपत्र	भोजवर्मनक वेलवा दानपत्र	लक्ष्मण सेनक तर्पन दिघि दानपत्र	पक्षधर मिश्रक विष्णु पुराण
ठ						
ड						
ढ						
ण						
त						
थ						
द						
ध						
न						
प						
फ						
ब						
भ						
म						
य						
र						
ल						
व						
श						
ष						
स						
ह						

चित्र २

व्यंजन वर्णक प्रथम दुई वर्ण अर्थात् कवर्ग तथा चवर्ग मे समानता अछि। रामपल दानपत्रक ट अक्षर सन वेलवा दानपत्र मे वाम भागक लम्बरेखाक प्रधानतः अभाव अछि। रामपल दानपत्र मे ठ अक्षरक आकृति मौर्य अभिलेख सन पूर्णतः गोल अछि किन्तु वेलवा दानपत्र मे एहि अक्षरक रूप पूर्ण गोल नहि भए अर्द्ध वृत्त रूप मे अछि। त अक्षरक रूप दुहु दानपत्र मे समान रूपें अछि किन्तु थ अक्षरक रूप मे पूर्ण विभिन्नता अछि। रामपल दानपत्र मे एहि अक्षरक दुईगोट रूप अछि। ध अक्षरक रूप मे पूर्ण भिन्नता अछि। रामपल दानपत्र मे ध अक्षरक रूप गुप्त अभिलेख मे वर्णित सन अछि किन्तु वेलवा दानपत्र मे एहि अक्षरक रूप आधुनिक मिथिलाक्षर सन अछि। रामपल दानपत्र मे वर्णित न अक्षर मे जे रेखा नीचला भागक क्षेत्र कें दहिन भागक लम्बरेखाक संग मिलिबैत अछि ओ स्पष्ट नहि अछि किन्तु वेलवा दानपत्र मे ओ रेखा स्पष्ट रूपें वक्र अछि। पवर्गक म अक्षर मे भिन्नता पाओल जाइछ। एहि अक्षरक मिथिलाक्षरक जे रूप अछि ओहि मे अक्षरक चौड़ाई

जे नीचाक न्यून कोण कें अधिक विस्तृत बनबैत अछि तकर गुप्त अभिलेख मे अभाव अछि। एहि तरहें आन आन अक्षरहुँ मे विभिन्नता जे अछि ओकर कारण लिपिक प्राचीनता सं थिक। एहि चारू दानपत्रक लिपि तथा पक्षधर मिश्रकृत विष्णुपुराणक लिपि कें तुलनात्मक अध्ययन सँ प्रतीत होइछ जे रामपल दानपत्रक लिपिक सँग एहि सभहक लिपिक घनिष्ठ सम्बन्धे टा नहि अछि अपितु एहि सभहक लिपि वस्तुतः एके थिक। एहि प्रसंग मे अ तथा आ अक्षरक रूप जे वेलवा दानपत्र मे वर्णित अछि सएह वनगढ़ तथा तरपणदिघी दानपत्र मे पाओल जाइछ। रामपल दानपत्रक अ तथा आ अक्षर, जे त्रिभुजाकार भेला सन्ता उपर्युक्त दानपत्रक लिपि सँ भिन्न अछि नारायण पालक भागलपुर दानपत्रक अ तथा आ अक्षर तथा विष्णु पुराणक अ और आ अक्षर सं साम्य अछि तथा ई स्मरणीय थिक जे विष्णु पुराणमे एवं शिरधर दासक अन्धराठाढ़ी अभिलेखक लिपि मे दुहू तरहक अ एवं आ अक्षरक रूप पाओल जाइछ (चित्र सं० ३)

इ अक्षरक प्रारम्भिक रूप जे रामपल दानपत्र मे उल्लिखित अछि वनगढ़ दानपत्र मे नहि पाओल जाइछ किन्तु एहि तरहक इ अक्षरक रूप भागलपुर दानपत्रमे तथा विष्णुपुराण मे साधारणतः पाओल जाइछ। रामपल दानपत्र मे वर्णित जे ट अक्षरक रूप अछि ओ ने तँ वनगढ़ दानपत्र आ ने भागलपुर दानपत्रमे पाओल जाइछ किन्तु एहि तरहक रूप धर्मपालक खलिमपुर दानपत्र मे वर्णित अछि। थ अक्षरक जे रूप वनगढ़ दानपत्रमे अछि वएह रूप एहि सभ दानपत्र मे वर्णित अछि। द तथा ध अक्षर समानतः एकहि रूपक अछि। य अक्षरक पाछाँ मे जे वक्रता अछि ओ रामपलक दानपत्र सन अहु सभ मे पाओल जाइछ। एहि तरहें छ और द अक्षरक रूप सेहो अछि। रामपल दानपत्रमे जे र अक्षरक रूप पाओल जाइछ वनगढ़ दानपत्र, भागलपुर दानपत्र तथा विष्णुपुराण मे उपलब्ध अछि। रामपल दानपत्र मे वर्णित शक रूप वनगढ़ दानपत्रमे नहि पाओल जाइछ किन्तु वनगढ़ दानपत्र मे वर्णित शक रूप भागलपुर दानपत्र तथा विष्णुपुराणक शक रूप सँ साम्य अछि। आन-आन अक्षर सभहक संग सेहो एहि तरहक रूप पओल जाइछ।

लक्ष्मण सेनक तरपणदिघी दानपत्र मे वर्णित अ, आ, इ, ट, थ, द, ध, य, र, श, ष, स, और ह अक्षरमे किछु भिन्नता अछि जकर झुकाव मिथिलाक्षर सँ बंगलाक दिशि भेल अछि जकरा पर क्षेत्रीय प्रभाव पाओल जाइछ। कियाक तँ श्रीचन्द्रक रामपल दानपत्र तथा भोजवर्मनक बेलवा दानपत्र गौर देशक पुण्ड्र वर्धन भुक्तिक श्री विक्रमपुर स्कन्धावार सँ जारी कएल गेल छल। वेलवा दानपत्रक लिपिक प्रसंग मे डा० राधागोविन्द बसकक मत अछि जे एहि दानपत्रक लिपि एगारहम शताब्दीक उत्तरी लिपि थिक[४१] तथा रामपल दानपत्रक लिपिक प्रसंग मे हिनक कहब अछि जे एहि दानपत्रक लिपि एगारहम-बारहम शताब्दीक उत्तरी भारतक पूर्वी भागक लिपि थिक[४२] जकरा डा० आर० डी० बनर्जी

४१ एपिग्राफिया इण्डिका, भाग १२, पृ० ३७
४२ ओतहि, पृ० १३७

बंगलाक पूर्ववर्ती रूप मानैत छथि[४३] जे वस्तुतः मिथिलाक्षरक अतिरिक्त कोनो आन लिपि कथमपि नहि भए सकैछ। स्मरणीय थिक जे विष्णु पुराण सेहो गौर महिपालहिक प्रश्रयमे लिखल गेल छल।[४४] अतएव मिथिलाक्षरे बंगलाक पूर्ववर्ती रूप थिक। जकर पृथक-पृथक विश्लेषण एवं क्रमक अछि—

अ अक्षर अर्धविवृत मध्य स्वर थिक। सनतकुमार संहिताक अनुसार अ वर्णक स्वरूप शरच्चन्द्र सदृश, पञ्चकोणमय, शक्तित्रयुक्त, निर्गुण, त्रिगुणोपेत, कैवल्यमूर्ति विन्दु-तत्वमय प्रकृति स्वरूप अछि।[४५] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक एहि तरहक अछि—

"दक्षतः कुण्डली भुत्वा कुञ्चिता वामतो गता।
ततोर्द्धसङ्गता रेखा दक्षोर्द्धा तासु शङ्करः॥
विधिर्नारायणश्चैव सन्तिष्ठेत् क्रमतः सदा।
अर्द्धमात्रा शक्तिरूपा ध्यानमस्य च कथ्यते॥"

अर्थात् दहिन भाग सँ कुण्डली रूप भए पुनः वाम दिशि भए तखन ताहि क्रमे ओ रेखा अधोभागक अबलम्बन कए दक्षिण भाग मे पुनः ओ ऊर्ध्वमुख भए फेर वाम भाग मे दुइ कुण्डलीक रूपमे भए दहिन रेखाक अधोभाग पर रहए।

देवनागरीक अक्षरक आकृतिमे स्पष्ट रूपे एक रेखा देल जाइछ जकरा दहिन भागक रेखा सँ तँ सम्पर्क रहैछ किन्तु ऊर्ध्वमुखताक अभाव रहैछ। अतएव मिथिलाक्षरक आकृति मे ऊर्ध्व तथा अधोभागक मध्य आङ्कुचन रहैछ ताहि सँ रेखा एवं ओ संयुक्त भए माँथक अधोभाग पुनः एक दोसर आकुञ्चित रेखा दहिन भागमे ऊर्ध्वमुख होइछ।[४६]

एहितरहक अक्षरक निर्माण ई० सनक सातम शताब्दी सँ दशम शताब्दी मध्य मे भेल। ओ युग विशेषतः नागरी, शारदा तथा आधुनिक मिथिलाक्षरक उद्भवक युग छल। मिथिलाक्षर केँ अपन किछु पृथक विशेषता छैक जे नागरी सँ विभिन्नताक सूचक थिक। डा० आर० डी० वनर्जी नारायण पालक भागलपुर अभिलेखक लिपि केँ बंगलाक पूर्ववर्त्ती रूप माननलि अछि किएक तँ ओहि युग मे बंगला और मगध दुहू राजनीतिक दृष्टि मे एके छल।[४७] डा० वनर्जीक एहि कथन सँ ओ लिपि बंगलाक अपेक्षा मिथिलाक्षरक पूववर्त्ती रूपक कल्पना केँ अधिक पुष्टि करैछ किएक तँ भागलपुर प्रशस्ति, मुँगेर प्रशस्ति तथा नालन्दा प्रशस्ति आदि पाल राजा लोकनिक मुद्गिरि स्कन्धावार सँ जाड़ी

४३ सर आशुतोश मुखर्जी सिलवर जुबली-ग्रन्थ, अंक ३, भाग ३, पृ० २१२

४४ श्रीमद्गौडमहीभुजो गुरुदिने मार्गे च पक्षे सिते। १९। १९३८ विहार रिसर्च सोसाइटी, पुस्तकालय।

४५ अकाराद्याः स्वरा धूम्राः सिन्दुराभास्तु कादयः। डादिकान्ता गौरवर्णा अरुणाः पञ्च वादयः॥ लाकाराद्याः काञ्चनाभाः हकारान्त्यौ तडिन्निभौ इति।

४६ उर्ध्वाधः कुञ्चिता मध्ये रेखा तत्संगता भवेत्। शीर्षाधः कुञ्चिता रेखा दक्षोर्द्ध्वा कामरूपिणी॥

४७ इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टर्ली, भाग १२, पृ० २२१

कएल गेल छल। अतएव ओकर लिपि बंगलाक पूर्ववर्ती रूप नहि भए मिथिलाक्षरक पूर्वक रूप थिक। एहि प्रशस्ति मे वर्णित अक्षरक बाँम एवं दहिन अवयव शिरोभागक एक रेखा सँ वेष्ठित पाओल जाइछ जे श्रीधर दासक अंधराठाढ़ी अभिलेख एवं पक्षधरमिश्रक द्वारा लिखल विष्णुपुराण मे वर्णित अ अक्षर सँ साम्य अछि। एहि सभ अभिलेख तथा तालपत्र मे वर्णित अ अक्षरक प्रधानतः दुई गोट रूप मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र, गदाधर मन्दिर अभिलेख आदि मे उपलब्ध अछि जकर प्रचलन मिथिलाक क्षेत्र मे अद्यावधि पाओल जाइछ। अ अक्षरक आधुनिक रूप ब्रह्मीक 𑀅 अक्षर सँ निस्तृत भेल अछि।

आ अक्षर सेहो अ अक्षरे सन अर्धदीर्घ विवृत मध्य स्वर थिक। कामधेनुतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक स्वरूप शङ्खज्योतिर्मय, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रमय, पञ्चप्राणमय तथा परम कुण्डली रूप अछि।[४८] एहि अक्षरक लेखन प्रकारक प्रसंग मे वर्णोद्धारतन्त्र मे एवंक्रमें पाओल जाइछ :—

अकाररूपमासद्य दक्षक्रोड़ायता त्वधः।
ब्रह्मादयस्तथा शक्तिस्तासु तिष्ठन्ति नित्यशः।

आ अक्षरक ब्रह्मी रूप इएह 𑀆 थिक। एहि अक्षर सँ आधुनिक मिथिलाक्षर रूप निस्तृत भेल अछि जे कमौली, तरपनदिघि आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ।

भागलपुर, मुँगेर, बोधगया, नालन्दा आदि अभिलेख मे एहि अक्षरक शिरोभाग रेखाक निम्न छोड़ कौमाक आकारक अपेक्षा ओहि मे एक रेखा कें संलग्न कएला सँ आ अक्षरक रूप वर्णित पाओल जाइछ जकर पूर्ववर्त्ती रूप घोषरावन, हिलसा आदि अभिलेख मे उपलब्ध अछि जे आधुनिक आ अक्षर सँ पूर्ण तरहें साम्य अछि।

इ अक्षर संवृत ह्रस्व अग्रस्वर थिक। कामधेनुतन्त्रमे एहि अक्षरक स्वरूप कुसुमछवि, ब्रह्मा, विष्णु, और रुद्रमय, सदाशक्तिमय, गुरुब्रह्ममय, सदाशिवमय, गुणत्रयसमन्वित, मूर्त्तिमान कुण्डली रूप मे वर्णित अछि।[४९] वर्णोद्धारतन्त्रमे एहि अक्षरक लेखनक्रम एहि तरहें अछि—

---

४८ आकारं परमाश्चर्य्यं शङ्खज्योतिर्म्मयं प्रिये।
ब्रह्म विष्णुमयं वर्णं तथा रुद्रमयं प्रिये॥
पञ्चप्राणमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली।

४९ इकारं परमानन्दसुगन्धकुसुमच्छविम्।
हरिब्रह्ममयं वर्णं सदा रुद्रयुतं प्रिये॥
सदा शक्तिमयं देवि गुरु ब्रह्ममयं तथा।
सदाशिवमयं वर्णं परं ब्रह्मसमन्वितम्॥
हरिब्रह्मात्मकं वर्णं गुणत्रय समन्वितम्।
इकारं परमेशानि स्वयं कुण्डली मूर्त्तिमान्॥

ऊर्द्धाधः कुञ्चिता मध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत् ।
लक्ष्मीर्व्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात्तास्वेव संवसेत् ॥
शीर्षाधःकुञ्चिता रेखा दक्षोर्द्धा: कामरूपिणी ।
मात्राशक्तिः कोणयुता ध्यानमस्य प्रचक्ष्यते ॥

इ अक्षरक पूर्ववर्त्ती रूप एहि तरहक छल जे क्रमशः तथा भेल । केदरपुर तथा रामपल अभिलेखक एहि अक्षर मे एक टेढ़ रेखा कें ऊपर सँ नीचाँ दिसि जोड़ि कए आधुनिक मिथिलाक्षरक प्रथम प्रयासक संकेत कएल गेल अछि । वेलवा तथा देवपारा अभिलेख मे विन्दुक नीचाँ मे एक किछु टेढ़ रेखाक निर्माण भेल तथा गोविन्दपुर, सुन्दरवन तथा बोधगया अभिलेख मे मस्तकक दुहू विन्दु कें तिरछी रेखा सँ संयुक्त कएल गेल जे आधुनिक मिथिलाक्षरक प्रतिरूप थिक ।

ई अक्षर इक संवृत दीर्घ स्वर थिक । कामधेनुतन्त्र मे पीतविद्य ुतक सदृश आकृति-युक्त, परमकुण्डली रूप, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रमय पञ्चदेव, पञ्चप्राण तथा चतुर्ज्ञानमय रूप मे उल्लिखित अछि ।[५०] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहक अछि :—

ऊर्द्धाधः कुञ्चितामध्ये त्रिकोनाधोगता पुनः ।
अधोगता कोणशीर्षा कुञ्चिता दक्षतः शुभा ॥
शीर्षाद्दक्षे कोणयुता कुञ्चितोर्द्धगता पुनः ।
चन्द्र सूर्याग्निरूपा सा मात्राशक्तिः प्रकीर्त्तिता ॥

अर्थात् ऊर्ध्व भाग सँ मध्य मे कुञ्चित भए एक रेखा केन्द्र मे जाइछ तथा त्रिकोणक अधोगत पुनः एक रेखा होइछ अर्थात् रेखाक पारस्परिक मिलन सँ जे कोणक निर्माण तथा ओहि सँ तीन कोणक समाहार होइछ पुनः दहिन भागक आकुञ्चन द्वारा एक रेखा अधः अबैछ तथा स्वयं ऊर्ध्वमुख होइछ ।

ई अक्षरक प्रयोग प्राचीन अभिलेख एवं हस्तलिखित ग्रन्थ मध्य बड़ कम रूप मे पाओल जाइछ । विद्यादेवक कमौली प्रशस्ति मे जे दीर्घ ई कें प्रयोग कएल गेल अछि ओकर उद्‌भव मे दक्षिणी प्रभाव परिलक्षित अछि ।[५१] ई अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप जाइंकदेवक दशम शताब्दीक दानपत्र तथा चन्द्रदेवक एगारहम वा बारहम शताब्दीक दानपत्रक लिपि मे पाओल जाइछ ।

५० ईकारं परमेशानि स्वयं परम कुण्डली ।
ब्रह्मविष्णुमयं वर्णं तथा रुद्रमयं सदा ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्य ुल्लताकृतिम् ।
चतुर्ज्ञानमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।

५१ जार्ज बूलर, भारतीय पुरालिपि शास्त्र, फलक ५, १९-४

(चित्र सं० ३ क-ख)
अन्धराठाढ़ी अभिलेख

[illegible]

(चित्र सं० ३ ग)

[illegible]

(चित्र सं० ३ घ)

विष्णुपुराणक पाण्डुलिपि मे मिथिलाक्षरक रूप

उ अक्षर संवृत ह्रस्व पश्च स्वर थिक। कामधेनुतन्त्र मे उ अक्षरक स्वरूप पीतचम्पक सदृश, अधः कुण्डलिनी, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय एवं चतुर्वर्गप्रद वर्णित अछि।[५२] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि तरहक अछि :—

ऊर्द्धाधो मध्यतः कुञ्जारेखा वामगता शुभा
तिष्ठन्ति वायुवह्नीन्द्राः शक्तिमात्रा परास्मृता।

प्राचीन अभिलेख मे एहि अक्षरक रूप पाओल जाइछ जाहि मे शिरोरेखा अछि तथा ओकर नीचला आड़ि रेखाक अंतिम भाग नीचाँ झुकल पाओल जाइछ। एहेन रूप कुशानवंशी राजाक लेख मे वर्णित अछि। एहि अक्षरक विकसित रूप तथा थिक जे आधुनिक मिथिलाक्षरक प्रारम्भिक रूप थिक। उ अक्षरक एहि तरहक आकृति गंजम ताम्रपत्र तथा लोकनाथक दानपत्र मे पाओल जाइछ। उ अक्षरक आकृति यद्यपि कमौली दानपत्र मे किछु भिन्न अछि जेना कि एहि मे उल्लिखित उ अक्षरक रूप मे शिरोरेखाक स्थान मे धोधरिदार रेखा एवं लम्बरेखा भीतर दिसि झुकल तँ पाओल जाइछ किन्तु अन्तिम झुकाव मे किछु अभाव परिलक्षित अछि। एहि तरहक रूप आधुनिक देवनागरीक उ अक्षर दिसि अग्रसर होएबाक बोध करबैछ।

ऊ अक्षर संवृत दीर्घ पश्च स्वर थिक। एहि अक्षरक स्वरूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार शङ्ख और कुन्दक सदृश आकारयुक्त, परमकुण्डली, पञ्चप्राण तथा पञ्चदेवमय, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और सदा सुखप्रद अछि।[५३] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि तरहक अछि :—

तद्रूपाधोगता रेखा कुञ्चिता वामतः शुभा।
तद्रूपा पूर्वोक्तोकाररूपा।
तिष्ठन्ति तासु रेखासु यमाग्निवरुणाः क्रमात।
अधोर्द्धगामिनी मात्रा लक्ष्मीर्वाणी चसा स्मृता॥

ऊ अक्षरक व्यवहार बड़ कम रूप मे पाओल जाइछ।

ऋ अक्षरक स्वरूप कामधेनुतन्त्र मे मूर्त्तिमान कुण्डली, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रमय, सदा-

---

५२ उकारं परमेशानि अधः कुण्डलिनी स्वयम्।
पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा।
पञ्चप्राणमयं देवि चतुर्वर्ग प्रदायकम्।

५३ शङ्खकुन्दसमाकारं ऊकारं परमकुण्डली।
पञ्चप्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा।
धर्मार्थकाममोक्षं च सदासुखप्रदायकम्॥

शिवयुक्त, ईश्वर संयुक्त, पञ्चवर्ण, तथा चतुर्ज्ञानमय एवं रक्तविद्युत सदृश वर्णित अछि।[५४] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक क्रम एहि तरहक अछि :—

ऊर्द्धाद्दक्षगता वक्रा त्रिकोणा वामतस्ततः।
पुनरुधोदक्षगता मात्रा शक्तिः परा स्मृता॥
मात्रासु ब्रह्म विष्ट्वी शास्तिष्ठन्ति क्रमतः परा॥

एहि अक्षरक प्रयोग विशेषतः तन्त्रक ग्रन्थ मे पाओल जाइछ।

ॠ अक्षरकक आकृति कामधेनुतन्त्रक अनुसार परमकुण्डली, पीतविद्युत् सदृश, पञ्चदेव तथा चतुर्ज्ञानमय, पञ्चप्राणयुक्त एवं त्रिशक्ति सहित अछि।[५५] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन क्रम एवंक्रमक अछि :—

तद्रूपाधोगता दक्षा वामतः कुञ्चिता त्वधः।
पुनर्द्दक्षगता रेखा तासु ब्रह्मेशविष्णवः।
मात्राशक्तिः परा ज्ञेया ध्यानमस्य प्रवक्ष्यते॥

एहू अक्षरक प्रयोग विशेषतः तन्त्रक ग्रन्थे मे पाओल जाइछ।

ऌ अक्षरक स्वरूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार पीतविद्युत् सदृश, कुण्डली, परदेवता ब्रह्मादि देवक निवासस्थान पञ्चदेव, चतुर्ज्ञान तथा पञ्चप्राणमय, गुणत्रयात्मक एवं विन्दुत्रयात्मक अछि। वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि तरहक अछि—

रेखाधः कुण्डली वक्रा दक्षतो वामतो गता।
वह्नीशवायवस्तासु नित्यं सन्ति च नित्यशः।

एहि अक्षरक प्रयोग बड़ कम रूप मे होइत अछि।[५६]

ए अक्षर अर्धसंवृत दीर्घ अग्रस्वर थिक। कामधेनुतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक रूप रञ्जनीकुसुम सन, ब्रह्मा-विष्णु-शिवात्मक, पञ्चदेवमय, पञ्चप्राणात्मक, विन्दुत्रयात्मक

---

५४ ऋकारं परमेशानि कुण्डली मूर्त्तिमान् स्वयम्।
अत्र ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्रश्चैव वरानने।
सदाशिवयुतं वर्णं सदा ईश्वरसंयुतम्।
पञ्चप्राणमयं वर्णं चतर्ज्ञानमयं तथा।
रक्त विद्युल्लताकारं ऋकारं प्रणमाम्यहम्॥

५५ ॠकारं परमेशानि स्वयं परमकुण्डलम्।
पीत विद्युल्लताकारं पञ्चदेवमयं सदा।
चतुर्ज्ञानमयं वर्णं पञ्चप्राणयुतं सदा।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं प्रणमामि सदा प्रिये॥

५६ ऌकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डली परदेवता।
अत्र ब्रह्मादयः सर्वे तिष्ठन्ति सततं प्रिये।
पञ्चदेवमयं वर्णं चतुर्ज्ञानमयं सदा।
पञ्चप्राण शुतं वर्णं तथा गुणत्रयात्मकम्।
विन्दुत्रयात्मकं वर्णं पीत विद्युल्लता तथा॥

चतुर्वर्गप्रद एवं परमकुण्डली सन अछि।[५७] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि तरहक अछि :—

कुञ्चिता वामतो रेखा दक्षकोणायता त्वधः।
पुनर्व्वामगता सैव तासु वह्नीशवायवः॥

एहि अक्षरक रूप △ छल जे पश्चात् ▽ तथा ▽ भेल। एहि तरहक रूप समुद्रगुप्त तथा अन्य राजाक लेख मे उपलब्ध अछि। मुँगेर तथा नालन्दा दानपत्र मे तथा वादल स्तम्भ अभिलेख मे एहि अक्षरक बाँमा भाग खाली पाओल जाइछ जाहि सँ मिथिलाक्षरक आधुनिक रूप नितान्त साम्य अछि। एहि अक्षरक उपर्युक्त रूप खलिमपुर, एवं घोषरावन अभिलेख मे सेहो पाओल जाइछ। एहि अक्षरक आधुनिक रूपक उल्लेख मान्दा अभिलेख, विश्वरूप सेनक मदनपाद दानपत्र, अशोकाचलक बोधगया अभिलेख, तथा गयाक गदाधर मठक अभिलेख मे पाओल जाइछ।

ऐ अक्षरक रूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार कोटिचन्द्र सदृश, महाकुण्डलिनी, पञ्चप्राण, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रमय, सदाशिवमय तथा विन्दुत्रययुक्त अछि।[५८] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि तरहक अछि :—

एकाररूपमध्येतु किञ्चिद्दक्षे तदोर्द्धतः।
चन्द्रेन्द्रभानवस्तासु मात्राशक्तिः क्रमात् स्मृताः।
त्रिधा शक्तिमयी पूर्व्वा दुर्गा वाणी सरस्वती॥

एहि अक्षरक प्रयोग बड़ कम मात्रा मे उपलब्ध अछि।

ओ अक्षरक रूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार रक्तविद्यु त् सदृश, पञ्चदेवमय, त्रिगुणात्म, ईश्वर, पञ्चप्राणमय, देवमाता तथा परम कुण्डली सन अछि।[५९] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि तरहेँ अछि :—

वामतः कुण्डली भूत्वा दक्षान्मध्ये तु कुञ्चिता।
किञ्चिद्दक्षगता या तु कुञ्चिता वामतस्त्वधः।
ब्रह्मेशविष्णवस्तासु मात्रा तु ब्रह्मरूपिणी।
शक्तिश्च परमा सैव ध्यानमस्य प्रचक्ष्यते॥

---

५७ एकारं परमेशानि ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम्।
रक्तनीकुसुमप्रख्यं पञ्चदेवमयं सदा।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं तथा विन्दुत्रयात्मकम्।
चतुर्वर्गप्रदं देवि स्वयं परमकुण्डली॥

५८ ऐकारं परमं दिव्यं महाकुण्डलिनी स्वयम्।
कोटिचन्द्रप्रतीकाशं पञ्चप्राणमयं सदा।
ब्रह्मविष्णुमयं वर्णं विन्दुत्रयसमन्वितम्॥

५९ ओकारं चञ्चलापाङ्गि पञ्चदेवमयंसदा।
रक्त विद्युल्लताकारं त्रिगुणात्मानमीश्वरम्॥
पञ्चप्राणमयं वर्णं नमामि देव मातरम्।
एतद्वर्णं महेशानि स्वयं परम कुण्डली॥

एहि अक्षरक आधुनिक रूप बल्लालसेनक नैहाटी अभिलेख मे पाओल जाइछ।[६०]

औ अक्षरक रूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार रक्तविद्युत सदृश, कुण्डली, ब्रह्मादिदेवक निवास, पञ्चप्राण तथा सदाशिवमय, ईश्वर संयुक्त एवं चतुर्वर्गप्रद अछि।[६१] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहिक्रमें पाओल जाइछ :—

ओकारमध्यदक्षे तु गता तूर्द्धगतायता ।
किञ्चित सा वामतो वक्रा तासु ब्रह्मेशविष्णवः ।
शक्ति मध्यगता रेखा ध्यानमस्य प्रवक्ष्यते ।

एहि अक्षरक प्रयोग कम रूप मे पाओल जाइछ।

अं अक्षरक स्वरूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार पीतविद्युत सदृश, पञ्चप्राणात्मक, ब्रह्मादिदेव तथा सर्वज्ञानमय, विन्दुत्रयसमन्वित अछि।[६२] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि कमें पाओल जाइछ :—

अकाररूप शीर्षे तु दक्षिणे विन्दुरूपिणी ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्रमशस्तासु तिष्ठति ।
यातु विन्दुमयी रेखा सैवाद्या शक्तिरीरिता ।।

एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप कमौली दानपत्र मे पाओल जाइछ तथा अन्यत्र वाक्यक ऊपर शुन्याकार रूप मे प्रयोग पाओल जाइछ। एहि तरहक प्रयोग अशोकाचलक बोधगया अभिलेख, गदाधर मठ अभिलेख तथा तरपनदिघि दानपत्र मे पाओल जाइछ।

अः अक्षरक स्वरूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार रक्तविद्युत्कान्ति, पञ्चदेव, पञ्चप्राण तथा सर्वज्ञानमय, आत्मादितत्व सँ युक्त विन्दुत्रय तथा शक्तित्रयात्मक अछि।[६३] वर्णोद्धार-तन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि रूपें अछि :—

अकाररूप दक्षेतु द्विविन्दुरथ ऊर्द्धतः ।
ब्रह्मेश विष्णवस्तासु मात्रा शक्तिः समीरिता ।
विन्दुद्वयान्विता रेखा क्षैवाद्या शक्तिरीरिता ।।

---

६० वंगीय साहित्य परिषद् पत्रिका, भाग १६, पृ० २३८

६१ रक्तविद्युल्लताकारं औकारं कुण्डली स्वयम् ।
अत्र ब्रह्मादयः सर्वे तिष्ठन्ति सततं प्रिये ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं सदा शिवमयं सदा ।
सदा ईश्वरसंयुक्तं चतुर्वर्गप्रदायकम् ।।

६२ अङ्कारं विन्दुसंयुक्तं पीतविद्युत्समप्रभम् ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं ब्रह्मादिदेवतामयम् ।
सर्वज्ञानमयं वर्णं विन्दुत्रयसमन्वितम् ।

६३ अःकारं परमेशानि विसर्गसहितं सदा ।
······················रक्तविद्युत्प्रभामयम् ।।
पञ्चदेवमयो वर्णः पञ्चप्राणमयः सदा ।
सर्वज्ञानमयो वर्णः आत्मादितत्वसंयुतः ।।
विन्दुत्रयमयो वर्णः शक्तित्रयमयः सदा ।

एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप ढाका अभिलेख मे पाओल जाइछ।[६४]

क अक्षरक स्वरूप कामधेनुतन्त्रक अनुसार जपा, यावक तथा सिन्दुर सदृश कान्तिशालिनी, चतुर्भुजा, त्रिनेत्रा, बाहुलता सँ शोभित, कदम्बक कलिक आकार सन स्तन सँ विभूषित, रत्न, कङ्कण, केयूर तथा अङ्गद सँ सुशोभित तथा पुष्पहार सँ मण्डित परमेश्वरी कामिनी रूप अछि।[६५] एहि अक्षरक लेखन प्रकारक प्रसंग मे वर्णोद्धारतन्त्र मे एवंक्रमेँ उल्लेख पाओल जाइछ—

वामरेखा भवेद्ब्रह्मा विष्णुर्दक्षिण रेखिका।
अधोरेखा भवेद्रुद्रो मात्रा साक्षातसरस्वती॥
कुण्डली चाङ्कुशाकारा मध्यशून्यं सदाशिवः।
कदम्बगोलकाकारं ककारं भावयेत् सुधीः॥

क अक्षर अल्पप्राण अघोष स्पर्श थिक। अशोकक ब्रह्मी मे एहि अक्षरक लिखावट + होइत छल। एकरहि विकसित रूप तथा थिक जे आधुनिक मिथिलाक्षरक पूर्ववर्त्ती रूप थिक। एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप मान्दा अभिलेख, तरपनदिघि दानपत्र, बोधगया अभिलेख, गदाधर मन्दिर अभिलेख आदि मे पाओल आइछ।

ख अक्षर महाप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक। एहि अक्षरक स्वरूप कामधेनुतन्त्र मे कुण्डलीत्रययुक्त, शङ्ख तथा कुन्द सन कान्तिशाली, त्रिकोण तथा विन्दुत्रय संयुक्त, गुणत्रय, पञ्चदेव एवं शक्तित्रयविशिष्ट, सामान्यतया सर्वशक्त्यात्मक कहल गेल अछि।[६६] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रकारक प्रसंग मे एहि तरहेँ उल्लिखित अछि—

"शिवरूपा वामरेखा दक्षरेखा प्रजापतिः।
अधोरेखा विष्णुरूपा साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपिणी॥
वामाद्यामगता रेखा वह्निरूपा च सा स्मृता।
मात्रा कुण्डलिनी साक्षात् खकारः पञ्चदैवतः॥
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
वन्धूकपुष्प सङ्काशां रत्नालङ्कारभूषिताम्॥

६४ ज० एण्ड प्रो० ए० सो० आफ बं, भा० ९, पृ० २९०

६५ जपायावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं पराम्।
चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजिताम्।
कदम्बकोरकाकारस्तनद्वयविभूषिताम्।
रत्नकङ्कणकेयूरैरङ्गदैरुपशोभिताम्।
रत्नहारैः पुष्पहारैः शोभितां परमेश्वरीम्।
एवं हि कामिनीं ध्यात्वा ककारं दशधा जपेत्।

६६ खकारं परमेशानि कुण्डलीत्रयसंयुतम्।
खकारं परमाश्चर्यं शङ्खकुन्दसमप्रभम्॥
कोणत्रययुतं रम्यं विन्दुत्रयसमन्वितम्।
गुणत्रययुतं देवि पञ्चदेवमयं सदा।
त्रिशक्तिसंयुतं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं प्रिये॥

वराभयकरीं नित्यामीषद्धास्यमुखीं पराम् ।
एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।।"

ख अक्षरक ̣ रूप अशोकक अभिलेखक रूप थिक जे आधुनिक मिथिलाक्षरक पूर्ववर्त्ती रूप थिक। यद्यपि पश्चातक अभिलेख मे एहि अक्षरक आकृति देवनागरीक दिसि अग्रसर भेल किन्तु पुस्तक लेखन एवं पूर्वी भारतक अभिलेख मे अपन पूर्वक रूप कें सुरक्षित रखवाक प्रवृत्ति पाओल जाइछ। मुंगेर, भागलपुर तथा नालन्दा ताम्रपत्र अभिलेख मे अक्षरक नीचांक लम्ब रेखाक त्रिकोण विस्तृत तथा बाँम भागक नीचांक छोट रेखा टेढ़ पाओल जाइछ जे आधुनिक मिथिलाक्षरक पूर्ण रूप थिक। एहि अक्षरक आधुनिक रूप कमौली दानपत्र, तरपनदिघि दानपत्र, गदाकर मन्दिर अभिलेख मे उपलब्ध अछि।

ग अक्षर अल्पप्राण सघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप पञ्चदेवतात्मक, निर्गुण, त्रिगुणोपेत, निरीह, निर्मल, पञ्चप्राणमय, अरुणादित्यक सदृश कुण्डली रूप वर्णित अछि।[६७] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग मे एवंक्रमें वर्णित अछि :—

"अधः कुञ्चितरेखा या गाणेश सा प्रकीर्त्तिता।
ततो दक्ष गता या तु कमला तत्र संस्थिता।
अधोगता ततो या तु तस्यामीशः सदा वसेत् ।।"
अधो मुखेन गता पुनरुर्द्धमुखेनागतेत्यर्थः ।।

अशोकक अभिलेख मे ग अक्षरक रूप ∧ पाओल जाइछ। आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप मे ऊपरक कोणक स्थान मे वक्रता पाओल जाइछ। एहि तरहक रूप मथुराक क्षत्रप राजा सोडास तथा उषवदासक अभिलेख मे उपलब्ध अछि। मान्दा अभिलेखक एहि अक्षर मे समद्विवाहु त्रिभुज कतहु तँ पाओल जाइछ और कतहु ओ कुटिल रूप मे परिवर्त्तित उपलब्ध अछि। एहि तरहक परिवर्त्तन कमौली दानपत्र मे तँ पाओल जाइछ किन्तु तरपनदिघि दानपत्र मे समद्विवाहु त्रिभुजक रूप मे अछि। गदाधर मन्दिर अभिलेख मे दुहू रूप पाओल जाइछ तथा अशोकाचलक वोधगया अभिलेख मे त्रिकोणक अभाव अछि।

घ अक्षर महाप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक स्वरूप चतुष्कोणात्मक, पञ्चदेवमय, तरुणादित्य-सदृश, त्रिगुणोपेत, सर्वगति, सर्वप्रद

---

६७ गकारं परमेशानि पञ्चदेवात्मकं सदा।
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं निरीहं निर्मलं सदा।
पञ्चप्राणमयं वर्णं गकारं प्रणमाम्यहम्।
अरुणादित्यसङ्काशं कुण्डलीं प्रणमाम्यहम् ।।

तथा शान्त अछि।[६८] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग मे एहि तरहेँ वर्णित अछि :—

"सृष्टिरूपा वामरेखा किञ्चिदा कुञ्चिता ततः।
कुण्डलीरूपमास्थाय ततोऽधोगत्य दक्षतः॥
अत ऊर्द्धं गता शम्भुर्नारायणस्तयोः।
ब्रह्मस्वरूपिणी देवि! मात्राशक्तिः प्रकीर्त्तिता॥"

घ अक्षरक ब्राह्मी रूप इएह ⅃ थिक जे अशोकक अभिलेख मे पाओल जाइछ। एकर दोसर रूप ⅃ थिक जाहि मे शिरोरेखा बनाओल गेल अछि तथा दहिन भागक दुहू ऊर्ध्व रेखाक ऊँचाई बनाओल गेल अछि। एहि तरहक रूप मालवाक राजा यशोधर्मक मन्दसौर अभिलेख मे पाओल जाइछ। एकरहि मस्तक रेखा केँ पूर्णरूपेँ बनौला तथा अक्षर केँ किछु टेढ़ लिखला सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप बनल। घ अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप बोधगया अभिलेख, तरपनदिघि अभिलेख तथा गधाकर मन्दिर अभिलेख मे उपलब्ध अछि।

ङ अक्षर अल्पप्राण कंठ्य अनुनासिक ध्वनि थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप परम कुण्डली रूप, त्रिगुण एवं सर्वदेवमय तथा पञ्चप्राणमयरूप वर्णित अछि।[६९] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहेँ उल्लिखित अछि :—

"ऊर्द्धाधः क्रमतो रेखा किञ्चिदाकुञ्चिता ततः।
अधोगता कुण्डली तु मात्रा शक्तिस्वरूपिणी॥
रेखात्रयेषु ब्रह्मेशविष्णवः सन्ति देवताः॥

ङ अक्षर अशोकक अभिलेख मे नहि पाओल जाइछ। एकर [रूप सर्व-प्रथम समुद्रगुप्तक एक लेखक संयुक्ताक्षर सँ लेल गेल अछि।[७०] पश्चात् एकर नीचला भागक गोलाई बढ़ौला सँ एहि अक्षरक आकृति ङ सन होमय लागल। एहि अक्षरक अन्तिम छोड़ कतहु चतुरस्त्र, कतहु त्रिकोण और कतहु वर्त्तुलाकार पाओल जाइछ। आधुनिक मिथिलाक्षर मे ऊपर जे गेंठ अछि ओकर प्रादुर्भाव ई० सनक आठम शताब्दी मे भेल।

---

६८ घकारं चञ्चलापाङ्गि चतुष्कोणात्मकं सदा।
पञ्चदेवमयं वर्णं तरुणादित्यसन्निभम्।
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं सदा त्रिगुणसंयुतम्।
सर्वगं सर्वदं शान्तं घकारं प्रणमाम्यहम्॥

६९ ङकारं परमेशानि स्वयं परमकुण्डली।
सर्वदेवमयं वर्णं त्रिगुणं लोललोचने॥
पञ्चप्राणमयं वर्णं ङकारं प्रणमाम्यहम्।

७० ओझा, प्राचीन लिपिमाला, लिपिपत्र—३

च अक्षर अल्पप्राण अघोष थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप चतुर्वगंप्रद, कुण्डली सँ युक्त परम कुण्डलीरूप, रक्त विद्युत् सदृश, त्रिगुण, पञ्चदेव, पञ्चप्राण, त्रिशक्ति तथा विन्दुत्रययुक्त वर्णित अछि।[७१] एहि अक्षरक आधुनिक रूप यद्यपि यर्थाथतः अशोकक अभिलेखहिक रूप थिक, तथापि एहि अक्षरक आकृति मे पूर्ण परिवर्त्तन सुन्दरवन तथा चित्रगाँव प्रशस्ति मे पाओल जाइछ जे आधुनिक मिथिलाक्षर सँ पूर्णतः साम्य अछि। मान्दा अभिलेख मे एहि अक्षर मे शिरोरेखा सँ एक लम्ब रेखा नीचा दिसि जे लम्बरेखाक बॉम भाग मे अर्द्धवृत्ताकार घूमि अन्त मे लम्ब रेखा सँ संलग्न भए जाइछ ओकर पूर्ववर्त्तीरूप देवपारा प्रशस्ति मे पाओल जाइछ। तरपनदिघि दानपत्र तथा दिनाजपुर स्तम्भ अभिलेखक अक्षर देवपारा प्रशस्ति सँ पूर्णतः साम्य अछि। ढाका अभिलेख, तरपनदिघि दानपत्र, गदाधर मन्दिर अभिलेख आदि मे च अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षररूप पाओल जाइछ।

छ अक्षर महाप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप परमकुण्डलीरूप, कुण्डली संयुक्त, पञ्चदेव, पञ्चप्राण, त्रिशक्ति, त्रिविन्दु एवं ईश्वरयुक्त पीत विद्युत् सदृश वर्णित अछि।[७२] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग मे एहि तरहेँ वर्णित अछि :—

ऊर्द्धादधोगता रेखा कुञ्चिता कुण्डली ततः।
पुनश्चाधोगता तासु सन्ति ब्रह्मेशविष्णवः।

छ अक्षरक इएह रूप अशोकक अभिलेख मे उपलब्ध अछि। एकर एहि रूप मे ठाढ़ रेखा वृत्त केँ पार कए बाहर भए गेल अछि। तरपनदिघि दानपत्रक छ अक्षर एकरहि विकसित रूप थिक जे देवपारा प्रशस्ति, कमौली दानपत्र आदि मे पाओल जाइछ।

ज अक्षर अल्पप्राण सघोष स्पर्श संघर्षी व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप मध्यकुण्डली रूप, शरच्चन्द्र सदृश, त्रिगुण, पञ्चदेव, पञ्चप्राण, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु

---

७१ चवर्णं शृणु सुश्रोणि चतुर्वगंप्रदायकम्।
कुण्डली सहितं देवि स्वयं परमकुण्डली॥
रक्तविद्युल्लताकारं सदा त्रिगुण संयुतम्।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दु सहितं सदा॥

७२ छकारं परमाश्चर्यं स्वयं परमकुण्डली।
सततं कुण्डलीयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा।
पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं सदा ईश्वरसंयुतम्।
पीतविद्युल्लताकारं छकारं प्रणमाम्यहम्॥

सहित वर्णित अछि।[७३] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग मे एहि क्रमें उल्लिखित अछि :—

"ऊर्द्धाधःकुञ्चिता रेखा तासु ब्रह्मेशसंविभुः।
वागुदेवी कमला नित्या द्विधा प्रकीर्त्तिता"॥

एहि अक्षरक अशोकक अभिलेख मे वर्णित रूप छल जे पश्चात् भेल। आधुनिक मिथिलाक्षारक जे रूप अछि ओ एहि रूपक विकसित रूप थिक। ज अक्षरक जे रूप मान्दा अभिलेख मे पाओल जाइछ ओ आधुनिक मिथिलाक्षर सँ पूर्णतः साम्य अछि जकर आकृति कमौली, तरपनदिघि, बोधगया आदि कतिपय अभिलेख मे उपलब्ध अछि।

झ अक्षर महाप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डली तथा मोक्षरूप, रक्त विद्युत् सदृश, त्रिगुणयुक्त, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणात्मक, त्रिविन्दु, त्रिशक्ति एवं ईश्वर संयुक्त उल्लिखित अछि।[७४]

वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि क्रमें वर्णित अछि :—

त्रिकोणकुण्डलीरूपा वामदक्षिणयोगतः।
क्रमशस्तासु तिष्ठन्ति चन्द्रसूर्य्याग्नयः प्रिये॥
तत्र क्रोड़गता मात्रा शक्तिब्रह्मस्वरूपिणी।
ऊर्द्धमात्रातथेन्द्राणी मध्ये नारायणी स्मृता॥

झ अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप कमौली दानपत्र, अनुलिया तथा साहित्य परिषद दानपत्रक लेख मे उपलब्ध अछि।

ञ अक्षर सघोष अल्पप्राण तालव्य अनुनासिक ध्वनि थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप रक्तविद्युल्लता तुल्य, परमकुण्डली रूप, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, त्रिशक्ति एवं त्रिविन्दु सहित कहल गेल अछि।[७५]

---

७३ जकारं परमेशानि या स्वयं मध्यकुण्डली।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं सदा त्रिगुण संयुतम्॥
पञ्चदेव मयंवर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा।
त्रिशक्ति सहितं वर्णं विन्दु सहितं प्रिये।

७४ झकारं परमेशानि कुण्डलीमोक्षरूपणी।
रक्त विद्युल्लताकारंसदा त्रिगुणसंयुतम्।
पञ्चदेवमयं पञ्चप्राणात्मकं सदा।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।

७५ सदा ईश्वरसंयुक्तं ञकारं शृणु पार्वती।
रक्तविद्युल्लताकारं स्वयं परमकुण्डली।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा॥

वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग मे एहि तरहेँ वर्णित अछि :—

कुण्डलीरूपमास्थाय दक्षतो वामतस्ततः ।
ऋजुरेखाधोगता मात्रा वामतः कुञ्चिता पुनः ॥
तिष्ठन्ति तासु नित्यासु सूर्य्येन्द्रवरुणाः सदा ।
कुण्डलीद्वयरूपा तु या मात्रा मध्यतः स्थिता ॥
महाशक्तिस्वरूपा सा ध्यानमस्य प्रचक्षते ॥

ञ अक्षर संस्कृतक अभिलेख मे संयुक्ताक्षर मे तथा प्रधानतः प्राकृत लेख मे उपलब्ध होइछ । एहि अक्षरक और रूप प्रारम्भक रूप थिक । एहि अक्षरक अधुनिक मिथिलाक्षर रूप मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र, अशोकाचलक बोधगया अभिलेख, गदाधर मन्दिर अभिलेख मे उपलब्ध अछि ।

ट अक्षर अल्पप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक । कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप परम कुण्डलीरूप, पञ्चदेव एवं पञ्चप्राणमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दुयुक्त वर्णित अछि।[७६] वर्णोद्वारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लिखब एहि क्रमेँ होइत अछि :—

ऊर्द्धाधःक्रमतो रेखा कुण्डलीरूपतस्त्वधः ।
तिष्ठन्ति तासु नित्यासु कुवेरयमवायवः ॥
मात्रा कोणगता चोर्द्धा तत ऊर्द्धगता तु सा ।
या नित्या परमा शक्तिश्चतुर्व्वर्गप्रदायिनी ॥

एहि अक्षरक प्रथम रूप एहेन छल । एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप एहि सँ निस्सृत भेल । मान्दा अभिलेख मे एहि अक्षरक शिरोभाग ऊपर दिसि उठल तथा नीचाक भाग टेढ़ पाओल जाइछ जे एहि अक्षरक पूर्ण रूप थिक। कमौली अभिलेख मे एहि अक्षरक सम्पूर्ण विकास पाओल जाइछ। एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षररूप तरपनदिघि, बोधगया अभिलेख आदि मे पाओल जाइछ ।

ठ अक्षर महाप्राण अघोष मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन थिक । कामधेनुतन्त्रमे एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डली और मोक्षरूप, पीतविद्युल्लताक आकार सदृश, त्रिगुण, पञ्चदेव एवं पञ्चप्राणात्मक त्रिविन्दु एवं त्रिशक्ति सहित अछि।[७७] वर्णोद्धारतन्त्रमे एहि अक्षरक

---

७६ टकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ॥

७७ ठकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डली मोक्षरूपिणी ।
पीतविद्युल्लताकारं सदात्रिगुणसंयुतम् ।
पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।

लेखन प्रसंगमे एवंक्रमें उल्लिखित अछि :—

वार्त्ताकुवत्तु ॅलाकारो रेखाधिष्ठितदेवताः ।
तिष्ठन्ति क्रमतो नित्यं चन्द्रसूर्य्याग्नयःप्रिये ।।
मात्राहीनस्तूर्द्धशिखष्ठकारः परमेश्वरि ! ॥

ठ अक्षरक ब्राह्मी रूप O थिक। एहि अक्षर सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप निस्सृत भेल जे मान्दा अभिलेख, कमौली अभिलेख, तरपनदिघि दानपत्र, बोधगया अभिलेख आदि मे पाओल जाइछ। आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप मे केवल शिरोरेखा ऊपर उठल पाओल जाइछ।

ड अक्षर अल्पप्राण सघोष स्पर्श मूर्धन्य व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप त्रिगुणयुक्त, पञ्चदेव एवं पञ्चप्राणमय त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित चतुर्ज्ञानमय तथा आत्मादितत्व सँ युक्त, पीतविद्यु ल्लताकार वर्णित अछि।[७८] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक क्रममे एहि तरहें उल्लेख सन्निहित अछि :—

ऊर्द्धाधःक्रमतो रेखा मध्येत्वाकुञ्चिता तथा।
लक्ष्मीर्व्वाणी भवानी च क्रमशस्तत्र संस्थिता ॥
ब्रह्मरूपा तथा मात्रा महाशक्तिः प्रकीर्त्तिताः ॥

ड अक्षरक रूप अशोकक अभिलेख मे एहेन छल। आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप एकरहि विकसित रूप थिक। ड अक्षरक आधुनिक रूप कमौली दानपत्र, तरपनदिघि दानपत्र तथा गदाधर मन्दिर अभिलेखमे पाओल जाइछ।

ढ अक्षर महाप्राण सघोष मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्रमे एहि अक्षरक स्वरूप परमकुण्डली,पञ्चदेव, पञ्चप्राणमय, त्रिगुण तथा आत्मादितत्व सँ संवलित एवं महासौख्य-प्रदायक अछि।[७९] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक एवंक्रमें उल्लेख पाओल जाइछ :—

ऊर्द्धाधःक्रमतो रेखा वामदक्षिणतो गता।
ततः सा कुण्डलीरूपा विष्ण्वीशब्रह्मरूपिणी ॥

---

७८ डकारं चञ्चलापाङ्गि सदा त्रिगुणसंयुतम्।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दु सहितं सदा।
चतुर्ज्ञानमयं वर्णं वर्णमात्मादितत्व संयुतम्।
पीतविद्यु ल्लताकारं डकारं प्रणमाम्यहम् ॥

७९ ढकारं परमाराध्यं या स्वयं कुण्डलीपरा।
पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा।
सदा त्रिगुणसंयुक्तं आत्मादितत्वसंयुतम्।
रक्तविद्यु ल्लताकारं ढकारं प्रणमाम्यहम्।

महाशक्तिमयी मात्रा ध्यानमस्य प्रवक्ष्यते ।

कमौली दानपत्र मे ढ अक्षरक रूप मान्दा अभिलेख मे वर्णित अक्षरसन तथा तरपनदिघि दानपत्र मे एहि अक्षरक रूप कमौली दानपत्रक अक्षरहि सन अछि ।

ण अक्षर अल्पप्राण सघोष मूर्धन्य अनुनासिक व्यंजन थिक । कामधेनुतन्त्रमे एहि अक्षरक स्वरूप परम कुण्डली, पीतविद्युल्लताकार, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, आत्मादितत्व सँ संवलित एवं महासौख्य प्रदायक अछि ।[८०] वर्णोद्धारतन्त्रमे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहेँ उल्लिखित अछि :—

कुण्डलीत्वगता रेखा मध्यतस्तत ऊर्द्धतः ।
वामादधोगता सैव पुनरुर्द्धगताप्रिये ॥
ब्रह्मेशविष्णुरूपा सा चतुर्व्वर्गफलप्रदा ॥

ण अक्षरक ब्राह्मी रूप Y थिक । एहि सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप निस्सृत भेल अछि । एहि रूप मे दहिन भागक रेखा तँ ऊपर दिसि उठल अछि और बाम भागक रेखा स्तूपाकार मे परिवर्तित पाओल जाइछ । मान्दा अभिलेख, तरपनदिघि दानपत्र, कमौली दानपत्र, वोधगया अभिलेख आदि मे आधुनिक मिथिलाक्षरक पूर्ण विकसिति रूप पाओल जाइछ जकरा आर० डी० बनर्जी, बंगलाक्षरक पूर्ववर्ती रूप कहलनि अछि[८१] ओ वस्तुतः आधुनिक मिथिलाक्षर थिक ।

त अक्षर अल्पप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक । कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप स्वयं परम कुण्डली, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, त्रिशक्ति एवं आत्मादितत्वयुक्त, त्रिविन्दु सहित, पीतविद्युत सन कान्ति वर्णित अछि ।[८२] वर्णोद्धारतन्त्रमे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहेँ पाओल जाइछ :—

आदौ विन्दूस्ततो मध्ये कुण्डलीत्वमवाप्य सा ।
दक्षाद्धमगता नित्या ब्रह्मविष्ण्वीशरूपिणी ॥
ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने ।
चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीम् ॥

---

८० णकारं परमेशानि या स्वयं परमकुण्डली ।
पीतविद्युल्लताकारं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणमयं देवि सदा त्रिगुणसंयुतम् ।
आत्मादितत्वसंयुक्तं महासौख्यप्रदायकम् ।

८१ आर० डी० बनर्जी, दि ओरिजिन ऑफ दि बंगला स्क्रीप्ट, पृ० १०१

८२ तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा ।
त्रिशक्ति सहितं वर्णमात्मादितत्वसंयुतम् ।
त्रिविन्दु सहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।

त अक्षरक ब्रह्मी रूप Y थिक। एहि अक्षर सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप निरसृत भेल अछि। मिथिलाक्षरक आधुनिक रूप मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र, बोधगया अभिलेख आदिमे पाओल जाइछ।

थ अक्षर महाप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डली तथा मोक्षरूप, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, तरुणादित्य सन कान्तिवान कहल गेल अछि।[८३] वर्णोद्धारतन्त्रमे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक क्रम एहि रूपें पाओल जाइछ :—

कुञ्चिता कुण्डली भूत्वा वामाद्दक्षिणतस्ततः।
वामतः कुञ्चिता भूत्वा दक्षाधोदक्षतो गता॥
ऊर्द्ध ऋज्वायतारेखा सुरा गङ्गादयः कमात्।
वाणी भवानी लक्ष्मीश्च ध्यानमस्य प्रयक्षते।

एहि अक्षरक ब्रह्मी रूप ⊙ एहेन छल।

थ अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप यद्यपि मान्दा अभिलेख मे पाओल जाइछ किन्तु ऊपरक भाग ओतेक मुक्त नहि पाओल जाइछ। कमौली दानपत्र मे आधुनिक रूपक दिग्दर्शन होइछ तथा अशोकाचलक बोधगया अभिलेख मे आधुनिक रूपक पूर्ण विकास पाओल जाइछ।

द अक्षर अल्पप्राण सघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्रमे एहि अक्षरक स्वरूप चतुर्वर्गप्रदाता, पञ्चदेवमय, त्रिशक्ति सहित, ईश्वरसंयुत, त्रिविन्दु तथा आत्मादितत्वयुक्त, परम कुण्डली रूप, तथा रक्त विद्युल्लताकार वर्णित अछि।[८४]

द अक्षरक अशोकक ब्रह्मी रूप एहेन ⟩ अछि। आधुनिक मिथिलाक्षर रूप एहि सँ निस्सृत भेल जे मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र, तरपनदिघि दानपत्र, बोधगया अभिलेख तथा गयाक गदाधर मन्दिर अभिलेख मे पाओल जाइछ।

---

८३ थकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डली मोक्षरूपिणी।
त्रिशक्ति सहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं प्रिये।
तरुणादित्यसङ्काशं थकारं प्रणमाम्यहम्।

८४ दकारं शृणु चार्वाङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकम्।
पञ्चदेवमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।
सदा ईश्वरसंयुक्तं त्रिविन्दुसहितंसदा।
आत्मादितत्वसयुक्तं स्वयंपरम कुण्डली।
रक्तविद्युल्लताकारं दकारं हृदि भावय॥

ध अक्षर महाप्राण सघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डली तथा मोक्ष रूप, आत्मादितत्वसंयुक्त, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित, पीतविद्युत सदृश, चतुर्वर्गप्रदायक अछि।[८५] वर्णोद्धार-तन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक उल्लेख एवंक्रमे पाओल जाइछ :—

त्रिकोणरूपरेखायां त्रयो देवा वसन्ति च।
विश्वेश्वरी विश्वमाता वामतःस्कन्धतः स्थिता ॥

एहि अक्षरक ब्रह्मी रूप ◌ थिक। एहि अक्षरक विकसित रूप ◌ थिक जे कन्नौजक गढ़वाल राजा जयचन्द्रक ताम्रपत्र प्रशस्ति मे पाओल जाइछ। एहि सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप निस्सृत भेल जकर विकसित रूप कमौली दानपत्र, तरपनदिघि दानपत्र, बोधगया अभिलेख तथा गयाक गदाधर मन्दिर अभिलेख मे पाओल जाइछ।

न अल्पप्राण सघोष वर्त्स्य अनुनासिक व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक स्वरूप रक्तविद्युतक सदृश आकृति, पञ्चदेवमय, परमकुण्डली रूप, पञ्चप्राणात्मक, त्रिविन्दु तथा त्रिशक्तियुक्त, आत्मादितत्वयुक्त, चतुर्वर्गप्रद अछि।[८६] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक उल्लेख एहि तरहेँ कएल गेल अछि :—

वामतः कुण्डली रेखा ऊर्द्धाधःक्रमतः स्थिता।
चन्द्रसूर्य्याग्निरूपा सा मात्रा वाणी प्रकीर्त्तिता ॥

न अक्षरक आधुनिक रूप मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र तरपनदिघि दानपत्र, बोधगया अभिलेख मे पाओल जाइछ।

प अक्षर अल्पप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक रूप अव्यय मोक्षरूप, चतुर्वर्गप्रद, शरच्चन्द्रतुल्य कान्तिशाली, पञ्चदेवमय स्वयं परम कुण्डली, पञ्चप्राणमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित आत्मादितत्वयुक्त वर्णित अछि।[८७] वर्णोद्धार-

८५ धकारं परमेशानि कुण्डली मोक्षरूपिणी।
आत्मादितत्वसंयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा ॥
पञ्चप्राणमयं देवि त्रिशक्तिसहितं सदा।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं धकारं हृदिभावय।
पीतविद्युल्लताकारं चतुर्वर्गप्रदायकम्।

८६ नकारं शृणु चार्वङ्गि रक्तविद्युल्लताकृतिम्।
पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा।
त्रिशक्तिसहितं वर्णमात्मादितत्व संयुतम्।
चतुर्वर्गप्रदं वर्णं हृदि भावय पार्वति।

८७ अतः परं प्रवक्ष्यामि पकारं मोक्षमव्ययम्।
चतुर्वर्गप्रदं वर्णं शरच्चन्द्रसमप्रभम्।
पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयंपरमकुण्डली।

तन्त्रमे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहिक्रमें पाओल जाइछ :—

कुञ्चिता वामरेखायाः कोणादक्षिणतोऽपरा ।
कुञ्चिता सापि विज्ञेया मात्रा वामोङ्गता तथा ॥
शम्भुब्रह्मा भगवती क्रमशस्तासुतिष्ठति ।

प अक्षरक ब्रह्मी रूप थिक । आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप एहि अक्षर सँ बाहर भेल अछि । मान्दा, कमौली, भुवनेश्वर और देवपारा अभिलेख मे वर्णित एहि रूप सँ मिथिलाक्षरक आधुनिक रूप दिसि प्रत्यक्ष झुकाव पाओल जाइछ जाहिमे बाँम भागक झुकाव भीतरी भाग दिसि नीक जेकाँ अछि । मिथिलाक्षरक आधुनिक रूपक पूर्ण विकास जाहि मे बाँम भागक झुकाव तथा अन्य दोसर दूई गोट झुकाव लम्ब रेखाक संग मिलैत अछि, ढाकाक मूर्त्ति अभिलेख, सुन्दरवन तथा बोधगया अभिलेख मे उपलब्ध अछि ।

फ अक्षर महाप्राण आघोष स्पर्श व्यंजन थिक । कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्परूप रक्तविद्युत सदृश, चतुर्वर्गप्रद, पञ्चदेवमय, पञ्चप्राणात्मक, त्रिगुण तथा त्रिविन्दु सहित, आत्मादितत्व संयुक्त वर्णित अछि ।[८८] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहेँ पाओल जाइछ :—

वक्रा वामगता रेखा ततोऽधः सङ्गता भवेत् ।
तस्मादूर्द्धगता भूत्वा दक्षमारभ्य कुण्डली ॥
ब्रह्मा रुद्रश्च विष्णुश्च कुण्डली ब्रह्मरूपिणी ।
मात्रा वामादृक्षिणतः क्रमशः परिकीर्त्तिता ॥

फ अक्षरक ब्रह्मी रूप थिक । फ अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप एहि सँ निस्सृत भेल जकर उपलब्धि तरपनदिघि अभिलेख, अशोकाचलक बोधगया अभिलेख गयाक गदाधर मन्दिर अभिलेख आदि मे होइछ ।

ब अक्षर अल्पप्राण सघोष स्पर्श व्यंजन थिक । कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप चतुर्वर्गप्रदाता, शरच्चन्द्रोपम् पञ्चदेवमय, तथा पञ्चप्राणमय, त्रिविन्दु तथा त्रिशक्ति सहित

पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णमात्मादितत्त्वसंयुतम् ।
महामोक्षप्रदं वर्णं हृदि भावय पार्वति।
८८ फकारं शृणु चार्वङ्गि रक्तविद्युल्लतोपमम् ।
चतुर्वर्गमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं सदा त्रिगुणसंयुतम् ।
आत्मादितत्त्वसंयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा ।

निविड़ अमृत सन निर्मल, कुण्डलीरूप वर्णित अछि।[८९] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि रूपेँ वर्णित अछि :—

त्रिकोणरूपिणी रेखा विष्णवीशब्रह्मरूपिणी ।
मात्राशक्तिः पराज्ञेया ध्यानमस्य प्रयक्षते ॥

ब अक्षरक ब्रह्मी रूप ☐ थिक। एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप जे मान्दा अभिलेख मे पाओल जाइछ यद्यपि ओकर बाँम भाग मे कोणीयताक अभाव अछि तथापि ओ मिथिलाक्षरहिक दिसि अग्रसरताक द्योतक थिक। तरपनदिघि तथा बोधगया अभिलेख आदि मे सेहो एहेने रूपक बोध होइछ। एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप प्रधानतः पुस्तक लेखन में व्यवहृत होइत अछि।

भ अक्षर महाप्राण सघोष ओष्ठ्य स्पर्श व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप परम कुण्डली रूप, महामोक्षप्रद, पञ्चदेवमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित वर्णित अछि।[९०] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन क्रमक प्रसंग मे एहि तरहेँ उल्लेख अछि :—

किञ्चिदाकुञ्चिता रेखा वामदक्षिणतोगता ।
ततो वक्रा वामगता तासु वाण्यादयः क्रमात् ॥
ऋजुमात्रा मध्यगता कोणाद्दक्षगता पुनः ।
महाशक्ति स्वरूपा सा ध्यानमस्य प्रयक्षते ॥

भ अक्षरक ब्रह्मी रूप थिक। एहि अक्षर सँ एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप निस्सृत भेल अछि जकर उपलब्धि मान्दा, भुवनेश्वर तथा वेलवा अभिलेख मे पाओल जाइछ। कमौली अभिलेख मे एहि अक्षर मे यद्यपि ओतेक विकसित रूप नहि अछि तथापि ओकर आकृति मिथिलाक्षरहि दिसि ओग्रसर भेल बूझि पड़ैछ। आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप जाहि मे नीचाँव झुकाउ जे बाँम भाग दिसि बढ़ल रहैछ देवपारा, नैहाटी, सुन्दरवन आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ।

म अक्षर अल्पप्राण सघोष अर्धस्वर थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप परम कुण्डली रूप, महामोक्षप्रद, पञ्चदेवमय, तरुणादित्य सन कान्तिमान, चतुर्वर्गप्रदाता,

---

८९ बकारं शृणु चार्वङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकम् ।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं निविडाऽमृतनिर्मलम् ।
स्वयं कुण्डलिनी साक्षात् सततं प्रणमाम्यहम् ।

९० भकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परम कुण्डली ।
महामोक्षप्रदं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं प्रिये ।

त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित आत्मादितत्व सँ युक्त अछि ।[९१] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक क्रम एहि तरहेँ अछि :—

ऊर्द्धाधःक्रमतो रेखा वामे वक्रातु कुण्डली ।
पुनश्चाधोगता सैव अत् ऊर्द्धगतापुनः ।
ब्रह्मा शम्भुश्च विष्णुश्च क्रमतस्तासु तिष्ठति ।

म अक्षरक ब्रह्मी रूप थिक । एहि अक्षर सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप निस्सृत भेल अछि जकर उपलब्धि मान्दा, कमौली, तरपनदिघि, गदाधर आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ ।

य अक्षर तालव्य सघोष अर्धस्वर थिक । कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप चतुष्कोणमय, पुआरक धुँआ सन कान्तिशाली, परमकुण्डली रूप, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित मूर्त्तिमान, अव्यय मोक्षतुल्य उल्लिखित अछि। [९२]वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक उल्लेख एहि तरहेँ उपलब्ध अछि :—

ऊर्द्धाधःक्रमतो रेखा चतुष्कोणमयीशुभा ।
नारायणेशविधयस्तासु तिष्ठन्ति नित्यशः
मात्रा कुण्डलिनी ज्ञेया ध्यानमस्य प्रवक्ष्यते ॥

य अक्षरक ब्रह्मी रूप थिक । एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप मान्दा, वेलवा, कमौली, तरपनदिघि आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ ।

र अक्षर लंवित अल्पप्राण वर्त्स्य सघोष ध्वनि थिक । कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डलीद्वय युक्त, रक्तविद्युत सन कन्तिमान, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणात्मक, त्रिविन्दु तथा त्रिशक्ति सहित, आत्मादितत्वयुक्त वर्णित अछि ।[९३] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि

---

९१ मकारं शृणु चार्वङ्गि स्वयं परम कुण्डली ।
महामोक्षप्रदवर्णं पञ्चदेवमयं सदा ।
तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम् ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दु सहितं सदा ।
आत्मादितत्वसयुक्तं हृदिस्थं प्रणमाम्यहम् ।

९२ यकारं शृणु चार्वङ्गि चतुष्कोणमयं सदा ।
पलालधूमसङ्काशं स्वयं परमकुण्डली ।।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं तथा ।
प्रणमामि सदा वर्णं मूर्त्तिमान् मोक्षमव्ययम् ।

९३ रकारं चञ्चलापङ्गि कुण्डलीद्वय संयुतम् ।
रक्तविद्युल्लताकारं पञ्चदेवात्मकं सदा ।

अक्षरक लेखन प्रसंगक उल्लेख एहि रूपें कएल गेल अछि :—

दक्षतः कुण्डली रेखा वामादक्षगताप्यधः ।
पुनर्द्दक्षगता द्वेधा ततोऽधोगत्य चोर्द्धतः ॥
भवानी शङ्करो वह्निस्तासु तिष्ठन्ति नित्यशः ।
अर्द्धमात्रा ब्रह्मरूपा महाशक्तिः प्रकीर्त्तिता ॥

र अक्षरक ब्रह्मी रूप J थिक। एहि रूप सँ आधुनिक मिथिलाक्षर रूप निस्सृत भेल अछि जकर उपलब्धि मान्दा, कमौली तरपनदिघि अभिलेख मे पाओल जाइछ।

ल अक्षर पार्श्विक अल्पप्राण सघोष वर्त्स्य ध्वनि थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डली द्वययुक्त, पीतविद्युत् सदृश, सम्पूर्ण रत्नप्रदाता, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित आत्मादितत्व सँ युक्त अछि।[९४] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन क्रम एहि तरहें अछि :—

कुण्डलीत्रयसंयुक्ता वामादृक्षगतात्वधः ।
पुनरूर्द्धगता रेखा तासु नारायणः शिवः ।
ब्रह्मशक्तिश्च सन्तिष्ठे ध्यानमस्य प्रचक्षते ॥

ल अक्षरक ब्रह्मी रूप ᒍ थिक। एहि अक्षर सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप निस्सृत भेल अछि जे मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र तथा देवपारा प्रशस्ति मे पाओल जाइछ। एहि अक्षरक आधुनिक रूप जे नागरिक त अक्षर सन अछि उपर्युक्त अभिलेखक अतिरिक्त एगारहम-बारहम शताब्दीक समस्त उत्तर पूर्व भारतक अभिलेख—जेना बोधगया, गदाधार मन्दिर आदि अभिलेख मे—उपलब्ध अछि।

व अक्षर दंत्योष्ठ्य संघर्षी सघोष ध्वनि थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डली, तथा अव्यय मोक्षरूप, पुआर सन कान्तिमान, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित आत्मादितत्व सँ युक्त कहल गेल अछि।[९५] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि

पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
त्रिशक्ति सहितं देवि आत्मादितत्व संयुतम् ॥
९४ लकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीद्वय संयुतम् ।
पीतविद्युल्लताकारं सर्वरत्नप्रदायकम् ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
आत्मादितत्वसंयुक्तं हृदि भावय पार्वति ॥
९५ वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम् ।
पलालधूमसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा ।

अक्षरक लेखन प्रसंगक उल्लेख एहि तरहेँ कएल गेल अछि :—

कोणत्रययुतारेखा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकं ।
मायाशक्तिः परानित्या ध्यानमस्यप्रचक्ष्यते ॥

व अक्षरक ब्राह्मी रूप तथा थिक। एहि रूप सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप बाहर भेल जकर उपलब्धि मान्दा, कमौली, बोधगया आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ।

श अक्षर अघोष संघर्षी तालव्य ध्वनि थिक। कामधेनुतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक स्वरूप कुण्डलीतत्वयुक्त, पीतविद्युत् सन कान्तियुक्त, सर्वरत्न प्रदायक, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित आत्मादितत्व सँ युक्त वर्णित अछि।[९६] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहेँ पाओल जाइछ :—

कुञ्चिता वामतो दक्षगता च गोकृतिस्त्वधः ।
पुनरूर्द्धगता तासु वह्नित्व चन्द्रदिवाकरः
मात्रा भवानी विज्ञेया ध्यानमस्य प्रचक्षते ।

श अक्षरक ब्राह्मी रूप थिक। एहि रूप सँ आधुनिक मिथिलाक्षरक रूप बाहर भेल जे मान्दा, कमौली, तरपनदिघि, बोधगया आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ।

ष अक्षर अघोष संघर्षी मूर्धन्य व्यंजन थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप अष्टकोणमय, रक्तचन्द्र सदृश, परम कुण्डली रूप, चतुर्वर्गप्रद, सुधानिर्मितविग्रह, पंचदेव तथा पंचप्राणमय, सत्वादि—त्रिगुण एवं त्रिशक्तियुक्त, त्रिविन्दु तथा सर्वदेवमय, आत्मादितत्व सँ युक्त वर्णित अछि।[९७] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहेँ अछि :—

पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णमात्मादितत्व संयुतम् ।

९६ शकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीतत्व संयुतम् ।
पीतविद्युल्लताकारं सर्वरत्न प्रदायकम् ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
आत्मादितत्व संयुक्तं हृदि भावय पार्वति ॥

९७ षकारं शृणु चार्वङ्गि अष्टकोणमयं सदा ।
रक्तचन्द्रप्रतीकाशं स्वयं परम कुण्डली ।
चतुर्वर्गप्रदं वर्णं सुधानिर्मित विग्रहम ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
रजःसत्वतमोयुक्तं त्रिशक्ति सहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णमात्मादितत्वसंयुतम् ।
सर्वदेवमयं वर्णं हृदि भावय पार्वति ।

चतुष्कोणात्मिका रेखा वामदक्षिणतः क्रमात् ।
वह्नीन्द्रविष्णवस्तासु तिष्ठन्ति क्रमतः सदा ॥
ऊर्द्धमात्रा शक्तिरूपा महालक्ष्मीसमा स्मृता ।
मात्रा मध्यगता या तु वाग्देवी सा परा स्मृता ॥

प अक्षरक ब्रह्मी रूप थिक। एहि अक्षर सँ मिथिलाक्षरक आधुनिक रूप बाहर भेल अछि जे मान्दा, कमौली, बोधगया तरपनदिघि आदि कतिपय अभिलेख मे पाओल जाइछ।

स अक्षर वर्त्स्य संघर्षी अघोष ध्वनि थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप परस्पर शक्ति-बीज, कोटिविद्यु त् सदृश, कुण्डलीमययुक्त, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणमय, त्रिगुण, त्रिविन्दु तथा त्रिशक्तियुक्त आत्मादितत्व सँ पूर्ण वर्णित अछि।[९८] वर्णोद्धारतन्त्र मे एहि अक्षरक लेखन प्रसंगक क्रम मे एवंक्रमेँ वर्णित अछि :—

कुञ्चिता वामतो दक्षगता च गोकृतिस्त्वधः ।
पुनरूर्द्धगता तासु वह्निचन्द्रदिवाकर ।
माया भवानी विज्ञेया ध्यानमस्य प्रचक्ष्यते ।

स अक्षरक ब्रह्मी रूप थिक। एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप एहि सँ निस्सृत भेल जकर उपलब्धि देवपारा, सुन्दरवन, मान्दा, कमौली आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ।

ह अक्षर स्वरयंत्रमुखी अघोष संघर्षी ध्वनि थिक। कामधेनुतन्त्र मे एहि अक्षरक स्वरूप चतुर्वर्गप्रदाता, कुण्डलीत्रययुक्त, रक्तविद्यु त् सदृश कान्तिमान, त्रिगुण तथा वायु आदि पंचदेवयुक्त, पंचप्राण, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित वर्णित अछि।[९९] वर्णोद्धारतन्त्रक अनुसार एहि अक्षरक लेखन प्रसंग एहि तरहेँ अछि :—

ऊर्द्धादा कुञ्चिता मध्ये कुण्डली त्वंगता त्वधः ।
ऊर्द्धंगता पुनः सैव तासु ब्रह्मादयः क्रमात् ।
मात्रा च पार्व्वती ज्ञेया ध्यानमस्य प्रचक्ष्यते ।

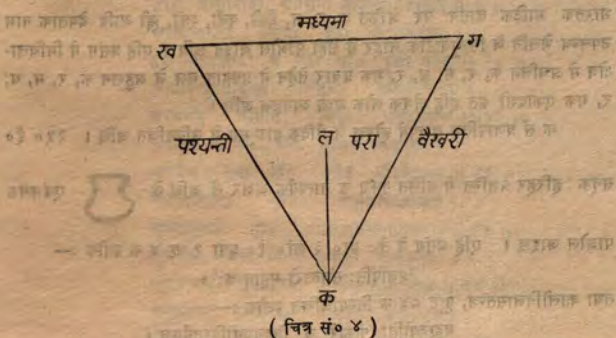
---

९८ सकारं शृणु चार्वङ्गि शक्तिवीजं परात्परम् ।
कोटिविद्यु ल्लताकारं कुण्डली त्रयसंयुतम ॥
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
रजःसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
प्रणम्य सततं देवि हृदि भावय पार्वति ॥

९९ हकारं शृणु चार्वङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकम् ।
कुण्डलीत्रयसयुक्तं रक्तविद्यु ल्लतोपमम् ॥
रजःसत्वतमोवायुपञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं हृदि भावय पार्वति ।

एहि अक्षरक ब्राह्मी रूप थिक। एहि अक्षरक आधुनिक मिथिलाक्षर रूप एहि सँ बाहर भेल अछि जकर उपलब्धि मान्दा, कमौली, बोधगया आदि अभिलेख मे पाओल जाइछ।

एहि तरहेँ आधुनिक मिथिलाक्षरक आकृतिक निर्माण भेल जकरा अपन पृथक तान्त्रिक दृष्टिकोण अछि। तन्त्रक अनुसार ल क और क ख सृष्टि, ख ग स्थिति और ग क तथा क ल संहारक थिकाह। विन्दु सँ सृष्टि होइछ और संहार मे विन्दुए मे प्रवेश होइछ। ई मध्य त्रिकोण अम्बिकारूपी थिकीह। एकर तीन रेखा १५ स्वर सँ रचित अछि। बाम रेखा मे अ सँ उ तक पाँच स्वर, ऊर्ध्व रेखा मे ओकर आगाँक पाँच स्वर तथा दक्षिण रेखा मे अन्तिम पाँच स्वर अछि। एवंक्रमेँ अ सँ अं तक १५ स्वर सँ एहि त्रिकोणक (चित्र सं० ४) निर्माण भेल अछि। एहि त्रिकोण मे अः सोलहम स्वर थिक।



(चित्र सं० ४)

त्रिकोणक तीन स्पन्दन सँ अष्टकोणक उदभव होइछ जे त्रिकोण केँ वेष्टित करैछ। दशकोण दुइ गोट अछि—एक आभ्यन्तर और दोसर वाह्य। आभ्यन्तर दशकोण, नौ त्रिकोण तथा वैन्दवक चारू कात स्फुरणशील प्रभाव सँ निर्मित अछि। एहि सँ य, र, ल, व, श, ष, स, ह ल और क्ष एहि दश वर्णनक स्फूर्ति होइछ। पृथिव्यादि पंचभूत और गन्धादि पंचतन्मात्रा वा भूतसूक्ष्म एहि दश वर्ण सँ प्रकाशित होइछ। वर्ण शक्तिरूप और अर्थ शिवरूप थिक। एहि मे प्रकाश-विमर्शमय दश कोण अछि। ई सभ मध्य मे स्थित शिव-शक्तिमय प्रभात्मक थिक। दोसर दशकोण अर्थात् वाह्य दशार आभ्यन्तर दशकोणक छाह थिक। एहि मे क सँ ञ तक दश वर्ण अछि। शब्दादि पाँच तथा बचनादि पाँच इन्द्रियार्थक स्फुरण एहि सँ होइछ। एहि दोसर दशारक परिणाम थिक चतुर्दशार। एहि मे चौदह गोट अक्षर अछि। एहि मे वैन्दव, त्रिकोण, अष्टकोण, और प्रथम दशारक चारि गोट प्रभा अछि। दूर भेला सन्ता अवयवक दर्शन नहि भए मात्र प्रभेटाक दर्शन होइछ। शेष

दस और दोसर दशारक प्रभा अछि। एहि स्थान मे अवयवक दर्शन होइछ। ई चतुर्दशार वस्तुतः संवित्तिकरणात्मक १४ शक्तिक रूप थिक—वाह्य इन्द्रिय दश और अन्तःकरण चारि (मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त)। एतए ट सँ भ तक चौदह वर्ण विद्यमान रहैछ।[१००]

सिद्ध-सिद्धान्त मे हठयोगक परिचय मे कहल गेल अछि जे "हकारः कथितः सूर्यष्ठकारश्चन्द्र उच्यते। सूर्याच्चन्द्रमसो योगात् हठयोगो निगद्यते" अर्थात् ह सूर्य केँ तथा ठ चन्द्रमा केँ कहल जाइछ जनिकर योगे हठयोग थिक।

लिपिक विकास मे एहि तरहक तान्त्रिक प्रभाव पूर्वहु मे पाओल जाइछ। डॉ० प्राणनाथ अपन ग्रन्थ 'दि स्क्रिप्टस् ऑन दि इण्डस भैली सील्स' मे सिन्धुघाटी मे प्राप्त भेल मोहर आदि मे तान्त्रिक देवताक नाम—ऐंकिं, ऐंनि, ऐं अं, ऐं सूं, ऐं क्लीं आदि पढ़लनि अछि।[१०१] एहि प्रसंग मे भगवती चामुण्डा स्तोत्र मे बृहद् वर्णन सन्निहित अछि। प्राग्वैदिक काल मे एकहि समुन्नत सभ्यता सिन्धुघाटी सँ लए विदेह तक प्रसारित छल जकर अवशेष चिराण्डक (उत्तर बिहारक सारन जिलाक) उत्खनन् मे प्राप्त भेल अछि। डॉ० प्राणनाथ केँ दक्षिण भारतक माटिक बासन पर अंकित क, र, म, ईश्री, क्ली, श्ली, ह्री आदि देवताक नाम उपलब्ध भेलनि जे सिन्धुघाटीक मोहर मे सेहो पाओल जाइत छथि। एहि प्रसंग मे मिथिला-क्षेत्र मे प्रचलित क, र, म, ध, र, मक प्रचार तेहेन ने प्रख्यात छल जे अहुखन क, र, म, ध, र, मक एकादशी व्रत एहि क्षेत्रक लोक मध्य व्यवहृत अछि।

क सँ प्रजापतिक तात्पर्य होइछ जे वैदिक वाङ्मय मे उल्लिखित अछि। ३५० ई० सन्क हरिहर प्रशस्ति मे वर्णित कुम्भ क तात्पर्यक अक्षर सँ अछि जे [कुम्भाकार अक्षर] एवंक्रमक पाओल जाइछ। एहि प्रसंग मे तै० ब्रा० ३ कां० १० प्रपा १ ऋ ४ क श्लोक :—

'प्रजापतिः संवत्सरो महान् कः'।

तथा कालीविलासतन्त्र, पृष्ट ८४ क निम्मलिखित श्लोक :—

ब्रह्मज्योतिः ककारे च विष्णुज्योतिस्तथैवच।
रुद्रज्योतिः ककारे च ईश्वरस्य तथैव च॥ १५॥
ककारे श्रीशिवज्योतिः ककारे च परं शिवः।
सर्ववर्णेषु बोद्धव्यं ककारमुपलक्षणम्॥ १६॥

तन्त्रक ग्रन्थ भगवान रामक सम्बन्ध र अक्षर सँ स्थापित करैछ। सिन्धुघाटीक उत्खनन् मे प्राप्त मोहर मे माँछक आकृति पाओल जाइछ जकर तात्पर्य म अक्षर सँ होइछ। एहि प्रसंग मे श्रीकालीविलासतन्त्र, ऊनत्रिंशत्तमः पटल, पृष्ठ ७३-७४ मे भिन्न-भिन्न प्रकारक म अक्षरक लेखन क्रमक निम्नलिखित वर्णन अछि :—

श्री देव्युवाच

पृच्छाम्येकं महाभाग योगीन्द्र योगनायक।
कामबीजादिबीजानां कथ्यतां लिखनक्रमः॥ ३॥

---

१०० महामहोपाध्याय डॉ० गोपीनाथ कविराज, तान्त्रिक वाङ्मय मे शाक्त दृष्टि, पृ० ३२२-२३
१०१ ई० हि० क्वा० भाग ८ (विशिष्ट), पृ० ३

श्री सद्योजात उवाच ।

यत्रकल्पे भवेद्रामो रावणश्चापि राक्षसः ।
तत्कल्पसम्मतं नित्यं चतुर्युगस्य सम्मतम् ॥ ४ ॥
कथयामि महेशानि लिखनं सर्व्वसम्मतम् ।
जम्बुद्वीपस्य वर्षे च कलिकाले च भारते ॥ ५ ॥
क्षीरपीठात्मकं वर्णं युगाद्यास्तनसंयुतम् ।
त्रिंशत्कोष्ठात्मकं वीजं स्मरणात् फलदायकम् ॥ ६ ॥
चन्द्रिकार्द्धगता नित्या चपला चपलेक्षणा ।
चपलान्तर्गतं पुष्पं विद्युतकोटिप्रदीपकम् ॥ ७ ॥
अनिमेन्दुमुखी सिद्धिः पुष्प मध्ये च संस्थिता ।
चन्द्रार्द्धविन्दु संयुक्तं कामबीजमितीरितम् ॥ ८ ॥
चन्द्रिकान्तर्गतो नित्यो हरः पद्मदलेक्षणः ।
हरस्य मध्यविन्दौ चाणिमा शशिमुखी विशेत् ॥ ९ ॥
चपलान्तर्गतो नित्यः हरः पद्मदलेक्षणः ।
हरस्यमध्यविन्दौ च सदा शशि मुखी वसेत् ॥ १० ॥
चन्द्रबिन्दुसमायुक्तं मन्मथं परिकीर्त्तितम् ।
हरवर्णेषु चासीनः शिवः पद्मदलेक्षण ॥ ११ ॥
पूर्वोक्तं कथितं देवि लिखनं मकरस्य च ।
मकरंच यथा देवि तथैव मीनकेतनम् ॥ १२ ॥
चपलान्तर्गता बुद्धिः प्रफुल्लकमलेक्षणे ।
चपलानुगतं पुष्पं विद्युत्कोटिसमप्रभम् ॥ १३ ॥
पुष्पमध्ये स्थिता नित्या रेचिका लिखनक्रमः ।
अतः परं प्रवक्ष्यामि श्रीबीजलिखनंश्रृणु ॥ १४ ॥
मङ्गलाया मध्यविन्दौ ईश्वरी कमलेक्षण ।
ईश्वरी पद्मगर्भा च पुष्पमध्ये च रेचिका ॥ १५ ॥
चन्द्रविन्दुमयी नित्या श्रिया लिखनमीरितम् ।
अतः परं प्रवश्यामि चाङ्कुशं वरवर्णिनि ॥ १६ ॥
चन्द्रिकान्तर्गता नित्या सुस्थिरा कमलेक्षणा ।
सुस्थिरान्तर्गता नित्या संजिनी ब्रह्मपूजिता ॥ १७ ॥
चन्द्रबिन्द्वात्मिका नित्या लिखनंत्वङ्कुशस्य च ।
हरस्य मध्यविन्दौ सा विशालाक्षी सुशोभना ॥ १८ ॥
हरिणाक्षीषु चासीना युवा च ह्यणिमा गुणा ।
चन्द्रविद्वात्मिका विद्या दिदं लिखनमीरितम् ॥ १९ ॥
एवं सर्व्वत बोद्धव्य बीजाना लिखनक्रमः ।
विना लिखनविज्ञानवीजानां नगनन्दिनि ॥ २० ॥

विफलं जायते सर्व्वं जपयज्ञार्च्चनादिकम् ।
सर्व्वं तस्य भवेद् व्यर्थं किं पुरश्चरणादिभिः ॥ २१ ॥
इति श्रीकालीविलासतन्त्रेऊनत्रिंशत्तमः

उपर्युक्त विवेचना सँ निस्सृत होइछ जे सिन्धु सभ्यतामे आर्य सभ्यताक पूर्ण रूप पाओल जाइछ तथा ओहि युगक लिपि, धर्म, दर्शन एवं भाषाक संग आर्य लोकनि जतए कतहु गेला ओतए ओ ओकर प्रचार कएलनि। फलतः वैदेही लिपि जकर सम्बन्ध सिन्धु सभ्यताक चित्र लिपि सँ छल अपन क्रमिक विकासक संग परिवर्त्तित एवं परिमार्जित होइत अधुनिक मिथिलाक्षरक रूप मे निर्मित भेल।

४

उपसंहार

ज्ञानक कोनो दिशा मे प्रवेश केनिहार केँ ई बोध होयब नितान्त स्वाभाविक थिक जे ज्ञातक अपेक्षा अज्ञात वा अल्पज्ञातक सत्ता बेसी अछि। पूर्ण ज्ञान बिना पूर्ण आत्मिक एकीकरणक सम्भव नहि होइछ जे दर्शन और अध्यात्मक दिशा थिक। एहि दिशा मे इतिहासक अतिसीमित कालात्मक धारणा प्रायः निरर्थक भए जाइछ। इतिहास कतिपय स्रोत सँ एक एहेन ज्ञान थिक जे वर्त्तमान समय मे उपलब्ध प्रमाण एवं तथ्यक आधार पर वर्त्तमान युगहिक व्यक्ति द्वारा प्रत्यभिज्ञानमूलक कल्पनाक माध्यम सँ अतीतक ऐतिहासिक तथ्य केँ प्रत्यक्ष कएल जाइछ। अतीतक कल्पनाक आधार कोनो-ने-कोनो रूप मे वर्त्तमाने मे निहित रहैछ। मिथिलाक्षरक वैभवक सूक्ष्म अनुशीलन एवं इतिहासक सम्यक् अवलोकन सँ ओहि मे परम्परा-नुसरणक प्रवृत्तिक संग मौलिक सृजनशीलता सेहो स्पष्ट परिलक्षित तँ होइछ किन्तु विद्वानक द्वारा उद्भावनाक श्रेय नहि दए प्रतिभा-पारतन्त्र्यक लांछन एवं ओकरा पर अवगुंठन देल गेल। फलतः राजनैतिक प्रभाव एवं कट्टर प्रान्तीय भावनाक प्रतिफल सँ वास्तविकता केँ उपेक्षा कए समग्र पूर्वीय संसार केँ सुसंस्कृत तथा सभ्य बनौनिहार विदेह भूमिक प्रति एहेन उपेक्षनीय मनोवृत्ति अपनाओल गेल जे ओतएक विचारधारा वा तँ मिथ्याभिमानक शरण लेलक वा निष्क्रिय क्षोभकेँ अनुभव कए रहए लागल।

मिथिलाक संस्कृतिक समग्र रूप वैदिक, उपनिषदिक एवं पौराणिक ज्ञानेटा सँ समक्ष नहि अवैछ। ओकरा निमित्त प्रागैतिहासिक युग सं वर्त्तमान काल तकक पूर्ण परम्परा, भाषा और संस्कृतिक अन्वेषण एवं अनुशीलनक परम आवश्यकता अछि।

अधिक पुरान सामग्रीक अभाव वा ओकर महत्वहीनताक बात मिथिलाक प्रसंग मे कहनिहारक ध्यान छपरा जिलाक चिराण्डक उत्खनन् मे प्राप्त पुरातत्वक सामग्रीक दिसि आकृष्ट कएल जाइछ। सन् १९७० ई०क उत्खनन् मे डा० भगवती शरण वर्मा केँ मात्र दुई गोट खाइध मे बरहसिंहाक सींघ सँ बनल हथौड़ी, सूआ, छेनी, रुखान, पाथरक लाकेट, चुड़ी आदि विविध प्रकारक दैनिक जीवन सँ सम्बद्ध नव-प्रस्तरयुगीन पदार्थ, माटिक बासन परहक चित्रकारी एवं आन-आन कतिपय वस्तु जकर काल २००० ई० पूर्व सँ कम नहि भए सकैछ उत्तर बिहारक इतिहास मे एक क्रान्ति उत्पन्न कए देलक अछि। जाहि तरहक पुरातत्वक सामग्री डा० वर्मा केँ ओतए एकस्थ उपलब्ध भेलनि अछि ओहि तरहक और ओतेक सामग्री प्रायः संसारक कोनो भाग मे एकस्थ नहि प्राप्त भेल अछि। आश्चर्यक वस्तु थिक जे प्रागैतिहासिक मानव जतए कोनहु पशुक शिकार करैत छलाह, ओतए एहिभागमे बरहसिंहाक सींघक अतिरिक्त और कोनहु आन पशुक हाड़क

पदार्थ नहि उपलब्ध भेल अछि। एहि प्रसंग मे याज्ञवल्क्य स्मृतिक आचाराध्याय, श्लोक २क निम्नलिखित वाक्य :—

मिथिलास्थः स योगीन्द्रः क्षणं ध्यात्वाऽब्रवीन्मुनीन्।
यस्मिन्देशे मृगः कृष्णस्तस्मिन धर्मान्निबोधत॥

सँ पुष्टि होइछ जे सम्पूर्ण मिथिलाक भूभाग मे शतपथब्राह्मणक युग तक कृष्ण-मृगक भरमार छल जकर प्रतिफल एहि उत्खननक उपर्युक्त पुरातत्वक सामग्री थिक। सम्भवतः छपराक अन्य नाम जे सारन थिक ओ संस्कृतक सारङ्ग शब्द सँ निस्सृत भेल अछि जकर अर्थ अमरकोश मे मृग कएल गेल अछि। मृगक प्रधानता मिथिला मे तेना ने छल जे मृगचर्मक अतिरिक्त अहुखन बरहसिंहाक सींघक बड़ महत्त्व अछि। जँ कोनो नेना पचाओल जाइछ वा जँ ककरहु गोटी भए जाइत छैक तँ बरहसिंहाक सींघ कें घसि कें ओकर पाच पर लगाओल जाइछ तथा रोगी कें पियाओल जाइछ। एहि सँ निस्सृत होइछ जे सिन्धुघाटीक सभ्यता सँ पैघ वा ओहि सँ साम्य सभ्यता मिथिला मे आर्यक आगमन सँ पूर्वहि सँ व्याप्त छल जकरा अपन पृथक संस्कृति और सभ्यता छलैक। सम्भवतः ओहि क्षेत्रक ओहि सभ्यता सँ आकृष्ट भए आर्यक एक जत्था सरस्वतीक तट सँ माधव विदेघक नेतृत्व मे मगधक दिसि नहि जाए सोझे ओहि दिसि गेल तथा सदानीराक तट पर विदेह राज्य वंशक स्थापना कएल। प्रायः सिन्धुघाटीक सभ्यता एवं विदेहक एहि क्षेत्रक सभ्यताक मध्य आदान-प्रदानक निमित्त एक प्रशस्त मार्ग सेहो छल जकरा द्वारा आर्यलोकनि सोझे ओतए सँ एहि क्षेत्र मे आबि कए निवास कएलनि।

संस्कृत वाङ्मय सँ ज्ञात होइछ जे विदेह-राज जनकक ओतए कुरु-पंचाल सँ विद्वान् लोकनि अबैत छलाह तथा सतत् ज्ञानक प्रसंगमे वाद-विवाद होइत रहैत छल। बृहदारण्यक उपनिषद् तथा शतपथ ब्राह्मणक रचनाक श्रेय सेहो विदेह भूमिए कें तँ देल जाइछ किन्तु जखन लिपिक इतिहासक प्रश्न उठैछ तँ, आश्चर्यक विषय थिक, कहल जाइछ जे ओकरा अपन स्वतंत्र लिपि और भाषाक अभाव छल जखन कि पाटलिपुत्रक मौर्यवंशी राजा अशोकक, जनिकर सम्बन्ध स्वतः विदेहक पिप्पलीकानन सँ छल, लेख तथा ई० स० पूर्वक चारिम शताब्दी सँ लए ई० स० तेसर शताब्दी धरिक कतिपय मोहर एवं अभिलेख सँ प्रतीत होइछ जे ओहि समय एहि देश मे दुई गोट लिपि प्रचलित छल। एहि मे सँ एक तँ बाम भाग सँ दहिन दिसि लिखएवाली सार्वदेशिक और दोसर दहिन भाग सँ बाम दिसि लिखएवाली एक देशिक जे ब्रह्मी और खरोष्ठी नामे पश्चात् प्रख्यात् भेल।

ब्रह्मी लिपि प्राचीन लिपिक कल्पित नाम थिक जकरा बौद्ध लोकनि ब्राह्मणक द्वारा प्रयुक्त भेलासन्ता एहि नामे संबोधन कएल। ब्रह्मी लिपिक केन्द्र स्थल पाटलिपुत्र छल। अतएव एहि लिपिक उद्भव एवं विकास कोनो आन लिपि सँ नहि भए अवश्ये विदेहक लिपि सँ भेल जकरा संग पाटलिपुत्र वा मगध कें सतत् घनिष्ठ सम्बन्ध छल। स्वतः भगवान बुद्ध और महावीर जनिकर ग्रन्थ मे एहि लिपिक उल्लेख पाओल जाइछ, विदेहक क्षेत्र मे उत्पन्न भेल छलाह। तखन ओ ओहि क्षेत्रक लिपि एवं भाषा सँ पूर्ण अवगत भेला सन्ता अवश्ये ओकरा प्रधानता देने होयथिन।

मिथिलाक जनकक तथा वैशालीक लिच्छवीक पतनक उपरान्त विदेहक स्वतन्त्र सत्ताक अस्तित्व नहि रहि ओ मगध साम्राज्यक एक अंग बनल। फलतः विदेहक सांस्कृतिक इतिहास तँ अछि किन्तु राजनैतिक इतिहासक पृथक अस्तित्व नहि अछि। वस्तुतः विदेहक संस्कृति, साहित्य, भाषा और लिपिक क्रमिक इतिहासक उपेक्षा एहि कारणस्वरूप भेल।

एहि प्रसंग मे श्रीयुत् डा० सुनीति कुमार चटर्जीक पत्र जे ओ हमरा पठौने छथि एवंक्रमक अछि :—

Residence :	āvīr āvir ma édhi	Office :
"SUDHARMĀ"	mānavikīṣu *bbāratasya	National Library Campus
16 Hindusthan Park	jātīya ācāryaḥ	Belvedere
Calcutta-29	**Suniti Kumar Chatterji**	Calcutta-27
Phone : 46-1121	National Professor of India	Phone : 45-5319
	In Humanities	

April 7, 1970

Sri Rajeswar Jha,
Secretary, Maithilī Sāhitya Sansthān, Patna.
C/o Bihar Research Society,
Patna-1

Dear Sir,

Thank you very much for the Mithilā-Bhāratī, Vol. I, Parts 3 and 4, which I received this morning. Glancing through the contents, I am happy to find that this paper has come out as a first-rate research journal for matters related to Mithilā and its language, history and culture. Some of the articles certainly are of very great value for the study of the culture and history of Eastern India, and not of Mithilā alone. Only I would have preferred that your article entitled—"Mithilāksharak Udbhav O Bikās" to be given the title "Bharatīyāksharak," because you have tried to give the history of the *Indian* system of writing, which of course embraces Maithil. You have taken pains in your article, but the point of view presented is antiquated and does not hold any more.

Wishing your journal as well as your Maithilī Sāhitya Sansthān all success.

I remain,
Yours sincerely.
Sd/Suniti Kumar Chatterji

एहि प्रसंग मे निम्नलिखित प्रश्नक समाधान आवश्यक अछि :—

मगधक इतिहास केवल समग्र भारतहिटाक इतिहास नहि भए बहुत दिन धरि पूर्वी एवं मध्य एशियाक इतिहास सेहो छल जतएक संस्कृति, साहित्य, भाषा एवं लिपि पर मगधक पूर्ण प्रभाव तँ पाओल जाइछ किन्तु स्वतः मगधक संस्कृति जे नाग, असुर, व्रात्य एवं कीकटक संस्कृति छल की आर्य संस्कृति सँ प्रभावित नहि भेल और जँ भेल तँ की प्राचीन विदेहक संस्कृतिक ओकरा पर प्रभाव नहि पाओल जाइछ ?

जँ आर्य संस्कृतिक प्रचार एवं प्रसार सर्वप्रथम विदेह मे भेल तँ ओ अवश्ये पश्चात् मगध केँ प्रभावित कएलक तथा मगध अपन प्राचीन संस्कृतिक संग आर्य संस्कृति केँ सेहो ग्रहण कएलक जकर अनेक प्रमाण उपलब्ध अछि। एहि परिस्थिति मे जँ मगधक कोनहु ऐतिहासिक तथ्यक क्रमिक इतिहास लिखल जाए तँ की ओहि मे ओकर उत्पत्तिक आधार एवं प्रगतिक मूल केँ कतहु स्थान नहि अछि ?

सुनीति बाबूक विचारेँ 'मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकासक' स्थान मे एकर उपयुक्त शीर्षक 'भारतीयाक्षरक उद्भव ओ विकास' होएबाक चाही किएक तँ एकर इतिहास भारतीय लिपिशास्त्रक आधार पर लिखल गेल अछि। प्रायः सुनीतिबाबू अंक १, भाग१-२ केँ बिनु देखनहि अपन विचार प्रेषित कएलनि। जँ ओ देखबाक कष्ट कएलाक उपरान्त लिखलनि तँ प्रश्न अछि जे की विदेह मे जतए उपनिषदक गूढ़तत्वक प्रतिपादन भेल ततए की ओकरा अपन लिपि नहि छल ? जँ छल तँ ओ कोन छल और आई ओकर कोन रूप अछि ? आई जे मिथिलाक्षरक रूप अछि से की वस्तुतः बारहम-तेरहम शताब्दीक थिक वा ओकर कोनो पूर्ववर्ती रूप सेहो अछि ? जँ अछि तँ की ओकरा ब्रह्मी कहल जाए सकैछ ? जँ ओ ब्रह्मी थिक तँ की ई सम्भव थिक जे अशोकक अभिलेखक मे जे ब्रह्मीक समुन्नत रूप अछि ओकर निर्माण सर्वप्रथम ओहि युग मे भेल ?

जहाँ धरि एहि मे प्रयुक्त पुरान तथ्यक प्रसंगक प्रश्न अछि प्रायः सुनीतिबाबू नीक जकाँ एहि लेख केँ नहि पढ़लनि अछि; अन्यथा ओ एहि मे वर्णित तिब्बती लिपि, ऐतिहासिक तथ्य, लोककला एवं आन-आन मिथिला सँ सम्बद्ध तथ्य केँ जे सर्वप्रथम नव प्रणाली सँ एहि मे प्रयुक्त भेल अछि अवश्य ओ उल्लेख करितथि। शब्दकल्पद्रुम मे बंगीय अक्षरक लेखन क्रमक प्रसंग मे जे उल्लेख कएल गेल अछि ओहि क्रम सँ बंगला अक्षर कथमपि नहि लिखल जाए सकैछ। ओ क्रम मिथिलाक्षरे लिखबाक थिक। एकर अतिरिक्त लिपिक उद्भव मे एहि तरहेँ ऐतिहासिक एवं तान्त्रिक तथ्य केँ एकस्थ समावेश करबाक प्रणाली तँ सर्वथा नवीन थिक।

मिथिलाक्षरक नाम 'तीरहुता' थिक। प्रायः ई नाम 'तीरभूक्ति' सँ सम्बद्ध अछि। की एहि नाम सँ वैदेही वा विदेह लिपिक संग कोनहुटा सम्पर्क नहि स्थापित कएल जाए सकैछ ?

बंगलाक जे आधुनिक रूप अछि की ओकरा पर तीरहुता वा आधुनिक मिथिलाक्षरक प्रभाव नहि अछि ? की बंगाल सँ जिज्ञासु ज्ञानार्जनक निमित्त मिथिला अबैत छलाह तथा

ओतएक ज्ञान कें तँ ओलोकनि प्राप्त करैत छलाह किन्तु की ओ लोकनि ओतएक लिपि सँ अनभिज्ञ रहैत छलाह ?

सन् १९१२ ई० धरि बिहार और बंगाल संयुक्त छल। अतएव ओहि समय मे बिहारक कोनो स्वतन्त्र ऐतिहासिक अस्तित्व नहि छलैक तथा एहि भूभागक नामकरण बंगालहिक नाम सँ होइत छल। प्रायः देखल जाइछ जे गया, भागलपुर, मुंगेर आदि स्थान मे जतए कोनो अभिलेख प्राप्त भेल अछि ओकरा बंगला वा बंगलाक पूर्ववर्त्ती रूप कहल गेल अछि। की वस्तुतः ओहि सभहक लिपि बंगले थिक ?

जखन विदेह मे निवासित भेलाक उपरान्त आर्य लोकनि बंगाल मे बसलाह तँ की बंगालक इतिहास, भाषा, साहित्य और लिपि पर विदेहक कोनो टा प्रभाव नहि पड़ल तथा की आधुनिक मिथिलाक्षरक उद्भव एवं विकासक क्रमिक इतिहास और ओकर पूर्ववर्त्तीरूपक कोनहुटा आधार नहि अछि ? वस्तुतः ओकर सम्बन्ध समस्त भारतीय अक्षरक उद्भव ओ विकासक आधार सँ अछि। ई निर्विवाद थिक जे पूर्वी एवं मध्य एशियाक समस्त लिपिक उद्भव ओ विकास वैदेही लिपिए सँ भेल जकर परिवर्त्तित रूप आधुनिक मिथिलाक्षार थिक जे तीरहुताक नाम सँ प्रख्यात अछि।

अतएव मिथिलाक्षर कें अप्रतिभ वैभव सँ सम्पन्न किन्तु वर्त्तमान युगक कतिपय अवांछित प्रभाव सँ आक्रान्त गौरवमयी पुनर्प्रतिष्ठाक निमित्त ई अनिवार्य थिक जे ओकर परम्परा एवं वास्तविक रूपक अनुसन्धान कएल जाए तथा ओहि मे निहित सत्यक मर्म तक पहुँचवाक प्रयास कएल जाए। परमुखोपेक्षिता एवं अवांछित प्रभावक ग्रहण सर्वथा अनुचित थिक। एहि सँ मुक्ति पाएब नितान्त आवश्यक अछि।

●

अनुक्रमणिका

अ

अंग, ६५
अंगद, २७
अंशुवर्मा, ५७
अकुलतंत्र, ६०
अजमिश्र, २७
अणु, १७
अथर्ववेद, ५
अनर्घराघव, २१
अपराजित, ५७
अबुल फजल, ३१
अभिसुरवल, २५
अमरकोश, ३९, ४७, ६९
अलवेरूनी, ६७, ७०
अलु, २
अशोक, २, ५५
अहोमलिपि, १९, २२

आ

आइने अकबरी, ३१
आण, १७
आदित्य सेन, ५७, ५९, ६३
आदिधर्मपा, २८
अ दिसुर, ५८
आपस्तम्ब, ४०

इ

इत्सिङ्ग, ६८
इन्द्रद्युम्न, ६३

उ

उचेनलिपि, ४, ११
उमेनलिपि, ११, १२

ए

एकव्रात्य, १७

क

कञ्चनपुर, ६०
कणकग्राम भूक्ति, २२
कर्णसुवर्ण, २६
कथ, १२
कथक, १२
कथोपनिषद्, १२
कदपे—वा खुम्सयीग कंण रींण, ८
कनदाहा, ६५
कल्लर, ५
कलियव्वा, २७
कलु-ई-यीगे, १२
कश्यप, ७०
कार्त्तिकेय, २७
कामधेनु तंत्र, ७६, ८३
कावी अभिलेख, १९
किओसा, १९, २८
कीकट, ५
कुट्टनीमत, २४
कुटिल लिपि, १९
कुलार्णवतंत्र, ६१
कुलानन्दतंत्र, ६०
कुसुमपुर, ४
कोडनतमिल, १६
कौलज्ञान निर्णय, ६०, ६१

ख

खटिक, १२
खरोष्ठी, २
खामेनलिपि, १९
ख्युग-यीग, ८

ग

गंगा, ६७
गणपतितत्व, ७६
गैड, २
गोप, २१
गोपाल, ५८, ६३
गोपीचन्द्र, ६४
गोरखनाथ, ६७
गोविन्द चक्रवर्त्ती, २९
गौड़, २१
गौड़ीरीति, २१
ग्रन्थम, १६

च

चन्द्र, २१
चन्द्रगुप्त मौर्य, ५४
चन्द्रपुर, २५
चम्पा, २१
चित्ररथ, ३५
चित्रलिपि, ४, १३, ३३

छ

छान्दोग्य उपनिषद्, ४३

ज

जनक, ७
जमादित्य, ६८
जयनाग, २१
जयपालदेव, २६, २७
जयवर्मदेव, २५
जरासंध, ५
जाइंकदेव, ८२
जाटवर्म, ६५
जीवितगुप्त, ५७, ६३
जोउन, ६८

त

तंत्रसार, ७४
तरकरी, २७
तपोनिधि, २७
तसंकी, २
तक्षादित्य, २१
ताम्रलिप्ति, २६
तारनाथ, ६४
तिब्बतीलिपि, ४, २२
तिरहुत, ३१
तिरहुता, १, ३१, ६७
तिरभुक्ति, २१, २५, ३७
तैत्तिरीयसंहिता, ४०

थ

थोमीसंभोट, ४

द

दण्डभुक्ति, २२
दपे-यीग-कंण-थुन ८
द्रविड़लिपि, १
दामोदरगुप्त, २४
दुत्सा, ९
देवगुप्त, ५८
देवनागरीलिपि, ४
देवर, ५
देवलिपि, ४

ध

धर्मधर, २८
धरमादित्य, २७
धरासुर, ५८
धुर्त्तविट सम्वाद, ४
ध्रुवानन्द मिश्र, ५८

न

नकरर, ५
नदिया, २९
नरसिंहदेव, ६५
नरेन्द्रदेव, ६७
नागर, ५
नागलिपि, १, ५
नागोया, ६८
नारदस्मृति १
नितुला, २७
नीतिवाक्यामृत, ७०
न्यायकणिका, ६१

प

पशुपति, २७
पक्षधर मिश्र, ६६
प्रहास, २७
पाणिनि, ४०, ६८
पातिमोक्ख, १९
पुर्णचन्द्र, ६४
पूर्वविदेहलिपि, १, १२, २२
पृथ, ३५
पेमा तशुगछुन्न, ८
पौण्ड्रवर्द्धन, २५, २६, २७, ६४
पद्मप्राभृतक, २४
पोन धर्म, ९
प्रागज्योतिषभुक्ति, २२, २७

फ

फाङ, २
फवाङशुलिन, २

ब

बंगलालिपि, २२
बार्टन, १
ब्राभव्य ४४
बुद्धघोष, ३७
बोङ्गफुशिनयों, ६८
बौधायन, ४०

भ

भानुदीक्षित, ३९
भाष्कराचार्य, ३९
भासुरानन्द, ७४
भावविवेक, ६१
भोजवर्मन, ६४

म

मक्कल, ५
मगध, ५
मगधलिपि, १, ९
मत्स्येन्द्रनाथ, ६०, ६७
मनोरथ, २७
महिसुर, ५८
मातृकानाम माला, ४३, ७६
मातृकानिघण्टु, ४
माधवगुप्त, ५८
माधवविदेघ, १
मालिनीविजयतंत्र, ७६
माहेश्वरलिपि, १७, ६८, ६९
मिथिला, १२, १७, २९
मिथिलाक्षर, १
मीनो' ६८
मुरारीमिश्र, २७
मेरुतंत्र, ६२
मैत्रेगी, १

य

यजुर्वेद, ५
यमुना, ६१
यशोधर्मा, ५७

याज्ञवल्क्य, १, ४९
यूजान, ६८
योगिनी तंत्र, ६१
योगीवंशकार, ६१

र

रंजा, ४
रघुनाथ, २९, ३०
रहुगण, १

ल

लञ्जा (लन्तसा), ४, ९, १०
ललित विस्तर, ५, १२
लक्ष्मण सेन, ६५
लक्ष्मीधर, ४३
लिङ्गपुराण, ७६

व

वट्टएलुत्तु, १६
वर्णविधान, ४
वर्णोद्धारतंत्र, २३, २४, २६, २९, ८१
वर्त्तुल, ४, १२, ३३
वनगुलिक, ६८
वरेन्द्र, २७
वाचस्पति मिश्र, ५९, ६३
वामकेश्वरतंत्र, ७३-८६
वालग्राम, २७
वासुदेव सार्वभौम, २९
विक्रम २५
विक्रमपुर, ५९, ६४
विक्रमशिला, ७०
विग्रहपाल, ६०
विजयतंत्र, ७४
विदेह, १२
विद्यादेव, ८२
विद्यापति, २५
विष्णु, २७
विष्णुगुप्त, ५८
विष्णुपुराण, ६५
विष्णुहरि, २१
वृहदारण्यक उपनिषद्. १
वैद्यदेव, ६५
वैशाली, १२
वोङ्काकुशिनयों, ६८
वोरोमतग्रन्थ, १९

श

शक्ति, २७
शतपथ ब्राह्मण, १
शतमिल, १६
शशांक, २१, २६
शाकटायन, ४०
श्यामलमूल, ६४
शिवमहापुण्ण, ७६
शिङ्कोन, ६८
शुल्वसूत्र, ४०
श्वेतास्वतर उपनिषद्, ७१
श्रावस्ती, २७
श्रीचन्द्रदेव, ६, ४४
श्रीधरदास, ६५
श्रीधराचार्य, २९
श्रीनगर भुक्ति, ४, २१
श्रीप्रपञ्चसार तंत्र, ७४
श्रीहट्ट, २५
श्रौतसूत्र

स

सदानीरा, १, १८
सनतकुमारसंहिता, ७६, ८०
समवायांगसूत्र, २
समाचारदेव, २१
सरस्वती, १, १८, ३१

सामलवर्म, ६४
साहिल, २७
सिडनेस्मिथ, ३
सिद्धयोगीश्वरी, ७२
सिद्धिमातृकालिपि, ३१, ६४, ७०
सिद्धिरस्तु, ६८
सिन्धुघाटी, १, ५२
सिन्धुलिपि, २
सियामभव, २७
सि० ते० चङ्ग, २४
सीतादेवी, २९
सुचरित, २७
सुभाषितरत्नभण्डागार, २४
सत्यव्रत, १७
सप्तसिन्धु, १८
स्वच्छन्दतंत्र, ७१
सौभरि, ४३
सौभाग्यभास्कर, ७६

ह

हरिसेन, ५६
हितोपदेश, ६९
हुएन्तसांग, ४५

क्ष

क्षितिसुर, ५८



लेखकक अन्य कृति

१. महाकवि विद्यापति नाटक (मैथिली), मूल्य २) टाका मात्र।
२. शास्त्रार्थ नाटक (मैथिली), मूल्य १) टाका ५० पैसा मात्र।
३. कन्दर्पीघाट नाटक (मैथिली), मूल्य १) टाका मात्र।
४. एकादशी (मैथिली), मूल्य एक टाका पचास पैसा मात्र।
५. विद्याधर-कथा (मैथिली), मूल्य २) टाका मात्र।
६. उर्वशी (मैथिली), मूल्य ३) टाका मात्र।
७. धर्मव्याध-कथा (मैथिली), मूल्य १) टाका मात्र।
८. कालचक्र की उत्पत्ति एवं उत्पन्न क्रमों की संक्षिप्त व्याख्या (हिन्दी), मूल्य ६) रुपये।
९. मैथिली साहित्यक आदिकाल (मैथिली), मूल्य ७) टाका ५० पैसा मात्र।
१०. महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह (हिन्दी), मूल्य निःशुल्क।
११. मेनका (मैथिली), मूल्य २) टाका मात्र।
१२. विद्यापतिक संगीत मे वर्णित नायक-नायिका-भेद एवं राग-रागिनी-वर्गीकरण (मैथिली), मूल्य २) रु० (मैथिली साहित्य संस्थान द्वारा प्रकाशित)।
१३. शाक्यश्रीभद्र की जीवनी (हिन्दी), मूल्य २·५० पै० मात्र।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

ग्रंथालय
टावर चौक, दरभंगा

एवं

शिक्षा सदन
सुपौल, सहरसा

श्री अमरनाथ झा

द्वारा—बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना-१